रानीजू सब ब्रजन्योत बुलायो ।
आवत जात रहे नरनारी कैसो लगत सुहायो ।
बाजे संग सकल गोपिन के ग्वाल लिये कर थारी ।
अति आनन्द सबै मिल गावत किये रुचिर शृंगारी ।
तिलक करत लालनु बलिजू के मांडत सिंध दुवार ।
भीतर जाय देहरी मांडत जहाँ भये नन्द कुमार ।
जसुमति बैठी रहसि हँसि बोली भले-भले तुम धाई ।
श्री विट्ठल गिरधरन लाल की वरस गांठ अब होत बधाई ।

पीताम्बर लाल दर्याई को धरें ताको आशय—

यह जन्म के समय पंचामृत पूर्व विछाय के धराय पंचामृत करें । पंचामृत भये बाद जा सरूप को पंचामृत होय ताको उठाय माला धराय तिलक करे । आज श्रीनाथजी कोंहू धरावे । बारह मास की जयन्तिन में आज ही पीताम्बर रात्रि में धरें सो (पोतरा) कह्यो जाय । वह पीताम्बर दर्याई नयो रेसम को सिद्ध होय है । और बाय धराये फेर बड़ो होयवे पर समस्त सेवक वैष्णवन में बटे । या वस्त्र की लीरी कंठी में यन्त्रन में बांधवे धरवे सो अनेक व्याधी दूर होय । तासों ये धरावे । वसुदेवजी के यहाँ दर्शन भये तब वर्णन मिले है । **"पीताम्बरं सान्द्र पयोद सौभगं"** सो धरावे बाद महाभोग आवे । धूप दीप होय ।

महाभोग कहा ? याको नाम महाभोग कायकों राख्यो ?

यामें विविध सामग्री के साथ विशेष में पंजीरी भोग में आवे । सारी वस्तु सखडी अनसखडी दूध घर के नेग तथा अन्य जो विधि है ता प्रकार अरोगे धूप दीप होय । भोग तुलसी शंखोदक होय फेर पट बन्द होय प्रायः एक डेढ़ बजे तक भोग सजके धूप दीप होय फेर चार बजे माला बोले भोग सरे ।

प्रश्न—महाभोग को समय तीन घंटा को क्यों लेय ताको कहा आशय ?

आचार्य महाप्रभू जन्माष्टमी को जन्म कराय मातुश्री के साथ गिरिराज की परिक्रमा देवे गये, तासों तीन साढ़े तीन घंटा भोग आवे ।

प्रमाण—श्री गोवर्धनधरन को जन्मोत्सव हि कराय ।
गिरि परिक्रमा मातु को श्री वल्लभ करवाय ॥

श्रीनाथजी

श्रीनाथ-सेवा-रसोदधि

चतुर्थ तरंग

भाद्रपद कृष्णा नवमी से आश्विन कृष्णा अमावस्या तक

उत्सव-भावना

महाभोग की माला बोले बाद भोग सरे। फेर माला धरे। वीड़ी अरोगे। आरती होय। ताके बाद सम्पुट सों श्रीनवनीतप्रिय जी पधारे। पूर्व भोग सरे बाद आरती भये बाद, कोरी हलदी की चौक पूरे। ता पर पलना बिछावे। घुडल्या सहित। फेर नवनीत आयके बिराजे। जब नवनीत पधारें, तब कीर्तन समाज के साथ पधारें और यह पद गावते आवें। नवनीत के पधारत ही, बड़ी अपरस हे जाय— "अहो ब्रज भयो है महर के पूत तब यह बात सुनी" आयके नवनीत पलना में बिराजे। श्रीजी में राजभोग को साज जमें नवनीत के पलना के पास चौकी आवै। तामें गोपाल वल्लभ वीड़ा वीड़ी झारी आदि रहे। सन्मुख खिलौना रहे। वन्दनमाल केवड़ा की तथा फूलन की पलना में धरें। फेर जसोदा जी को पधरायो जाय। जसोदाजी गोपी ग्वाल की तिवारी में शृंगार धरावें। महर पधारें। जब पधारे तब यह पद की तुक गाई जाय।

"धन्य दिवस धन रात धन यह पहरघरी।
धन-धन महर जू की कूँख भाग सुहाग भरी"॥

आपके गादी पे पलना के पास बिराजे पलना झुलावे झूमका झूमकहू लगे सो दर्शन होते रहे। यह पलना निज मन्दिर की देहली के पास श्रीजी के जेमने श्रीहस्त की आड़ी आवे तथा देहली के भीतर बिराजे।

बाद नन्द बाबा शृंगार करें। गोपी चार। ग्वाल चार बनें। वहाँ गोपी ग्वाल की तिवारी में सब गोपी ग्बाल नन्दबाबा अरोगे। जसोदाजी भी अरोगे। अरोगे चुके बाद पूर्व में जसोदाजी पधारे। फेर नन्दबाबा पधारें। और आवत ही षष्ठी पूजन करें।

विशेषता—

प्रश्न—ये महाभोग की माला महाभोग की आरती पृथक् काहे कों होंय है?

उत्तर—महाभोग सीमन्त पुंसवन को प्रतीक है और माला हार रूप में। तथा आरती हू सीमन्त की होय है। सीमन्त में अनेक वस्तुन के हार (माला) करि पहरावें है।

प्रश्न—श्रीनाथजी में नवनीत प्रिय पलना झूलिवे काहे कूं पधारे। मदन मोहनजी क्यों न झूले ?

उत्तर—श्रीजी के गोद के सरूप नवनीतप्रिय है। तथा ये बारह हू महिना पलना झूले। तासों यहाँ आपके पलना झूलें। ये निपट बालक हैं। मदनमोहनजी किशोर सरूप है। मदनमोहनजी गोपीनाथजी के ह्यां बालभाव मुख्य है। ताते प्रमाण प्रकरण की लीला प्रकट है और लीला गुप्त है। अतः गुप्त रस को प्रकार बाल भाव विषय है। निरावृत सरूप रस साध्य है।

"जानीत परमं तत्वं यशोदोत्संग लालितम्।
तदन्यदिति ये प्राहुरासुरांस्तानाहो वुधाः॥

श्री हस्त में नवनीत हैं। सोइ गायन के विषय सुधा को जो दान है सो सारभूत नवनीत है। श्रीहस्त में राखत है ताको तात्पर्य यह हैं जो सुधा संबंध बिना भगवद् भोग योग्य नहीं।

"यह्यङ्गना दर्शनीय कुमार लीला इत्यत्र अंगंन यातीत्यङ्गना" भक्त सेवानुकूल है प्रभूकुमार है कुत्सितोमारो तस्मात् कुमारः अतएव आपको नाम मदन गोपाल हू है। आप निपट बालक घुटुवन के बल चलत है। एक श्रीहस्त में माखन है। दूजो श्रीहस्त सों भूमि को दबाये हैं। एक चरण पांछे धोंटू टेके भयो है। दूसरो चरण पृथ्वी के दबाये सन्मुख दर्शन देत है। जो चरण घुटुवन सों दावे है ताको भाव यह है—दुष्टन को दाबिके धोंटू दिये है। दूसरो चरण सो मुनिमन मोहित करम हेतु दर्शन देत है। यह चरण पृथ्वी को सुखदानार्थ है। एक श्रीहस्त में माखन है। समस्त भक्तन के मनरूपी माखन श्रीहस्त में धराये है। दूसरे श्रीहस्त सों पृथ्वी को स्पर्श करि सुखदानार्थ आश्वासन देत है। आपके साञ्जननयन है। नन्ददास हू कहे है—

"निरंजन अंजन दिये सो हे माई नन्द के आंगन माई।
सबको नैन प्रान प्रकाशित ताके ढिग रच्यो चखोटा छवि न कही जाई।
निगम अगम जाको बोले सो अरबर कछु कहत बनाई।
नन्ददास जाकी माया सब जगत भूल्यो सो भूल्यो अपनी परछाई।"

जसोदाजी को शृंगार नखसिख गहनायुत पीरिया धरायके विराजे। हरजी खाना को मुखिया गहना धरे। बाबा नन्दजी को शृंगार सफेद पाग, सफेद कोरदार धोवती उपरना डाढ़ी मूंछें सहित लठिया श्रीहस्त में बाजू पहुंची हार श्रीमस्तक पै। चन्दवा जड़ाऊ आदि पधरावें। जन्त्र तावीज पट्टा आदि पुराने धरें। महाराज जाँय ये जब पधारें तब यह पद हू गवै। अहो व्रज भयो० आदि।

प्रश्न—ये सब जनेन कूं भोजन काहे कों करावें ?

उत्तर—सब सगे संबंधी व्रजराज के यहाँ पधारें वेई गोपी ग्वाल हैं। इन्हें भोजन नन्द बाबा करावें। और व्रजराज के दरबार में सब लोग प्रसाद लें। भक्त हू गावे हैं—

भलीभाँति पूजा करी नीके नन्द जिमाय। दे अशीष घर को चले सौंधेसों लपटाय। रामदास भोजन करि पान खाय अतर (सौंधो) लगाय फेर आशिष दैवे दर्शन करिवे नन्द महोत्सव करन पधारे। ऐसे अनेकन पदन में न्यौत कैं जिमावनो वर्णन कीनो है—

प्रश्न—क्योंजी नवनीत प्रिय देहरी के भीतर पलना जेमने दिस विराजके क्यों झूलें ? गोद में बिराज झूलने हुते ?

उत्तर—मैया अपने लाल को गोद में जेमने दिसिही बैठाय लेत हैं। तथा पलना में देहरी के भीतर झूलवे के पद हू मिले हैं। ता भाव सों यहाँ जेमने दिस पलना में झूलें है देहरी भीतर।

मंगल गावत है व्रजनारी। महर देहरी भीतर आवति देखत बदन उघारी।

तासों जसोदा मैया तथा कन्हैया देहरी सो देखत है। बाबा नन्द छटी पूजन करत है। यह नवनीतप्रिय पलना झूले तथा प्रकट भये ताको आशय यह है—यह आह्लाद सरूप है। वही आह्लाद जसोदाजी के तथा नन्द के पुत्र रूप सो प्रकट्यो—"नन्दस्यात्मज उत्पन्ने जाताह्लादो महामना" आत्मज आह्लाद सरूप प्रकटे। ये वही नवनीत प्रिय आह्लाद रस आनन्द रूप होवे सों पलना झूलें।

आगे सर्व प्रथम "आहूय त्रिप्रान् दैवज्ञान् स्नातः शुचिरलंकृतः' तासों ही सेवाक्रम में सर्वप्रथम नन्द बाबा पधारत ही छटी पूजन करत है। जन्म सुनत ही विप्रन कों बुलाये वे विप्र वेदज्ञ तासों छटी पूजन होय के मन्त्रज्ञता स्वस्ति वाचन गोदान होय है। फेरि नन्द दधि काँदो उत्साह तथा अपने स्नेहीन सों लौकिक रीत्या दूर्वादि बधावे। प्रथम विप्रन द्वारा पूजा प्रथा राखी। सो छटी पूजा बाद मन्त्राक्षत आषिश होय। छठी के उपर बाँस की तिकोनी रूप भये लता तथा फूल माला छटी के आगे चना की दार चावर की खीचरी तामें दीपक तथा पास झारी पूजा थारी चौक माँडि के पीरी पट्टा पै नन्दबावा विराजे। पास छटी के तलवार, रई, वंशी, लठिया ये रहे। फेर ब्राह्मण द्वारा छटी पूजन यहाँ उपाध्यायजी करावें। संकल्प होय। फेर कंकू अक्षत छटी पर डारें। वसोर्धारा होय। साथिया पै तीन धार घी की करें पाछें प्रार्थना करें।

हे षष्ठी देवी गौरी पुत्र स्कंद शिशु की तुमने रक्षा करी ऐसे ही मेरे या बालक की रक्षा करियो। षष्टी देवी हम सपरिवार तुम्हें नमस्कार करे है।

गौरी पुत्र यथा स्कन्द शिशु संरक्षितस्त्वया।
तथा ममाप्ययं बालो रक्षितां षष्टि ते नमः॥
षष्ठी भाद्रिकायं सांगाय सपरिवाराय ते नमः॥

पाछे रई की पूजा करें। कुंकुम अक्षत डारें। यह मन्त्र पढ़ें—

हे मथना! तुम गो लोक से निर्मित और पूजित हो। हमारे या बच्चा की रक्षा करियो। हमारे प्रसूत की रक्षा कीजियो अर्थात् दूध में वृद्धि करियो।

"मंथानं त्वं हि गो लोके देव देवेन निर्मिता।
पूजितस्त्वं विधानेन सूति रक्षां कुरुष्व मे॥

पाछे खड्ग की पूजा करे। कंकू अक्षत डारे। प्रार्थना करे। हे धर्मपाल! या बालक की आप विजय करियो। तुमारी धार बड़ी तीव्र है। दुरासद है। याको या बालक के अनिष्टन कों काट देहु।

असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
पुत्रश्च विजयश्चैव धर्मपाल नमोस्तुते॥

फेर मुरली लठिया की पूजा करी जाय। कंकू अक्षत डारें। प्रार्थना करें। समस्त अमंगल कों दूर करि मंगल करनहारी भगवान के कर में बिराजमान तू बाँस की है अतः हमारे हू वंश की वृद्धि करियो और सदानन्द तुम्हें नमस्कार है—

सर्व मंगल माङ्गल्ये गोविन्द स्वकरेस्थिता।
वंश वर्धन हे वंश! सदानन्द नमोस्तुते॥

फेर सबन के तिलक होय। आरती चून हरदी मिश्रित मुठिया की होय। फेर मन्त्राक्षता (आशीर्वाद) होय पाछे भीतर जाय। प्रभु सन्निधि में बाबा नन्द गौदान करें। ताको संकल्प करिके दान करें पलना के पास मणि कोठा में देहरी बाहर पट्टापे बाबा नन्द बैठें।

फेरि गोप गोपीन को पधरावें। गोपन के श्रृंगार धोती दुपट्टा फेंट—चार गोप बने। श्रीजी के नवनीतप्रिय के ग्वालजी (दूधधरिया) तथा दोनों घरन के परचारग या प्रकार ग्वाल चार। कांवर में मथना दही के लेके आमें। मणि-कोठा में कीर्तन होय बाबा नन्द के दही को तिलक करें। कांवर सो काढ़िके फेर दही दूध उछारें। गले के हाथन के आभूषण पाँयन में हू आभूषण धरे होय।

सुन्दर श्रृंगार गोकुल गाँव जैसो। गोपी चार बने। वे साड़ी लँहगा चोली आभूषण धराय पधारें। हाथन में थारी! जिनमें कंकू अक्षत दूर्वा नारियल तथा भेंट के रुपैया। इन गोपी ग्वालन कों गोपी ग्वाल की तिवारीन सों पधरावे। तबहू 'अहो ब्रज भयो महर के पूत' यही गवै। तिलकायत गोस्वामी परचारग इनकी अनुपस्थिति में दूसरो मुखिया पधरावे।

प्रश्न—क्योंजी गोपी ग्वाल चार-चार ही क्यों बने?

उत्तर—चारों दिसान के भक्त गोपी ग्वाल वाल रूप में पधारें तथा चारों युग के देवता पधारे अथवा **'कलौचतुर्गुणाप्रोक्ता'** अथवा सात्विक राजस-तामस तथा निर्गुण या प्रकार चार अथवा चार यूथाधिप तथा चार यूथाधिपा वे गोपी पधारें। बाबा नन्द को तिलक करें। निज मंदिर के द्वार पै थापा लगावें। भेंट धरें।

थापा दोनों द्वारन की दिवाल पै पाँच-पाँच लगावे। बाल भोगीयाजी थारी झेलें। पाँच थापा लगावे को आशय पंचपरमेश्वर या घर की रक्षा करें। पाछे दूर्वा धरावे। दूर्वा पृथ्वी तत्व है। पृथ्वी में क्रीड़ा करें तबये रक्षा करें। पाछे मणिकोठा में गोपी ग्वाल नन्दरायजी महाराज बालक कीर्तनिया ये सब नाचें कीर्तनियाँ बीच में तथा मंडलाकार होयके नाचे। बीच-बीच कीर्तन सारंग की आलापचारीवाद सारंग के ये चार पद गवै। जब तक कूदते-नाचते रहे—

(१) एरी ए आज नन्दराय के आनन्द भयो। (२) हो हो सब ग्वाल नाचे गोपी गावे। (३) महामंगल महराने आज। (४) नन्द महोत्सव यों बड़ कीजे।

पाछे डोलतिवारी में कीर्तनिया कों बीच में लें मंडलाकार नाचे। नन्द गोपी गोप गोस्वामि बालकादि—

आपन मंगल गावो रानी, मिल मंगल गावो माई, जायो है सुत नीको जसोदारानी, सोहन फूलन फूली।

पाछे उपरोक्त प्रकार सों रतन चौक में नाचे—

(१) रानीजू चिरजीवो गोपाल। (२) आँगन नन्द के दधिकाँदो। (३) घर घर ग्वाल देत है हेरी। (४) गोकुल में बाजत कहा बधाई। (५) माई मेरो गोपाल लड़ाइवो।

ता पाछे मणिकोठा में निज मंदिर की देहरी बाहर पट्टा पै नन्दबाबा विराजें। दर्शन खुल जाय और देव गन्धार की अलापचारी होयके ये पद गवै—

(१) नैन भर देखौ नन्दकुमार। (२) आज वन कोऊ जिन जाय। (३) आनन्द आज नन्दजू के द्वार। (३) आज नन्दजू के द्वारे भीर। (५) मोद विनोद आज घर नन्द। (६) नन्दनन्दन वृन्दावन चन्द। (७) बधाई माई आज सुहाई स्त्री।

पाछे आठ पद पालना के गवे। रामकली देव गन्धार में—

(१) प्रेङ्खः पर्यङ्कशयनम् (२) झूलो पालने गोविन्द (३) अपनो री गोपाल (४) हालरो हुलरावे माता (५) साँवरो सुत पालना ले (६) तुम ब्रजरानी के लाल (७) माई कमल नयन श्यामसुन्दर (८) नन्द को लाल ब्रज पालनो।

पाछे—आशीष के पद गवै। चार आरती बीच-बीच में होय पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी-चारों आरती उतरे बाद राइलोन नौछावर होय। पाछे नन्दबाबा पधारे। डोलतिबारीसों बीच के दर में होय के रतन चौक हथियापोर होय। कमल चौकसों धोली पटिया गोवर्धन पूजाको चौक होते परदछिना सो बैठक में पधारे साथ में गोस्वामि बालक हाथ पकर के पहुचावें। कीर्तनियाँ गावत जांय गीतनवारी हू गावत जाय। तहाँ महाप्रभु जी की सन्निधि में नन्दबाबा कौं समस्त लोग डंडवत करि वस्त्र बड़े होय। नन्द पधारे तब या पद की छैतुक होंय 'अहोब्रजभयोमहर के पूत'—

अहोवे निकसदेत अशीष रुचि अपनी-अपनी। हथियापौर पै पधारे तब—

नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो। ये ढाढी गवे पाछे मन्दिर धुवे बाद नवनीत पधारे समस्त सेवक वर्ग न्हाय के नित्य की अपरस होय और पाछे सम्पुट में नवनीत पधारे। तापमय कीर्तनियां को समाज ये पद गावे—

(१) धन्य जसोदा भाग तिहोरो जिन ऐसौ (२) रानीजू तिहारो घर सुबसबसो।

नन्दबाबा के पधारे बाद बैठक सों सब नन्द महोत्सव सम्पूर्ण होय जाय गोपी ग्वाल की तिबारी में जसोदाजी शृंगार बड़े करें। मादल गीतनवारी झाँझें विदा होय जाय।

प्रश्न—क्योंजी बड़ी अपरस काहेसौं कहै ? क्यों होय है ?

उत्तर—बड़ी अपरस को आशय यह है। सबन कौ स्पर्श करि मंदिर में जाय सके। फिर के सेवा करि सके यामे पवित्रता उत्सवाङ्ग होय नित्य विधि न होय।

जैसे मेला में जायवे पै समस्त वर्णके लोगन सों मेलजोल होय छुवाय नहीं। तैसे ही यह महा महोत्सव में होय है। सभी वर्ण के लोग दर्शन को नन्द दरबार में आमें। असत्छूद्र नही। जो आमें तिनसो भेट करें। याकूं बड़ी अपरस कहें। यामें प्रभु विग्रह को कोऊ भी सेवक छुवे नहीं। वे पलना झूलत रहे वे दर्शन देत रहें।

प्रश्न—क्योंजी, सब सरूप गोपी ग्वाल की तिबारी सो शृंगार करि अरोग के पधारे और फेर बैठक में तो नन्दबाबा शृंगार बड़े महाप्रभु सन्निधि में करें और जसोदाजी गोपी ग्वाल की तिबारी में क्यों शृंगार बड़े करें ? तथा गोपी ग्वाल दर्शन करते ही कहाँ पधारें। ये तो वर्णन कियो नहीं।

उत्तर—गोपी ग्वाल की तिबारी नन्दालय के भाव सों प्रभु श्री गोवर्धनधर के पास में स्थित है। और वा नन्दालय में तो सब शृंगार करि भोग अरोगिके पधारे तथा जसोदाजी वहाँ ही जायके शृंगार बड़े करें। तासों ही समस्त बहू बेटी गोपी ग्वाल की तिबारी में बिराजें सेवा करे। अवकाश में। तथा झारी कुंजादि शाकघर प्रभृति की सेवा जसोदाजी के भाव सो तहाँ करे। वहां रथ हू पधरावे। वो नन्द को घर भावना सों सिद्ध कियो।

नन्दबाबा बैठक में या लिए पधारे—जगद्गुरु श्रीवल्लभ महाप्रभु ने ही यह लीला प्रकट करी और तिलकायत के तीन सरूप होत हैं। नन्दबाबा, जसोदाजी एवं कान्ता भाव अथवा स्वामिनी भाव सों। गोपी ग्वाल दधि कांदो नन्द महोत्सव करि अपने अपने घर पधारें।

प्रश्न—क्योंजी, एक व्यक्ति तीन रूप सों कैसे माने ?

उत्तर—व्यवस्था सेवा प्रकार सेवकन कों सेवा हेतु शासकरूप में तो नन्द बाबा की भाँति सूरदास हू गाये है "आज बड़ो दर्बार देख्यो नन्द तेरो" नन्दबाबा राजा कहे गये तथा स्वामी नन्ददास हू गाये है।

"गहि गहि के भुज मूल रहै गोपिन सुख मानिके।
रपटि परे जिन नन्द सावधान यह जानिके॥"

ताते व्यवस्था हेतु आप नन्द है। चोपार पे पधार के शृंगार बड़े करत है। तासों नन्दबाबा। महाप्रभुसान्निधि तहाँ शृंगार बडे करे। और वो समावेस उन आचार्यन में नन्द रूप सों होय है।

दूसरो जसोदाजू को। सो प्रभु सुखार्थ मातृभाव सों समस्त सेवादि करे। भोग रागशृंगारन सो जसोदा जू के भाव सों लाड लड़ावें तासो वे सदा प्रभु सन्निकट ही रहें। ता भाव करि के गोपी ग्वाल की तिबारी में जसोदाजी शृंगार बड़ो करि वहाँ ही बिराजे। तिलकायत जसोदा के भाव सो है।

तीसरो कान्ता भाव सो—नवनीतप्रिया के यहाँ सो मंगलभोग तथा नूतन नूतन सेवा सामग्री आदि अरोगावे। आगे शीतकालिक सामग्री वगैरे सिद्ध करनो, अरोगानो याको प्रसंग कार्तिक शु० १४ के तिलकायत श्री गोविन्दलालजी के चरित्र में बतामेंगे। कान्तामाव की स्थिति है। ॥

प्रश्न—क्योंजी, तीन ही स्थान में गोपी ग्वाल नन्द आदि नाचे और चौक काहे को छोड़ें? धोरी पटिया गोवर्धन पूजा को चौक आदिन में क्यों नहीं? मणिकोठा डोलतिवारी रतनचौक में ही काहे कूं नाचें?

उत्तर—मणिकोठा यह जसोदाजी के लालन के प्राकट्य को मणि जटित स्थान है। तथा चौकतिवारी रावलो कह्यो गयो। यामें समस्त गोपी नृत्य करें। कई पद या भाव सों वर्णित हैं। यहाँ कुछ पद प्रस्तुत करें हैं। नन्द की वाणी—

"ऐरी सखी प्रकटे कृष्ण मुरारि ब्रज घर घर आनन्द भयो।
ग्वाल गोपिका जात रावलो सगरो भरो रयो।
फूले अंग न समाय सबन को भाग उघरि रयो।
जहाँ ब्रजरानी आप सैन किये ढोटा भये।
तहाँ कुतुहल होत मिल युवती यूथन के गये।"

तासों यहां यूथ चार ही माने हैं। तासों गोपीगण हू चार पधारे। चार यूथाधिपान के भाव सों और असंख्य गोपी वे मणिकोठा में नृत्य करें। तहां सब एक होयके नाचत हैं। भक्त हू गाये है—

सब कोऊ ऐसेई मुख सों बोले।
पूत भयो री नन्दराय के उर उच्छाह न खोले।
पहले सबन दूध दधि के कुमकुम धरी रायजु के सीस।
देवभान वृषभान कहत सब यह दिन कियो जगदीस।
नाच उठे ब्रज नन्द सबे मिल माखन मुख लपटाई॥
नाचत ब्रज मंगल चन्द्रावलि नाचत सब ब्रजनारी।
श्री विट्ठल गिरधरवर भूषण देत है वार उतारी॥

तासो मणिकोठा में नृत्य करें।

डोलतिवारी जगमोहन नन्दधाम तथा चौपार बाबा को निवास स्थान है भीतर तिवारी में राणी जसुमतिजू पौढी। बाहर पोल में डोलतिवारी में नन्द के साथ नृत्य करें। भक्त हू गाये हैं—आज नन्दजू के द्वारे गावत मंगल गीत सबे मिल प्रकटे है सुन्दर बलबीर। सूर आनन्द आज नन्द जू के द्वार—हितहरि वंश गह्यो नन्द सब गोपिन मिलके देहु हमारी वधाई।

"उचे मानक चोतरा तहाँ बैठे सरदार। देखत में भोरो लगे चित है वाको परम उदार" "सब ग्वालन मिल मतो मत्यों करिमन में आनन्द। आवो पकरि नचाइये ब्रजपति बाबानन्द।"

तासों नन्द के नाचबे को तथा गोप मण्डलाकार नाचिवे को स्थान जगमोहन है। तासों यहां नाचें।

रतन चौके में मण्डलाकार नृत्य को वर्णन—

"नन्दराय बडभाग नाचत में देखत बने।
फिरे मण्डलाकार अंग अंग सुख में सने।
"राय चोक में घेरि छिरकत दधि हरदी मेल।
पकरि पकरि के ग्वाल बोल लेत भुज भुजन मेल।"

अथवा तीन स्थानन को अर्थ यह है तीनों लोक के रूप में तीन स्थानन में नृत्य होत है। अथवा सात्विक भक्त प्रभुसन्निधि में मणिकोठा में नृत्य करत है। राजस भक्त डोलतिवारी में अरु तामस भक्त रतन चौक में। चौक ब्रज प्रांगण है। डोलतिवारी ब्रज की वीथी है। मणिकोठा नन्दालय है। और स्थानन में दधिकांदो होय है जहाँ सब ग्वाल बाल दधि दूध हरदी तेल मिश्रत उछारें हैं। ताको आशय नन्द महोत्सव दशम स्कन्ध में भागवताधार पर है।

तासों धौरी पटिया, कमल चौक, पीतम पाली गोवर्धन पूजा को चौक आदि स्थानन में दधि दूध उछरै। जो नाँद धरी भरी होत है ग्वाल बाल उछारत है। दर्शन होत रहत है। जब तक नन्द बाबा न पाछे पधारें तब तक उछरतो रहै

प्रश्न—क्योंजी, एक ही पद बार बार बोले जो "अहोब्रज भयो महर के पूत" दूसरे पद अनेक हैं फिर याही कूं बारम्बार काहे कों गावै हैं—

उत्तर—समस्त नन्दालय लीला के दर्शन महाभाग सूरदासजी कों सर्वप्रथम आचार्य महाप्रभु वल्लभ ने करवाये। तथा परमानन्द दासजी एवं सूरदासजी को ही आचार्यश्री ने श्रीमद्भागवत अनुक्रमणिका सुनाई। सुनहरी दिव्यदृष्टि सों प्रत्यक्ष दर्शन भये और वो पद ये है—वैसे सभी भगवदीयन को साक्षात् दर्शन भये। परन्तु आप को दैन्य देखि कृपा करी। अनुग्रह के प्रथम सेवक रसलीला के महापात्र सूर भये। तासों ये पद बार बार गावै हैं। प्रत्येक लीला में उनकी कृपा सों ये लीलाबगाहन होय। दर्शन मिलत है।

१—श्रीमद्भाग. दशम अ. ४

प्रश्न—ये नन्दालय की लीला, नन्दालय को आनन्द, कैसे, कब, कहाँ लौं प्रारम्भ भयो पूर्व में क्यों न भयो। तथा जब श्रीकृष्ण प्रभास क्षेत्र में समस्त लीला करिके गोलोक धाम पधारे। फेर नन्दालय की लीला कैसी ? नन्दकुमार रहे ही नहीं तब आचार्यन ने नन्दालय की लीला कैसे चलाई ?

उत्तर—श्रीकृष्ण की लीला तीन रूप की भई। ब्रजलीला, मथुरालीला, द्वारिकालीला। जिन श्रीकृष्ण ने ये तीन लीला करीं उन प्रभु ने प्रभास क्षेत्र में हूँ लीला कीनी। यहां पुष्टि मार्ग ने उन नन्दकुमार की ब्रजलीला ही लीनी है। और हमारे प्रभु ब्रज छोड़ के गये हूँ नहीं। तब श्रीमद्भागवताधार पर आपने जो दूसरो रूप धर्यो वोही ब्रजराज नन्दकुमार हैं। वेही विराज रहे हैं उन्हीं की सारी लीला नन्दालय की होय है। तासों ही श्री महाप्रभुजी कौ झारखण्ड में वे गोवर्धन-धर श्रीनाथजी ने आज्ञा दै बुलाय नन्दालय के रूप कौ सेवा प्रकार चालू करवायो और वे ही श्रीकृष्ण नन्दराजकुमार सदा विराजमान हैं। जब अक्रूर जी प्रभु को मथुरा लै गये तब जमुनाजी में ध्यान करते जल में विराजमान के दर्शन भये। भक्तगण उन श्रीकृष्ण को ब्रज में विराजमान मानिके सेवा करैं हैं।

काशी वारे सेठ पुरुषोत्तमदासजी पर कृपा कर समस्त पुष्टि जीवन के हितार्थ सर्वप्रथम श्री नवनीतप्रियाजी को पलना झुलाय नन्द महोत्सव नन्दालय की भाँति वहाँ कीनो। ता समय नन्दकूप जो वर्तमान वाराणसी में पुरुषोत्तमदास के घर विद्यमान है, ता में सौं प्रकट करि आनन्द उल्लास नन्दालय सम कियो। नन्द जसोदा गोपी ग्वाल सब पधराये तथा विश्वनाथ (शिवजी) वैष्णवाग्रगण्य पर कृपा करि दर्शन कराये। तब सों यह नन्द महोत्सव को प्रारम्भ भयो। जब समस्त गोप ग्वाल नन्द जसोदा पुनः पधारन लगे तब आचार्यश्री ने प्रार्थना कीनी कै आपके अंश रूप आवेश हमारे समस्त घरन में आप सर्वदा या महोत्सव हेतु पधारि, कृपा करि दैवी जीवन कौं दर्शन दै कृतार्थ कियो करैं। तबसोंही यह नन्दालय को पलना नन्द जसोदा गोपी ग्वाल दधि काँदो पलना झूलवे को उत्सव महोत्सव के रूप सों चलन में आयो। तद् वंशजनन ने यामें और भी अभिवृद्धि कीनी। प्रभु आज्ञानुसार तथा भक्तन की भावना सों।

कृष्ण जन्म बधाई के अनेकानेक पदन में कछु पद वैष्णव कूं शिक्षाप्रद यहाँ प्रस्तुत करें हैं। ये तथा समस्त पद अनेक भाव भावना तथा अनेकार्थ सों होय सकै हैं।

१—कृष्णस्त्वन्यतमंरूपं—श्रीमद् भाग० १०/२४/३५

यह प्रथम पद तीन अर्थ सो है सके है। नन्दकुमार, वल्लभ तथा वैष्णव परक

(१) यह धन धर्म ही सों पायो।

नीके राखि जसोदा मैया नारायण ब्रज आयो।
जा धन को मुनि जप तप खोजत वेदहु पार न पायो।
सो धन धर्यो क्षीर सागर में ब्रह्मा जाय जगायो।
जा धन ते गोकुल सुख लहियत सगरे काज सँवारे।
सो धन बार बार उर अन्तर परमानन्द बिचारें।

श्री नन्दराज परक—हे जसोदा यह धन धर्म सों पायो तूं नीके राखियो। ये वह नारायण परब्रह्म ब्रज में आयो है। जा धन को मुनि सोपहू जपतरत रहे न पाये और वो धन जो क्षीर सागर में शेष शैय्या पे पोढ़े हुते तिन्हें ब्रह्माजी ने जायके जगाये ता धन सों गोकुल में सुख ले रही है। समस्त कामना पूरक प्रभु है। वा सरूप को पायवेते परमानन्द मिले ताये उर अन्तर राखि मनन चिंतन करो।

श्री वल्लभ परक—आचार्य वल्लभ को प्राकट्य सोम यज्ञ तें भयो। याही नीके राखु। जा धन हेतु यज्ञ यागादि करिके प्राप्त कीने। जय तप सोहू प्राप्त न है सके। वे लीला सागर को प्रकट करि लीला रूपी क्षीर सागर हू में पौढ़े है। तिन्हें ब्रह्म संबंध की आज्ञा दई। जीव उद्धार के हेतु भेजे। जा धन ते गोकुल की रस भरी लीला दर्शन करि सुख लहिये और वो काहे तें प्राप्त होय सो वल्लभ कों बार बार हृदय में धारण करें विचारें मनन करै चिन्तन करै तब परमानन्द प्राप्त उनकी कृपा सो होय। कहे है "नमामि हृदयेशेषे लीलाक्षीराब्धि-शायनं। लक्ष्मी सहश्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधम्॥"

वैष्णव परक—पूर्व जन्म के पुण्य से जप तप खोजत यह धन गुरु रूप प्रभु रूप पायो। ताहि नीके राखु। यश सो (गुण गायके) दया सों समस्त प्राणी प्रभु लीला मान सेवा स्मरण चिंतन गुरु आज्ञा सों करिये। तो नारायण परात्पर ब्रह्म ब्रज आयो। ब्रजलीला दर्शन मिले। ता ब्रजराज कूं हम अपने अहो भाग्य मान माथे पधराय सेवा करत है। गुरु कृपा सों से मुनि जप तप सों न पाय सके वेद हू में वे रस नाहिन सो धन लीला रूपी क्षीरसाई हमें मिले। रसलीला ब्रजलीला नित्योत्सव मनोरथ आदि करिये। ये धन कब मिले। जब ब्रह्म संबंध होवे गुरु ब्रह्म संबन्ध करावे तो ब्रह्मा जाय जगायो। जमुनाजी के हू पदन में वर्णन है। "ब्रह्म संबंध जब होत है जीव को तबहि इनकी भुजा वाम फरके" "चहुँ जने जीव पर दया विचारी" तासो जा धन

ते गोकुल (इन्द्रिय कुल) को सुख लहिये दर्शन कथा श्रवण पद गान सेवा सों अष्टाङ्ग योग पूर्वक तब सगरे काज सवारे। अरु तब ही परमानन्द मिले कब जब बार बार चिन्तन पूर्वक विचारें ।

भावात्मक अर्थ—

सारंग

(२) बाजत कहा वधाई गोकुल में।

भीतर भई है नन्द जु के द्वारे अष्ट महा सिधि आई ।
ब्रह्मादिक रुद्रादिक जाकी चरण रेण नहि याई।
सोइ नन्द जु को पूत कहावे कौतुक सुनो मेरी माई ।
ध्रुव अम्बरीष प्रहल्लाद विभीषण नित नित महिमा गाई।
सो हरि परमानन्द को ठाकुर ब्रज जन कोलि कराई ।

या पद को भावार्थ या प्रकार है सके है—

एक व्यक्ति अनजान ब्रज में गयौ। जब नन्दलाल प्रकटे तो सारे गांवन में नगारा धर घर बज रहे द्वार द्वार पर बन्दन माल लग रही। जगह जगह मंगल कलश सज रहे। छोरा-छोरी (ब्रज बालक) नृत्य कर रहे तो वह पूछत है बाजत कहाँ बधाई गोकुल में — "पुत्रमानो भयो घर घर नृत्य ठाम ठाम" घर घर मेरी नगारो ढोला ब्रज आनन्द होय मानो । उमग्यो सिन्धु कलोला" तब बालकन पूछिबे पर बालक बोले, "अरे भैया भीर भई है नन्दजु के द्वारे अष्ट महासिधि आई" देखु जहां भीर है रही है, तहां ही नन्द द्वार है। तहाँ कन्हैया कनुवा प्रकट्यो है। वो अष्टसिधि नवनिधि लायो है। सो लूट रहे हैं। धन वैभव तूं हूं चल्यो जाँउ । अरे बाबा ब्रह्मादिक इन्द्रादिक ताकी चरण रज नाँहि पा सके वो आज नन्द को पूत कहावत है। यहीं कौतुक हैरयो है। ध्रुव अम्बरीष प्रल्हाद विभीषण नित नित महिमा गाई' जो कन्हैया हेतु ध्रुव अम्बरीष विभीषण महिमा गावत अड़े रहे हैं। तुम देखो ब्रजजन के लिये यहाँ आये हैं—

तो कहत है यह पुष्टि मार्ग में या प्रकार नन्द के आनन्द के दर्शन कब कैसे होंय । तासो अनेक भक्तन के नामन को जोड़िके ये चार भक्त ही परमानन्दजी ने या वधाई में महिमा गान हेतु राखे । ताको आशय या प्रकार होय सके है :—

ध्रुव अम्बरीष प्रल्हाद विभीषण—ये वैष्णव पुष्टि मार्गीयन हेतु ये चार भक्तन के गुण स्मरण करि मन में उतारे। तब या नन्दालय के दर्शन है सकें । वे चार धर्म वैष्णव के या प्रकार है—ध्रुव की समान नाम जप अष्टाक्षर

पंञ्चाक्षर जाके प्रमाण भूत रामदासजी को सेवा मिली, अरु ध्रुवजी को ध्रुव लोक मिल्यो ध्रुव अर्थात्—निश्चित संदेह रहित । अम्बरीष की भांति सर्व समर्थ होते मये राजा हू ने सर्व भाव प्रभु में सेवा करि समर्पण कीनो। तासो वैष्णव हू सब वस्तु प्रभु विनियोग करि सेवा करें। प्रल्हाद की भांति प्रताडन सहते हूँ धर्मनिष्ठा वैष्णवन में होय तब सहिष्णु। तासों प्रभु नृसिह रूप धारिकैं कृपा करि दर्शन दें। चौथो विभीषण—हम समस्त वैष्णव माया रूपी राक्षस कुल में पालित पोषित भये, परन्तु नन्द के आनन्द के समय यदि शरणागत है जाँय, तो वह शरणागति सतत होय तो प्रभु अवश्य छाती सों लगावेंगे। अरु फेरि परमानन्द सागर में निमग्न होइकै ब्रज जनन कों केलि लीला के प्रत्यक्ष दर्शन होय है । ऐसे अनेक भावपूर्ण पद होय हैं।

नन्दालय के आनन्द के पदन में छै सात स्थानन के हू विशेष वर्णन मिले हैं। तामें ब्रज दूसरो गोकुल, महावन, महरानो, रावल, नन्दीसुर, तथा अन्य हू वधाई सर्वत्र होय हैं।

प्रश्न—नन्दरायजी के यहां तो ढाढी, भाट, गन्धर्व गण आये तथा अनेक सूत मागध वन्दीजन आये, तो यहां काहे नहि आवें ?

उत्तर—महामुनिन के मूर्धन्य श्री शुकदेवजी ने नन्द महोत्सव के अठारह श्लोकन में वर्णन कीयें हैं। तासो ही अठारह दिन नन्दालय कौ आनन्द होय है। वह दान एकादशी तक । तामें एक एक दिन करिके भावात्मक प्रत्यक्ष एवं अन्य रूप सो आवें है तथा सम्मान हूँ होय है।

सूताः पौराणिकाः प्रोक्ता—तासों यहाँ सर्वप्रथम उपाध्याय को बुलायके छठी पूजन करि गोदान देत है ।

मागधा वंश गायका—पंड्या जाय भूयसी दीनी जाय तथा नेगहू मिले। वर्ण बांचे । **वन्दिनः स्वमल प्रज्ञा**—ढाढी जो राधाष्टमी को आवत है तथा वाहि झगा पगा नेग मिलत है ।

गायकाश्च —कीर्तनिया जो सालू पगा लेत है तथा जड़ाऊ द्वै तथा ये सब 'विद्योपजीवन:' नेगी कहे जाय है। नेगहू मिले है। महामनानन्द रूप आचार्य इन्हें सालंकार नन्दबाबा विदा देत है।

ये चार हू जनेन की सेवा चार चार दिन होय है। नन्द महोत्सव नवमीं सों लैकें द्वादशी पर्यन्त सूत तेरस सों एकम् पर्यन्त मागध चार दिन दूज सों लैकें पाँचम तक तथा आगे छै दिन गायक एवं बन्दी। इन वन्दी और गायकन में ढाढी भाट आदि

वर्णन मिलत है तथा उत्सवन में इन ढाढीन के पद हू गवै है। इनमें इतने प्रकार के ढाढी इतने प्रान्तन सों आयवे के वर्णन मिले हैं। तथा गाये जाय हैं। गोवर्धन को, ब्रज कौ, वल्लभ कुल कौ, ब्रजराज कौ, वरखाने कौ तथा छै चार भाटनहू केहू वर्णन मिलत हैं। कछु नमूना या प्रकार हैं—

ब्रज को—(१) हों ब्रज माँगनो ब्रज तज अनत न जाऊँ (कल्याणरायजी)। (२) ब्रज में अद्भुत ढाढी आयो (रामकृष्ण)। (३) हों ब्रजबासिन को मँगता (किशोरीदास)।

बरसानो—(१) नन्द उदे सुन आयो ब्रषभान को मंगा (सूर)। (२) नन्द जू हो ढाढी ब्रषभान गोपको लेन वधाई आयो (कृष्णदास)। (३) नन्द हौं बरसाने को ढाढी (अग्रदास)। (४) ब्रषभान पुरते ढाढी न आयी मान की (किशोरीदास)।

गोवर्धन—(१) नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो। सुनि गोवर्धन आयो (सूर)। (२) नन्दजू तुम्हारे दुख गये सबन के देव पितर भलो मान्यो। गिरिगोवर्धन वास हमारो गिरि तजि अनत न जाऊँ (नारायण)।

ब्रजराज—(१) श्री ब्रजराज के हम ढाढी (गुपाल दास)। (२) श्री ब्रजराज की ढाढिन ब्रज में आई (चत्रभुजदास)। (३) श्री ब्रजराज के हो ढाढी द्वारे माँगन भीर। या ढाढी में पक्षी लायो है जो देव रूप में माने हैं। (४) (गोवर्धन) ब्रजराज कहा आनन्द भीर यामें हू पक्षी आये है। (वल्लभ) (किशोरीदास) (५) श्री वल्लभ पद वंदिके कहूँ सुजस एक सार (हरिराय)।

या प्रकार अनेक ढाढी गाये जायँ हैं।

प्रश्न—क्योंजी, ढाढी कौन सों कहैं ? बाय कैसो शृंगार पहरावें ? तथा ढाढी लीला कहा होय ?

उत्तर—ढाढी वंश गायक, वंशावली वांचिवे वारो तथा अपनी बात कहिके याचक ह्वै जानो तत्काल आशु रचना करि प्रसंसा करनो ताहि ढाढी कह्यो है। वे नाचें, गावें, ढाढिन सहित। याही कूँ ढाढी लीला कहै हैं। पालना में लालना करें विराजे। अरु वे गुण गाय गाय अपनी वस्तु की याचना करें।

द्वितीय गृहाधिप श्री कल्याणरायजी की ढाढी अति सुन्दर तथा भावपूर्ण है। जामा तथा पाग, तुर्रा, हार, हमेल पहर के आवैं तथा सन्मुख नृत्य करैं। काहे को नृत्य न करें ? जब नटराज नृत्य करिवे वारे पधार ही गये तो। एक समें श्रीविट्ठल वर गुसाईजी विराजे हुते। उनके काका केशव पुरी पधारे और उनने अपनी गादी

चलावे हेतु इन सात लालजी तथा पौत्र कल्याण रायजी आदिन सों एक पुत्र माँग्यो तब सब चुप करि रहे और श्री गुसाईजी तथा केशव पुरीजी की दृष्टि भी गोविन्द जी द्वितीय पुत्र के सुत पै पड़ी। ताही समय ये ढाढी बनाय के अपने भाव स्थित करि सुनाई। आचार्य समझ गये फेर कोऊ न गयो। तब केशवपुरीजी ने तीन शाप दीने और वे शाप बालकृष्णजी ने झेले। ये बात बाल कृष्णजी के चरित्र में लिखेंगे। वह ढाढी या प्रकार की है।

"हो ब्रज माँगनो ब्रज तज अनत न जाऊँ।"
बड़े बड़े भूपति भूतल महियाँ दाता सूर सुजान।
कर न पसारौं, शीश न नाऊँ या ब्रज के अभिमान॥
सुरपति नरपति नाग लोकपति मेरे रंक समान।
भांति भांति मेरी आशा पूजी ये ब्रजजन जिजमान।
मैं व्रत करि करि देव मनाये, अपनी धरनिसपूत।
दियो विधाता सब सुखदाता गोकुल पति के पूत।
हौं अपनो मन भायौ लैहौं कित बौरावत बात।
औरन को धन धन ज्यों बरसत मो देखत हँसि जात।
अष्ट सिद्धि नवनिधि मेरे घर तुव प्रताप ब्रज ईश।
कहत कल्यान मुकन्द तान कर कमल धरो मम शीश।

के जन्मोत्सव पर बुलाय के नचाय दीने। खिलौना बनाय रिझाय दीने कन्हैया कौं। याही प्रकार पलना में उत्सव महोत्सव तथा बारह महीना के उत्सव वर्णन किये गये हैं। कहूँ भावना सों, कहूँ स्पष्ट, कहूँ ध्वनि सों। गुसाईजी ने दो पलना बाल भाव में कियो। किशोर भाव सम्मलित कियो तथा ब्रज पालना के भाव सों अनेक लीला वर्णन पलना में कीनो है। कछु नमूना या प्रकार है।

तृतीय गृहाधिप श्री गोस्वामि बालकृष्ण लालजी महाराज जसोदाजी बने। तब वात्सल्य रस आप्लावित होय कै स्तनन सों दूध की धार छूट गयी। क्यों न होय ? जो साक्षात् जसोदाजी और कन्हैया जसोदोत्संगलालित, फेर ता समय को वर्णन या प्रकार पद में कीनो। ये पद हर पलना में अवश्य होय है—

तुम ब्रजरानी के लाला अहो दधि मथत सुहाई के तुम लाला।
दिव्य कनक को पालनो लाल-रतन जटित नग हीर।
गज मोतिन के झूमका लाल ऊपर दक्षिण चीर।
घुटवन चलत सुहावने लाल पग नूपुर को नाद।
कटि किंकिनी रुनुन को लाल सुनत जननि आल्हाद।
आधे आधे वचन सुहावने लाल सुनत जननि मनमोद।

मुख चुम्वन स्तन पानदे लाल ले बैठावत गोद ।
कुल्हे सुरंग शिर ताफता की लाल झंगुली पीत सुदेश ।
कंठ वधना कर पहुँचिया लाल सुन्दर शोभित वेश ।
तिलक खुल्यो गोरोचना लाल घूँघट वारे केश ।
नान्ही नान्ही दतियाँ द्वै दूध की लाल देखियत हँसत सुदेश ।
काजर लोचन आँजि कै लाल मोहन मटुकदे ईठ ।
अपनो लाल काहु देखन नदेहौं जिन काहु लागे दीठ ।
प्रथम हनी तुम पूतना लाल शकट भंजन तृण मारि ।
यमलार्जुन तारिकै लाल अब किन छाँडो रारि ।
मेरे लाल की मैया ब्रजरानी बाप गोकुल को राज ।
धनि धनि तुमरे बल्भद्र भैया करत सकल सुख साज ।
मेरे लाल की गैया अति बाढी चरन वृन्दावन जाई ।
पान्यो पीवँ नदि जमुना को अंजन खरवे खाई ।
मेरे लाल प्यारे लाल तुम कंस मारि गढ़ लेहु ।
मथुरा फिरौ ब्रजराज दुहाई गोप सखन सुख देहु ।
लिये उठाय ब्रजराज गोद करि देउ गार हृदि लाय ।
बहुर्यो लिये जननी गोद कर अस्तन चले चुचाय ।
कहत जसोदा सुनो मेरे गोविन्द लेऊँ कनियाँ चढ़ाय ।
जोझूलो तो पालने झुलाऊँ नातर बैठी गाय ।

यहाँ या पद में—'बहुर्योलिये जननी गोद करि अस्तन चले चुचाप' यहां ही आचार्यश्री को वात्सल्य भाव उमड़ि गयो और दूध धार छट गई। याही सों जसोदा सरूप बल्लभ कुल के बालकन को मानत है। तासों ये पद या भाव को पलना में गावें। अनेक पद अनेक भावन के पलना के हैं।

प्रश्न—क्योंजी, पलना काय सों कहैं ? यह कहा होय है ?

उत्तर—यह पलना संचोर अथवा पलंगड़ी छोटे बच्चा की होय वैसी सोयवे की होय। जामें लालन पालन होय। सुख सों बच्चा सोय सके। ताको पलना कहैं। यामें चारों दिश खोखटा होत है। बीच में पलंग की भांति निवार सों गूँथी जाय है तथा ऊपर हू चारों दिश जाली वारो कटहडा जामें छोटी वंशी आदि पट्टी आदि होत है। यह चन्दन को, पल्लब को सोना, चांदी को होय है। पर मचान निवार वारो पौढायवे (सुवायो) पर कोमल ही होत है। उपर घुँडला जो चार थम्भ अथवा छोटे पाये जिनके बीच बल्ली जामें कड़ा में रसीडोडीन सों

झोटा देत है। झोटान सों बच्चा कौं नींद आय जाय। पालयति इति पलना। पालन वर्धन के भाव सों याको पलना नाम राख्यो। आचार्यश्री विट्ठलनाथजी ने याको हिडोल झोटा दोलिका कह्यो है—"लालयति दोलिका मंच शयनम्"

दोलिका झोटा स्थान में मंच में शयन किये। और हू पलंग के रूप को वर्णन करत है। 'प्रेखे पर्यङ्क शयनम्' तासों ये पलना पलना कहो गयो। छोटे सरूपन में बारह ही मास झूलें। कई घरन में ऐसो है।

प्रश्न—क्योंजी, पलना सवेरे ही क्यों झूलें तथा दर्शन हू पालना के सवेरे ही क्यों होंय ?

उत्तर—महाराणी जसोदा तथा समस्त गोपीजन भोर में दैनिक दैहिक कृत्य तथा सवेरे बच्चा न्हाय के तथा लोई बगैरे करायके सेवा युत होय तब नींद आछी आवे। तासो श्रृंगार करि के काजर टिकुला देके प्रभात में ही पालना झूले। दिन भर तो गोदीन में खेले। स्नानोपरान्त हलको श्री अंग होवे सों नींद आवे। सो ग्वाल के बाद पलना के दर्शन होय है। भक्त हू गाये है—

यह नित नैम जसोदाजू मेरो तिहारो लाल लडावन को ।
प्रात समै उठ पालनो झुलाऊँ सकट भंजन जस गावन को ॥

प्रातः दधि मंथन करन हेत हू मैया लोरी देत जाय और पालना में पौढाय देय। चत्रभुजदास की बाणी।

झूलो पालनो गोविन्द। दधि मथौं, नवनीत काढौं तुमकों आनन्द कन्द।

चत्रभुजदास सूरदास मदन मोहन कहत है।

मेरे लाड़िले गोपाल पौढो पालनो झुलाऊँ ।
दधि के मथन बेर मेरे संग जागे ।
मैं मथन कियो तौलौं रहे जानु लागे ।
जसुमति अति निकट हुलरावै ।
बाल विनोद प्रमुदित गावै ॥
चौंकि चौंकि जननी बदन निहारै ।
धाम काम जाप जिन बारंबार सँभारै ॥

प्रातः नन्दालय की लीला मध्याह्नोतर कुञ्ज लीला।

अतः कई भाव पूर्ण पदन के आधार सों प्रातःकाल ही पलना होत है। गोपी बल्लभ बाद नवनीत के पधारवे बाद मंगल भोग आवें ता समैं बीन बजे। एक

बधाई गवै । जगायवे के न होय । जय जय श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेश साथे । मंगल भोग में—छगन-मगन प्यारे लाल । मंगलं-मंगलं-होयके सन्मुख में आज बड़ो दर्बार देख्यो नन्द तेरो ।

मंगला भये पीछे शृंगार नहीं होय । केवल माला धरै । बालकृष्ण लाल वगैरन के स्नान होय तब एक चोखल गवै । ये चार पद । मृदंग समाज, झांझ नहीं केवल चोखल मात्र गवै ।

(१) नैन भरि देखौ नन्दकुमार । (२) आज नन्दजू के द्वारे भीर । (३) ब्रज में फूले फिरत अहीर । (४) मोद विनोद आज घर नन्द ।

शृंगार सन्मुख में—आनन्द आज नन्दजू के द्वार । **राजभोग आयवे पं**–छाक नहीं गवै । ये पद गवै—

(१) लाल को मीठी खीर जिमावै । (२) सुतहि जिमावत जसुदा मैया । (३) यह तो भाग्य पुरुषरी माई । (४) हरि भोजन करत विनोद सों । (५) लाल को अन्न प्रासन आज । भोग सरवे में आचमन बीड़ी में माला बोलते संग भोजन करिजु उठे दोउ भैया । बीरी नवल लाल ले आई ।

राजभोग सन्मुख—नन्द बधाई बाँटत ठाड़े । नन्द बधाई दीजे ग्वाल । **उत्थापन में**—जायो पूत सुलच्छन रानी । **भोग में**—बधावो श्रीव्रजराय के रानीजू जायो । **आरती में**—यह धन धर्म ही सों पायो । **शयन भोग में**—नित्य के पद । दूध नित्य के पद । **शयन में**—'सुन बड़ भागिन हो नन्दरानी । शयन में, पौढ़वे में की बधाई । 'जसुमति सुत जन्म सुनि फूले ब्रजराज हो ।'

भाद्रपद कृष्ण १० यह शृंगार काल वत् । चौखटा जड़ाऊ । दूसरो दो जोड़ के आभरण । खण्ड पाट पिछवाई साजसज्जा पूर्ववत् । परचारगी शृंगार ।

जन्माष्टमी के चार शृंगार चार यूथाधिपान के भाव सों—प्रथम बधाई कौ श्री यमुनाजी के भाव को । श्रा० कृ० ८ को । जन्माष्टमी कौ श्री स्वामिनीजी के भाव कौ । नन्द महोत्सव को चन्द्रावलीजी के भाव कौ । तथा आज कौ श्रीललिता जी के भाव कौ । **मंगला में सन्मुख**—आज नन्दजू के द्वारे भीर : शृंगार होत में—आनन्द आज नन्दजू के द्वार । मोद विनोद आज घर नन्द । सो गोविन्द तिहारो बालक । **शृंगार सन्मुख**—धन गोकुल जहँ गोविन्द आये । **राजभोग में**—छाक के सरबे में पूर्ववत् । **राजभोग सन्मुख**—गह्यो नन्द सब गोपिन मिलिकै । **उत्थापन**—नन्दजू आयो तिहारे पूत । **भोग में**—मेरे मन आनन्द भयो नन्दजू । **आरती में**—सुन बड़ भागिन हो नन्दरानी । शयन में—चलो मेरे लाडले पाँयन पैंजनी । आज से लैकै पौंढवे में मान के पद न होय कै भाद्रपद शु० ७ तक येही पद गाये जायँ—धन रानी जसुमति गृह आवत गोपीजन ।

बाललीला—

भाद्रपद कृष्णा ११—शृंगार बाल लीला कौ ।

विशेषता—

श्रीमद्भागवत दशम स्कंध के पञ्चम अध्याय के अठारह श्लोक नन्द महोत्सव के हैं । याही भाव सों भाद्रपद शुक्ला दशमी तक बधाई में ढाढी, भाट आदि आवें तथा नन्द महोत्सव को सो ही रूप सेवा क्रम में माने तासों बाल भाव के छोटे हलके रस भरे शृंगार होय हैं । अरु दान एकादशी सों दूसरी लीला चालू माने हैं । सामग्री हू बाल लीलावत् खेलनी आदि आवै ।

बाललीला—श्रीमद्भागवत दशम स्कंध में बाललीला के कुल छप्पन श्लोक हैं जो वनलीला, निपट बाललीला, पाँयन चलन, घुटुवन चलन, आदि वर्णित है । आचार्यश्री के सुबोधिनी के आधार पर दशविध लीला के दश दिन के शृंगार बाललीला के होय हैं । वे आज सों आरम्भ होय हैं । वे दशविध लीला सुबोधिनी की कारिका सों है—

१—दशधा भगवद्रूपमत्रवक्ष्यते अवान्तरावान्तर भेद युक्तम् । (सुबो० १० स्कं०)

अन्याभयं—अंक मध्य क्रीड़ा पाँयन चलनो, घुटुवन चलनो । **स्वयंश्चेतत्**—मणिखम्भ प्रतिबिम्ब दर्शन पलना में क्रीड़ा । वाणी पर खेल दम्पति होड़ चन्द्र दर्शन । **सर्वथा तथा उत्थितम्**—महादेव लीला, ब्रह्मालीला, चोटी लीला, पाण्डे लीला, दामोदर लीला । **मुग्ध लीला**—सालिग्राम मुखमेलन चत्रभुज दर्शन नव रत्न धारण फल भक्षण पर लीला । **धार्ष्ट्य लीला**—वाक् चातुरी पृथ्वी पै पौढ़न । या प्रकार अष्टादश दिन अष्टादश लीला कीनी । तासों अष्टादश दिन बाललीला गवै । **धौर्य्यलीला** तथा वृषभानुपुर की राधाष्टमी की बधाई हू यामें आवै, सो गवै ।

हरिराय महाप्रभु ने चौदह रस स्थित किये । ताही भाव सों चौदह दिन बाललीला गवै । श्रीमद्भागवत दशम में छप्पन श्लोक बाललीला के होवे सों चौदह दिन सायं प्रातः उभयलीला में छप्पन श्लोकन की पूर्ति होय है । कछु श्लोक दश दिन के दश शृंगार में बाललीला के शृंगार श्लोकाधार पर होय है वे या प्रकार है । दशम के अष्टम अध्याय के इक्कीस वें श्लोक सों लैके इकतीस श्लोक ताईं दश शृंगार के हैं ।

आचार्य हरिरायजी ने दूसरे शिक्षापत्र में १८ श्लोक बाललीला शृंगार के वर्णन किये। उनमें चौदह श्लोक तो एकमात्र शृंगार के हैं वे आगे लिखेंगे। यासों ही चौदह दिन बाललीला के शृंगार होय है।

भाद्रपद कृष्णा एकादशी पिछवाई *चितराम की तिवारी। बीच में श्रीनाथजी जेमनीदिश पलना झूलते तथा बाहर चौक तिवारी, अटा अटारी, ब्रज भक्तन की भीर अरु दधिकांदो होत भयो। पलना झूलते वामदिशि नन्दबाबा आदि नाचते, छठी पूजन करते। ठाड़े वस्त्र हरे पाग पिछौड़ा लाल गाती को पटका केशरी छोटो शृंगार पँचलड़ा हार हमेल तथा बधनखा। श्रीमस्तक पै मोर पक्ष की लूमकी किलंगी (कतरा) निपट बाललीला को शृंगार।

पद मंगला में—"बलि-बलि चरित गोकुलराय" या पद में पाँच श्लोक की लीला एक ही पद में श्रीहरिराय प्रभु ने स्थित कीनी। तासों सर्वप्रथम वे पाँच श्लोक सों प्रारम्भ होय हैं।

शृंगार होत में—"बलि-बलि चरित विचित्र मुरार" या पद में चतुर्भुज रूप के दर्शन ब्रजभक्तन कों भये जगन्नाथ दास की वाणी सों नन्दालय में बाल-लीला में चतुर्भुज स्वरूप दर्शन।

शृंगार सन्मुख—'जा दिन कन्हैया मोसों मैया" **राजभोग**—आज से लैके अमावस ताईं गोदी में लेके भोजन तथा बाललीलागत भोजन के पद होय। **राज-भोग में**—सारंग में—मेरे गोपाल लड़ायवो। **उत्थापन में**—दोऊ कर फुन्दना मुखमेलत। **भोग में**—कौन सुकृत इन ब्रजबासिन को। **आरती में**—तेरे लाल की लागी मोय बलाय। **शयन में**—सुन बड़ भागिन हो।

विशेषता—

कालेन ब्रजतल्पेन गोकुले राम केशवौ।
जानुभ्यां सह पाणिभ्यां रिङ्गमाणौ विजह्रितुः।"

या श्लोक के आधार पर पद—

दोऊ भैया घुटुरन चलत।
हरत दुख ब्रज भूमि को दे मोद दैत्य दलत।
अलक बिथुरे बदन मृगमद तिलक सोहे भाल।
दृगन अंजन भौंह विदुला अधर रसत रसाल।
कंठ बधना चरन नुपुर किंकिनी कलनाद।

*हरिवल्लभजी समाधानी वारी।

करन पहुंची उरसि माला सबद सुनि आल्हाद।
देख जसुमति जनम अपनो सफल करि करि माने।
बाललीला भाव हरि को रसिक को को जाने॥

हरिराय महाप्रभुकृत बाललीला शृंगार वर्णन शिक्षापत्र दो में है।

भाद्रपद कृष्णा द्वादशी (वत्सद्वादशी)—पिछवाई चितराम की तिवारीवारी। एक तिवारी में गो पूजन बछड़ा सहित जसोदा मैया कन्हैया के द्वारा कराय रही है। एक दिश ग्वालबाल खेलते भये। बीच में श्रीजी वस्त्र गुलाबी गोल काछनी आभरण जड़ाऊ। श्री मस्तक पै टोपी जड़ाऊ, फुन्दना रेसमी, सुनहरी चोटी अलक वनमाला को शृंगार। कुण्डल हाँस ववल बघनखा सूथन गुलाबी।

पद—मंगला में—माखन तनक देरी माय। **शृंगार में**—अटक्यो मेरो बाल गोविन्द। **शृंगार सन्मुख**—आँगन खेलिये झनक-मनक। **राजभोग सन्मुख**—छाँड़ मथानी मथन दें। आँगन खेलिये झनक-मनक। **उत्थापन में**—बालदसा गोपाल की सब। **भोग में**—बलि-चलि जाऊ छबीले लाल की। **आरती में**—काहू जोगिया की नजर लगी। **शयन में**—कोई बाललीला—एकादशी सों लेई अमावस ताईं दिन भर बाललीला के ही पद गवैं। विशेषता—भागवताधार १०.८,२२

देखोरी रुनक-झुनक पेन्जनि पग डगमगी चाल,
लाल के त्रिभुवन की सोभा सिन्धु लागी डोले आँगन।
पचरंग पीरी पाट की कोंधनी कटि पर बाँधे,
कंचन मणि नुपुर धूरी धूसर रतन नगन।
आगे चलि जात तब जननी डरपावत डरपि-डरपि,
आवत है हरि किलकि-किलकि जसुमति उर लागत तन।
सूरदास मदन मोहन लीला रस सागर,
गुन आगर ब्रजनारी सुर मुनि मगन।

आज वत्सद्वादशी—जब कन्हैया ढाई वर्ष के भये तब आज के दिन गो वत्स-सहित पूजा करि बछरा चरावन भेजे। तासों ही आज वत्सद्वादशी कही। यह शृंगार यह लीला दर्शनार्थ पिछवाई आदि आवे तथा बाल लीला में वन लीला में वत्स हरणादि भये।[1]

भाद्रपद कृष्णा १३—शृंगार ऐच्छिक, परन्तु बालभाव के होंय। पिछवाई माखन चोरी की तीन तिवारी की चितराम की। वस्त्र चूंदड़ी पीली धरती पै। लाल

१—देखो—चिबुकांत लसद् वज्रभूषः ४-८ श्लो०

बुटका। पीरी धरती खाली। मल्लकाछ बिना पटका चोटी टिपारा जोड़। मयूर पक्ष को। मध्य कौ शृंगार कुण्डलादि ठाढ़े वस्त्र गहर गुलाबी आभरण सोना के सम्पूर्ण।

मंगला में—शोभित कर नवनीत लिये। **शृंगार सन्मुख**—निरञ्जन अंजन दिये सोहे। **राजभोग में**—ढाढ़ो लिये खिलावत कनियाँ। **उत्थापन में**—छोटो सो कन्हैया इक मुरली। **भोग में**—विमल जग्य वृन्दावन के चंद। **आरती में**—हौं वारी तेरे मुख ऊपर। **शयन में**—मोहन माखन चोरी करत फिरत। यह शृंगार तीसरे श्लोक के भाव सों होय है। (श्रीमद्भागवत १०-८-२३)

किलकत कान्ह घुटुरुवन धावत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन मुख प्रतिबिम्ब पकरवे धावत।
कबहुक निरख हरि आप छांह को कर सों कर पकर नचावत।
किलकत हसत राजत द्वै दतुली पुनि-पुनि तिहि अवगाहत।
बाल दसा सुख देख जसोमति पुनि-पुनि नन्द बुलावत।
अँचरा तर लै ढाँकि सूर प्रभु जननी दूध पिवावत।

भाद्रपद कृष्णा १४—शृंगार काका बल्लभजी के उत्सव को। पद के आधार पर देहली वंदन माल नहीं। शृंगार मात्र वस्त्र पीले पिछोड़ा कुल्हे लाल आभरण पिरोजा के वनमाला को शृंगार। कुण्डल हास जोड़ चमक को (घेरा) चोटी पिछवाई पीरी खण्ड पीरो कठला बघनखा धरें।

मंगला में—आज मनि खम्भ निकट जहाँ। **शृंगार में**—छोटो सो कन्हैया इक मुरली। आज जसुमति के भवन देख्यो। **शृंगार सन्मुख**—बाल दशा गोपाल की सब। **राजभोग में**—मनिमय आँगन क्रीडत रंग। **उत्थापन में**—लाडले लाल खेलत वृन्दावन में। **भोग में**—सोभित श्याम तन पीत झगुलिया। **आरती में**—खेलत लाल अपने रंग। **शयन में**—कन्हैया मेरो कोन-कोन को माने। **शृंगार**—श्लोक एवं पदाधार (श्रीमद्भागवत—१०-८-२४)

राजभोग के पदाधार पर शृंगार बारह महीना में आज ही कुल्हे दूसरे रंग की तथा वस्त्र दूसरे रंग के पीत पिछौरा लाल कुल्हे।

मनिमय आँगन क्रीडत रंग।
पीत ताप को बन्यो झंगुला कुल्हे लाल सुरंग।
कटि किंकनी घोष विस्मित धाय चलत बल संग।
गोसुत पुच्छ भ्रमावत कर गहि पंकराग सोहे अंग-अंग।

गज मोती लर लटकन सोभित सुन्दर लहर तरंग।
गोबिन्द प्रभु के अंग-अंग पर वारों कोटि अनंग।

प्रश्न—काका बल्लभजी को उत्सव कैसे मानें हैं? तथा ये शृंगार क्यों कीनो?

उत्तर—मेवाड़ में पधराबे वारे श्री दामोदरजी महाराज तिलकायत के ये काका हते। इनने मार्ग में व्रज से पधारते समै जो सेवा कीनी तासों श्रीजी ने स्वयं आग्या दै शृंगार कराये। तब से श्री बल्लभजी ने आपके ये शृंगार मेवाड़ में पधारे बाद कीनो। तब से चालू है। यहाँ कई बालकन के उत्सवन के शृंगार होय है। तिलकायत एवं श्रीजी की आज्ञा सों जैसे विट्ठलनाथजी बारेन के तथा कांकरोली बारेन के तथा अन्य घरन के हू शृंगार होय है।

श्री बल्लभजी को संक्षिप्त परिचय—आपको जन्म विक्रमाब्द १७०४ में आज के दिन श्रीमद् गोकुल में भयो। आप टिपारा वारे विट्ठलेशरायजी के सबसे छोटे पुत्र हते।

प्रकटे बल्लभ लाल फिर कुल वृद्धी सुखकन्द।
भादवकृष्णा चौदसहि को वेदपूर्ण मुनिचन्द ॥१॥

सम्प्रदाय कल्पद्रुम में आपने श्रीनाथजी की परचारगी कीनी ऐसी किंवदन्ति है। आपके ६८ वचनामृत बड़े सुन्दर हैं। वे प्रकाशित होय गये हैं। आपको निवास नाथद्वारा में चमेली वारे मंदिर में हतो जो आज कालि वनमालीजी के मंदिर के नाम सों प्रसिद्ध है।

आज राजभोग के समै गावें वा पद की व्याख्या[1] :—

मणिमय आंगन क्रीडत रंग। मणिकोठा में ग्वाल बालन के गोविन्द स्वामि प्रभृति संग रंग भरे खेल रहे हैं। पीत झबला तथा कुल्हे लाल सुन्दर रंग की धराय राखी है। छोटी-छोटी कौंधनी धराय राखी है। पीत ताफ को बन्यो झगुला कुल्हे लाल सुरंग। कटि किंकिनी घोष बिस्मित धाय चलत बल संग। कौंधनी की ध्वनि सों समस्त घोष की ललनान को बिस्मय होय है और जब बलदेवजी के संग चले तब सब 'बलिहारी' कहि जाय। अरु पाछे-पाछे फिरत है छोटे-छोटे बच्छन की आप पूंछ खेंचत है। तथा उनमें झूम जात लटक जात हैं। जब धूरसो सने है गोसुत पुच्छ भ्रमावत कर गहि पंक राग सोहे अंग-अंग। आप किलकत हसत जात

१—हरिरायकृत शिक्षापत्र —श्लो० १०-१४।

तव मोतिन के जो लटकन युत मुखाब्ज उन मोतिनके हलवे सो अतिशोभित होय हैं। गोविन्द प्रभु के अंग-अंग पर वारो कोटि अनंग गोविन्द की ऐसी सुन्दर सरस शोभायुत माधुरी छटा है जो देखत ही कोटि-कोटि कामदेव नोछावर होय है ?

श्रीगुसाईंजी विट्ठलनाथजी आज्ञा करै हैं :—

"अंगुष्ठ चोषकं गूढ रस पोषकं स्वल्प संतोषकं कृष्ण चन्द्रम्"

नन्द को लाल ब्रज पालने झूले।

कुटिल अलकाबलि तिलक गो रोचना चरण अंगुष्ठ मुख किलकि फूले।—नन्ददास

गोपेश्वरजी महाराज ने अंगुष्ठ चूसवे के अनेक भाव वर्णन किये कुछ या प्रकार हैं—

प्रभु विचार करै है कोटान-कोटि देवता मेरे चरणन पै वन्दन करै चरण स्पर्श करैं चरणन कौ ध्यान लावै तो मैंहू देखूं इन चरणन के अंगुष्ठ में ऐसो कहा मिठास है ? अथवा इन चरणन सों अनेक रिसि मुनि पावन भये तरि गये मैं हूँ देखूं[1] ।अथवा "ब्रज ललना हरिचरण मनावत" अतः मैं यह देखूं इन सों अमृत सुधांसु कैसे प्रकट होय ? महाभाग सूर ने तो समस्त लोक-लोक में हलचल मचवाय दीनी जब कन्हैया ने अंगुष्ठ चूस्यौ। अरु सकटासुर को उद्धार कीनो। ताको वर्णन—

कर पद गहि अँगुठा मुख मेलत।

प्रभु पौढ़े पालने अकेले हरि हँसि-हँसि अपने रंग खेलत॥ आदि।

या प्रकार अंगुष्ठ चोषण के तथा बाललीला के अनेक भावपूर्ण पदन के आधारभत ये शृंगार भोग राग पद गान होय है।

भाद्रपद कृष्णा ३०—शृंगार ऐच्छिक। बाल भाव कौ। आज ये शृंगार भयो तथा पद ये गवें पिछवाई चितराम की। प्रभु बीच की तिवारी में। एक तिवारी में उलूखल बन्धन लीला। दूसरी में सजल नेत्रन सों माता डरावती भई तथा एक ओर यमलार्जुन उद्धार की लीला। वस्त्र श्याम पाग पिछौरा छोटो। शृंगार गोल चन्द्रिका। हीरा के आभरण। माखन चोरी उराहनादि के पद। या प्रकार यह निपट बाललीला के पञ्चम श्लोक के भाव कौ शृंगार होय है।

१—हरि० शि० पत्र—२-६ (मुखाम्बुज निजांगुष्ठ०)

मंगला में—आज हरि पकर न पाये चोरी। **शृंगार में**—जसोमति दधि मन्थन कर बैठी। **वर ब्रह्मधाम**—तथा उराहना के पद गवैं। **शृंगार सन्मुख**—मैया मोय बड़ो कर लेरी। **राजभोग सन्मुख**—तेरेरी लालन ने मेरो माखन। **उत्थापन में**—देख सखी मणि खम्भ निकट। **भोग में**—तू नेक बरज री जसोदा। **आरती में**—यहाँ लो नेक चलो रानी जू। महर पूत तेरो वरज्यो न। **शयन में**—मोहन माखन चोरी करत फिरत। भली यह खेलवे की बान। ये शृंगार श्रीमद्भागवत के इतने श्लोकन के आधार पर होय है—१०, ८, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१।

या प्रकार विविध लीलान के भाव सों ये शृंगार तथा पद गान तथा तैसी ही सामग्री अरोगत हैं। सारी रसलीला भागवताधार पर आचार्यश्री ने ब्रजराज कौं ब्रजलीला से सुखानुभव कराय के भक्तन के मन कौं निरोध करायौ। तासों ही कोऊ मास कोऊ पक्ष, कोऊ सप्ताह ऐसौ न जाय जामें उत्सव न होय। भक्तहू गावै हैं—

आछे ब्रज के खिरकखाने बड़े देवघर।
दिन मंगल दिन वन्दन माला भवन सुवासित धूप अगर।

तासों ही श्रीविट्ठलेश गुसाईंजी ने दशम की सारी रसलीला को संक्षिप्त प्रभावपूर्ण रस पूर्ण षट्पदी बनाई—

मंगलं मंगलं ब्रज भुवि मंगलम्।

आदि सम्पूर्ण पद की व्याख्या श्री हरिराय महाप्रभू नै कीनी है।

नव रस में ग्वाललीला के भोजन

१. **शृंगार संयोग**—यह तो भाग पुरुषरी माई अंग-अंग प्रति अमित माधुरी सोभा सहज निकाई। (परमानन्द) **शृंगार वियोग**—बलि गई श्याम मनोहर गात। (परमानन्द) देशान्तर, पलकान्तर, वनान्तर आदि। २. **वीर**—भोजन भली भाँत हरि कीनो। (परमानन्द) ३. **करुणा**—दोऊ भैया मैया सों माँगत दे मैया मोय माखन। (सूर) ४. **अद्भुत**—माखन तनक देरी माय। (सूर) ५. **हास्य**—जेंवत कान्ह नन्दजू की कनियाँ। (सूर) ५. **भयानक**—जेवत नन्द गोपाल खिजावत। (परमानन्द) ७. **वीभत्स**—जेवत कान्ह-नन्द इक ठौर। (सूर) ८. **रौद्र**—खीजत जात माखन खात। (सूर) ९. **शान्त**—भोजन करत है गोपाल। (परमानन्द) १०. **माधुर्य**—लाल को मीठी खीर जु भावे। (परमानन्द) ११. **वात्सल्य**—गोवर्धन गिरिस्रंग। (गोविन्द)

भाद्रपद शुक्ला १—राधाष्टमी की बधाई बैठे झाँझन की। आठ दिन की। आज से प्रतिदिन अष्ट सखीन के प्राकट्योत्सव माने है जो श्री बरसाने के चारो दिश गाँवन के प्रधान गोप, तिनके घरन में इन अष्ट सखीन को प्राकट्य है। ताही भाव सों यहाँ आठ दिन तक नित्य नूतन शृंगार भोग तथा पद गान श्री स्वामिनीजी के जन्म-लीलोत्सव में होय है।

प्रश्न—क्योंजी राधाष्टमी की बधाई आठ दिन की काहे कूँ बैठे हैं ? पन्द्रह दिन की क्यों न बैठे ? जबकि गुसाईंजी, महाप्रभुजी की पन्द्रह दिन की तथा जन्माष्टमी की एक मास की बैठे है ?

उत्तर—भगवान् श्री नन्दराज कुमार की अर्धाङ्गिनी श्री स्वामिनीजी है अतः षोडष कलायुक्त प्रभु प्रकटे और उनके अर्ध आठ दिन। आठ गुणी सेवा मानवे वारी श्री राधा है। तासों आठ दिन बधाई बैठे है। श्री गोविन्द विट्ठलवर ने अष्टयाम सेवा, अष्ट सखा, अष्ट छाप के कवि तथा भौतिक में अष्ट सिद्धि एवं अष्टाङ्ग योग रूप सेवा स्थित करी। या कारण आपकी बधाई आठ दिन की गवै है। आपकी परिचारिका सखी हू आठ ही प्रधान है। गोकुलनाथजी महाराज की ब्रजयात्रा में बरसाने में अष्ट सखीन के मंदिर है।

इन आचार्य सरूप स्वामिनीजी के पाद पद्म मकरन्द बनवे सों तथा स्वामिनी श्री राधाजी के युगल चरणोपासना सों अष्ट सिद्धि नव निधि करतल गत रहत हैं। ताकौ वर्णन भगवदीय हू गाये है। पौढ़वे के पदन में तथा अन्य पदन में—

नन्दधाम में ब्रज में अष्ट सिद्धि नव निधि पायँन पै लोटती रहै। कृष्णदासजी की वाणी में वैष्णव सेवक कर्तव्य—

पोढ़े भाई मदन मोहन श्याम।
अनन्य होय चरणारविन्द भज सकल पूरण काम।
अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारे योग भोग विश्राम।
उमापति सुकदेव नारद रटत निसिदिन नाम।
सकल कला प्रवीन गिरिधर राधिका भुजवाम।
कहत कृष्णा सुबस बसिये श्रीनन्द गोकुल गाम।

इन भावनसों आठ दिन की ही झाँझन की वधाई बैठे है। देहली वन्दनमाल पिछवाई चितराम की। पलना झूलते श्रीनाथजी एक दिस नन्द। जसोदा एक दिस। गो० गोवर्धनलाल, दामोदर लाल खिलौनादि वस्त्र, केशरी धोती, उपरना, आभरण पन्ना-मोती के। श्रीमस्तक पर पाग कतरा (किलंगी) छोटो शृंगार। यह शृंगार आभरण ऐच्छिक है। पर धोती उपरना अवश्य पधरावै। बोऊ केशरी

पीरे धरैं। आज सों कारे, नीले, हुरे ऐसे रंग के वस्त्र नहीं धरें। आज सो अष्ट-सखीन के जन्मोत्सव जिनमें चार यूथाधिपा शेष चार अन्तरंगा, या प्रकार अष्ट-सखीन के दिन है। आज मंगला सोंही स्वामिनीजी की बधाई के पद गवैं। पद या प्रकार—

मंगला में—आज बधाई है बरसाने। शृंगार में—अभ्यंग के-पूर्ववत् छै। तथा और बधाई। शृंगार सन्मुख—जन्म लियो वृषभान गोप के। राजभोग आये पे—बरसाने ते दौरि नार इक। भोग सरवे पे—धन-धन प्रभावती जिन जाई। राज-भोग सन्मुख—बरसाने वृषभान गोप के। उत्थापन में भई वृषभान के सुत। भोग में—आज बधाई की विधि नीकी। आरती में—मेरे मन आनन्द भयौ। शयन में—काम केलि कनक बेलि।

सादा दिनन में जैसे शृंगार, जैसी बाललीला तथा बधाई राधाजी की गवै, यह कीर्तनियान के मुखिया को आधार है। नियत दिन पै लिखी ये बधाई ही होय है।

अष्टसखी

जितनी हू सखी प्रकटीं वे श्री स्वामिनीजी के श्री अंग सों प्रकट भई। उनमें आठ प्रधान भईं। ताको आशय पदाधार पर या प्रकार श्री हरिराय महाप्रभु तथा अनेक भक्तन ने वर्णन कियौ। आचार्यश्री ने नवविलास में तथा सांझी में हरिरामजी ने जो आठ सखी कही वे निम्न प्रकार हैं। तथा द्वारकेशजी महाराजे ने हू कह्यो है सखी नामावली पूर्व भाग में लिखि आये हैं। श्रीमद्भागवत में सखीन कौ देवतान की स्त्री देवी रूप सों वर्णन मिलै है—

तत्प्रियार्थं सम्भवन्तु सुरस्त्रियः। १०-२

गर्ग संहिता में कह्यो है—

'सहचर्यस्तथा गोप्यो राधा रोमोद्भवानृप।' तासों ही मान के पद में अष्टाङ्गसो मान बढ़यो सो वर्णन नन्ददासजी ने कह्यो है—

चढ़ि बिडरि गई री आली मान बेल तेरे सयानी।
हृदय मध्य आलबाल प्रकट भइ री भाली।
प्रतिपाल नीके करि छिन-छिन रूसिवौ मन भायो री लेले पानी।
कौन-कौन ठौंरन तें निकारो री सजनी अलक-तिलक नैनन-बैनन
सोहन सों लपटानी।
नन्ददास प्रभु प्यारी के वचन सुनि राधा मंद-मंद मुसकानी।

नौमि चन्द्रावलीं भद्रां पद्मां शैव्यां च श्यामलाम् ।
विशाखां ललितां राधामित्यष्टौ प्रेष्ठतां गताः । रासपञ्चाध्यायी २५०—

(१) ललिताजी (२) चन्द्रावलीजी (३) विशाखा (४) छविधामा (५) इन्दुलेखा (६) चन्द्रभागा (७) भामा (८) राई।

नव विलास—

ताकी यूथ मुख्य चन्द्रावली चन्द्रकलासी जाने (चन्द्रावली)
ताकी मुख्य सखी ललिताजू आनन्द महा रस भीनी (ललिता)
जिनमें मुख्य सखी विशाखाजू एन (विशाखा)
चन्द्रभागा मुख्य जूथावलि अपनी सखी (चन्द्रभागा)
ताकी मुख्य सखी संजावलि पिया मिलन के हेत (संजावली)
ताकी मुख्य सहचरी राई खेलन कौं बहु सुधराई (राई)
मुख्य कृष्णावती सहचरी लघु लाघव प्रवीन (कृष्णा)
उनकी मुख्य सखी भामा सारंगी खेलत जानी (भामा)

साँझी में—

कीरति कुलमण्डन गाइये श्री वृषभान नृपति की बाल हो ।
ललिता चम्पक-लता विशाखा श्याम भामा सोहै ।
चन्द्रभगा तुंगा चन्द्रावलि राधा माधव नेह ।

अतः अष्ट सहचरी, अष्ट सखीन के आठ दिन होय हैं । सेवा शृंगार, भोग राग, पद आदि सब होंय ।

अष्ट सखान के सरूप दिवस में सखा, तथा रात्रि में सहचरी सखी तथा शृंगार आठ दर्शन को या प्रकार प्रकाशित है । परन्तु अष्ट सखी रूप आठ दिन इनकी आड़ी सों मनोरथ होय हैं—

	अष्टछाप कवि	गोपी	गोप	शृंगार
१	परमानन्द	चन्द्रभागा	तोक	पगा
२	नन्ददास	चित्रलेखा	भोज	टोपी
३	गोविन्द स्वामी	भामा	श्रीदामा	टिपारा
४	कुम्भनदास	विशाखा	अर्जुन	कुल्हे
५	सूरदास	चम्पकलता	कृष्णा	फेंटा
६	चत्रभुज दास	सुशीला	सुबाहु	सेहरा
७	छीतस्वामी	पद्मा	सुबल	दुमाला
८	कृष्णदास	ललिता	ऋषभ	मुकुट

भाद्रपद शुक्ला २—वस्त्र सफेद, लाल लहरिया के पाग । पिछौड़ा पिछवाई खण्ड । छोटो शृंगार जड़ाऊ आभरण । श्रीमस्तक पै जमाव की चन्द्रिका । ठाड़े वस्त्र श्याम ऐच्छिक शृंगार ।

भाद्रपद शुक्ला ३—वस्त्र गुलेनार पिछौड़ा पगा पिछवाई खण्ड त्रवल चण्डीकी । आभरण सोना के । चन्द्रिका मोर पक्ष की । ऐच्छिक शृंगार ।

भाद्रपद शुक्ला ४—(गणेश चतुर्थी) पिछवाई[७] । चितराम की डंका खेलते भये । एक दिश बलराम एक दिश श्याम गोपाल खेलते समुदाय सहित । वस्त्र चौफूली चूंदड़ी के सूथन पटका धोरा के । श्री मस्तक पै बीच को दुमाला वाम भाग को कतरा मोरशिखा लोलकबन्दी धरै । अलक धरै । कर्ण फूल झूमकवारी आभरण सब हीरा के ठाड़े वस्त्र हरे । पद या प्रकार है—

मंगला में—जब ते राधा प्रकट भई । **शृंगार होते में**—वृषभान के हो आँगन मगल । **शृंगार सम्मुख**—भई वृषभान के सुता । **राजभोग में** राधाजू सोभा प्रकट भई । **उत्थापन में**—गोकुल ते गाजत-बाजत । राजभोग में—ढाढिन नन्दी सुरते आई । ढाढी नन्दी सुरते आयो । **आरती में**—काम केलि कनक वेली । **नयन में**—बधाई मादल की ।

विशेषता—

पूर्व में चटशाला गुरुकुल आश्रम पाठशाला आदिन में बालकन कूं पढ़ावते हुते अरु वे छोटे बालकन को आज के दिन शृंगार बालिकान के स्त्रियन के करि के सम्पूर्ण बालक गुरुजी के यहाँ गणपति पूजन कर अध्यापक के साथ समस्त बालकन के घर सामूहिक डंका बजावते जाते अरु वहाँ उन-उन बालकन के चौक में, द्वार में खेलते तब वे माता-पिता अभिभावक उन्हें गुड़धानी के लड्डुआ देते । डंकान को विविध प्रकार सों बजानो तथा नृत्यादि करावे तासों ही आज श्रीनाथजी में डंका खेलतेन की पिछवाई आवे । तथा शृंगार हू वैसो ही भाव को तथा पद हू गाते बजाते एक के घर सों दूसरे के घर जावे के भाव सों होय हैं । एक पद शिक्षाप्रद तथा भावपूर्ण यहाँ प्रस्तुत करे है—

यहाँ पूर्व में नाथद्वारा के समस्त पाठशाला आश्रम के बालक अपने गुरुन के संग गोवर्धन पूजा के चौक में आवते । तथा वहाँ डंकान सों खेलते । गुड़धानी महाराज श्री सो मिलती और वह शृंगार छोटे-छोटे बालकन के मोर मीडी तिमनिया बाजू चूड़ी पायजेब तोड़ा अनवट आदि पहरि धोती अँगरखी पै टोपी पाग

---

७ गोवर्धनजी वैद्यवारी ।

पहरि आवते। महंदी महावर आदि सों सुसज्जित होते। ता भावसों प्रभु के शृंगार उपर्युक्त होय है। डंका पास राखें है और बधाई या भाव सों होय है।

उत्थापन में ये पद गवैं—सारंग राग—

गोकुल ते गाजत-बाजत जुवतिन को यूथ लिये नन्दरानी फूली-फूली रावल में आई।
सुन-सुन चहु दिस तैं नारी दौरी देखन कौं सबै इकसार पाँय परसन को धाई।
पाछे वृषभान द्वार पौरी आये ठाड़े भये और बोली जो बड़ेरी सनमुख पठाई।
देखत नन्दरानी मन ही मन मुसकानी आदर दै मान गहे भवन माँझ लाई।
निकट जाय लली देखी सबहि नमन अवरेखी अब भई साँची बात सुख समूह ब्रज में।
यह सुन जनमोहन अंग-अंग आनन्द भयो गयो जाय ब्रषभानजू के लोटत पद रज में।

पूर्व एक गाँव से दूसरे गाँव में सारे गांव की ललना इकठ्ठी होइके एक दूसरे के यहाँ जाय झगा टोपी आदि देती हतीं। आजहू स्त्रीजन समूदाय रूप में गाती जाय हैं। महारानी जसोदाजी के संग युवतिन के समुदायसों गावत बजावत गोकुल सो रावल पधारीं। येहू रानी हती। महारानी जसोदा हू रानी। अतः प्रसन्न होती भईं रावल में पधारी। रावल की नारियाँ जब गाजे-बाजे की धुन सुनी तब दौरी इकट्ठी भई। और सब बड़ी-बूढ़ीन के पाँयन परसन लगी। ये सब समझौली इकसार हती। पाछे द्वार पै पौरी पै बाबा वृषभानजू हू खडे विनने अपने घर की बड़ी-बूढ़ीन को सामें लेन को पठाई। महारानीजी को सन्मान देख वे मन ही मन प्रसन्न भई और उन बड़ी बूढ़ीन के हाथ सौं हाथ लैके वृषभान भवन जहाँ कीरतीजी ने कन्या लली जाई तहां पधारी। लली ये आछे प्रकार सों देखी। ऐसी सुन्दर सुडौल सरस सुखदाता ये भई हम पहले सुनत हते सो साँभी भई तब बड़े-बूढ़ेन के वचन सुनि जन समुदाय बाबा वृषभान की पद रज में लोटन लगे। यहाँ उत्थापन में या पद की ही सार्थकता है।

यहाँ समस्त बालक गावत-बजावत अपने-अपने शालान सों आवत हैं, अरु जब ये गोवर्धन पूजा के चौक में इकट्ठे होय है, तब सब स्त्री पुरुष देखन को जाय है। बैठक सों तिलकायत अथवा नन्द राजकुमार श्री गोवर्धनधर बड़े देन को मुनीम अमात्यन को भेजे हैं। प्रसाद वगैरे दिवावत है। तब सब प्रसन्न होय है। ये ही मन मुसकानी फेर भोग के दर्शन सब करे है और पश्चात् तिलकायत के और श्री गोवर्धनधर के चरणन पै वे सब लोटे हैं अपनो जीवन धन्य माने है।

प्राचीन शिक्षा पद्धति यहु हुती। कोउ हमारे घर पै आवे ताके पाँयन छोटे-मोटे सब परैं। घर के अधिपति बड़न को सामेले वन पठावैं। यह आगन्तुक सर्व प्रथम जा कार्य हेतु आवे ता कार्य को सम्पन्न करैं। यह भारतीय शिक्षा को यह पद अनेक भावन सो यहाँ होय है।

प्रश्न—क्योंजी पुष्टि मार्ग में तो अन्य देवतान को स्थान नहीं। फेर यहाँ गणेश चौथ को वर्णन आपने कैसे बतायो ?

उत्तर—पुष्टि मार्ग ने काहू देवता कौं प्रधानता नाही दीनी तो कोई निन्दाहू न कीनी। तत्तत् देवता तत्तत् स्थान में हैं परन्तु सर्व देवन के देवाधिदेव श्री नन्द राजकुमार को ही माने। वल्लभ दिग्विजय में वर्णन है—जब आचार्य महाप्रभु वल्लभ अपनी ससुराल श्रीमधुमंगलजी के यहाँ पधारे तब ससुर पंचदेव की उपासना करत हते। इनकी पत्नी अक्काजी श्रीगोकुलनाथजी में विशेष आसक्त हतीं मधु-मंगल जी ने पंच सेवा ही प्रभु वल्लभ कौं दीनी। तब आप लैके पधारे। मार्ग में श्री गंगाजी में चार देवन को पधरावन लागे। महादेव, माता, गणेश सूर्य तब ये आग्या किये। हम अपने माङ्गलिक प्रस्तावादि में आपको पधरावेंगे। अभी तिरोहित रहें। अतः नन्द राजकुमार को शृंगार तथा सेवादि समस्त देवतान के देव मान सबन के भावना सों होय है।

भाद्रपद शुक्ला ५ चन्द्रावलजी को उत्सव (द्वितीय सरूपोत्सव) आज नौबत की बधाई बैठे। पिछवाई खण्ड वस्त्र पिछौड़ा तथा पगा, ये सब पीरे, नीले हासिया के। ठाड़े वस्त्र लाल श्रीमस्तक में सुनहरी टिपारा को साज चमक को कुण्डल वनमाला को शृंगार। आभरण हीरा-माणक के। ठाड़े वस्त्र लाल कुण्डल तथा त्रबल हाँस आज टोडर धरै। यह शृंगार पदाधार पर होय है। राजभोग में श्री चन्द्रावलीजी की बधाई गवै।

मंगला में—श्रीवृषभान रायजू के आँगन। **शृंगार सन्मुख**—प्रकटी नागर रूप निधान। **राजभोग में**—वृषभान के नव निधि आई। **उत्थापन में**—महरजू याचन तुम पै आयो। **भोग में**—हों ब्रज वासिन को मंगा। **आरती में**—चलो बधाई बाज वृषभान। **आरती सन्मुख**—ढाढिन नन्दी सुरतें आई। **शयन में**—प्रकट भई शोभा त्रिभुवन की वृषभान।

बारह महीना में ये शृंगार आज ही होय है। यामें टोडर धरें है तथा नीले हाँसिया को पगा तथा वस्त्र पद के आधार पर है। पद भोग समै गवै सो या प्रकार है—

हों ब्रज वासिन को मंगा।
वल्लभ राज गोप कुल मण्डन इन वे घर को जगा।
नन्दराय इक दियो है पिछोरा तामें कनक लगा।
श्री ब्रषभान दियो इक टोडर हीरा रतन नगा।
कीरति दई कुंवर की झगुली जसुमति सुत को झगा।
किशोरीदास कों दियो कृपा कर नील पीत को पगा।

ये किशोरीदासजी की ढाढी लाडलीजी के यहाँ होवे सों स्वामिनीजी को तथा वहाँ को विसद वर्णन कियो।

मंगा-माँगवे वारो ढाढी भाट तथा अन्य आप कहत है एक तो मंगता ब्रज वासिन के घर को दूसरे वल्लभ कुलको। वह गोपकुल मण्डन है तथा तथा इन के द्वार ही ये सेवा प्रकार प्रकटित भयो। तासों इनके घर को ही जगायकै, गायकै माँगत है। तब कौनने कहा दीनों, यहाँ ब्रषभानजू को विशेष कह्यो नन्दराय ने जरी के वस्त्र दिये अर्थात् शृंगार से पूर्व में वस्त्र होय है तब सब साधन जुटें। बाबानन्द ने सोना के तारन के वस्त्र दीने। ब्रषभान बाबा ने हीरा रतन सों जटित टोडर दीनो। ठीक ही कही है। हार शृंगार वस्त्रन के बाद ही होय है। वह मिल गयो। कीरति रानी ने झगुली तथा जसोदा मैया ने झगा (झवला) दीयो किशोरी दास को तो नीत-प्रीत को पगा दीयो सो धरत है।

चन्द्रावलीजी प्रधान यूथाधिपा होवे सों इनके सेवाक्रम माघ फागुन चैत में विशद वर्णन कीनो है। तासों यहाँ कछु विशेष नही लिख्यो है। चन्द्रवलीजी को सरूप श्री विट्ठलनाथजी गुसाईंजी को माने है।

प्रश्न—क्योंजी पगा काहे कौं कहत है ?

उत्तर—पाग के ऊपर गोल तिकोना छोर वारो पगा कहे है। पाग सोंही पगा गिनत है। छेलो छोर को बीच में गोल बनाय खोंसे है। ताय पगा कहे हैं।

प्रश्न—क्योंजी, झगा काहे को कहे ?

उत्तर—झगुला, झवला कों ही झगा कहे है। यामें घेर नीचे होय है तथा बालक के पहरिवे में ऊँचे-नीचे हाथ वगैरे न करबे पड़ें तासों खुले बाँहन को बन्द बाँहन को हू होय है तैसी ही झगुली होय है। झगुली में घेर कम होय है।

प्रश्न—क्योंजी, पिछौरा काहेते कहै ? शृंगारन मेंहू पिछौरान को बहुत तथा पदन मेंहू पिछौरान के वर्णन मिले है।

उत्तर—पिछौरी-पिछोरा पछेबड़ा ये सब एक ही है। वस्त्रन में गाँव वारे जाहि ओढ़े तथा लपेटें ताहि पिछौरी, पिछोरा कहत हैं। यामें आधुनिक ढंग सों (लुंगी) रूप यह है। बड़ो कपड़ा पाँयन तलक अरुकटि में गाँठ बाँधे तथा चलन-फिरन में तकलीफ न होय, जो पैरन तलक आवे।

प्रश्न—क्योंजी, आड़बन्द काहे को कहैं है ?

उत्तर—आड़बन्द फेंट बाँधिवे को कहे है जो घोंटुनलों ही रहे है। ये हू न्यार करिवे घास काटवे में तथा दौड़ धूप के समै लपेटत ही काम बन जाय।

एक मात्र आड़ बाँधनों, आड़े ढंग करवे कों आड़बन्द कहे हैं। पिछोरा को वर्णन या प्रकार मिलो है "पिछोरा खासा को कटि बाँधे" यह फेंटा के ढंग सौं कटि में बाँधे हैं।

भाद्रपद शुक्ला ६—गोस्वामि तिलक श्री विट्ठलेशरायजी को उत्सव तथा श्री ललिताजी को उत्सव देहली वन्दनमाल हाँडीवारी जलेवी वस्त्र पंचरंगी लहरिया पाग पिछौड़ा। मोती के आभरण। शृंगार मध्य को। कर्णफूल मोर चन्द्रिका सादा ठाड़े वस्त्र सफेद।

मंगला—वरसाने वर सरोवर प्रकट्यो अद्भुत कमल। **शृंगार होत में**—जन्म वधाई कुँवर लली की। **शृंगार सन्मुख**—श्री ब्रषभानरायजू के आँगन। **राज-भोग में**—वरसाने वृषभान गोप के। **उत्थापन**—नन्दराय को ढाढी। **भोग**—जदु-वंशी जिजमान। **आरती**—शोभा प्रकट भई त्रिभुवन। **शयन में**—बाललीला।

उत्सव नायक गोस्वामि तिलक श्री विट्ठलेशरायजी कौ संक्षिप्त परिचय तथा भावना—श्रीनाथजी के मेदपाट पधार कै विराजे बाद सर्वप्रथम श्रीदामोदरजी दाऊजी महाराज के यहाँ नाथद्वारा में वि० १७४३ आज के दिन जन्म भयो। आप अनुपम सुन्दर तथा प्रसन्न वदन सर्वाङ्गसौष्ठव युक्त आप सदा स्वामिनी भाव सों विराजते। तासों ही आज लहरिया पंच रंग के वस्त्र धरै हैं। आप ललिता भाव हू राखते। आपने विविध शृंगार भोग राग सों लाड़ लड़ाये। आपके चार पुत्र भये। सबसे बड़े गोवर्धनेशजी दूसरे गोविन्दजी तीसरे मुरलीधरजी चौथे बालकृष्णजी। आपके दो बेटीजी भईं। आपके सर्वप्रथम मेवाड़ में प्रकट हेतु कई गाँव, जमीन पिताश्री को एवं श्रीनाथजी को भेंट आई। आपने नाथद्वारा की वृद्धि में कई स्थान तथा नगर को विकास कियो।

प्रश्न—क्योंजी, पुरुष होय के स्त्री भाव कैसे भयो ? तथा स्त्री भाव सों क्यों रहे।

उत्तर—अपने प्यारे प्रियतम को रिझायवे के लिये स्त्री रूप बने। एक समै आप सों एक वैष्णवन ने पूछी जै आप स्त्री वेश में क्यों रहें ? तब उपर्युक्त बात कही और आज्ञा करी कै जीव जैसो उत्पन्न होय ऐसो तो रहत नाही। भावानुसार वो भी रंग बदलै, वेष बदलै, पहले बालक हुतो फेर युवा भयो फेर वृद्ध ऐसे ही पहले डाढ़ी मूँछ न हते अब डाढ़ी मूँछ हू भये। तो मधुर रस में मनुष्य अपनी भावना सों स्त्री हू बन सके है। तब वैष्णव चुप करि रह्यो। श्री बालकृष्णलालजी के जसोदा भाव सों स्तनन में दूध आय गयो। तो वह भी तो भाव ही हतो। यामें सन्देह न करनो। वा वैष्णव कों आपने श्री ललिताजी के साक्षात् दर्शन कराय

दीने। तब वो कृत्त-कृत्य भयो। इनके तनय श्री गोवर्धनेशजी बाबा ने हू दर्शन करिके अपने पद में ललिताजी को वर्णन कियो—

सारंग—

उसीर महल भवनन छायो सु बनिता बनि बैठे राधा ऐसी अंस भुजन मेली।

× × × × × × × ×

गोवर्धनेशहित विलास ग्रीषम रितु अति निवास ललितादिक निरख नैन पावत रसझेली।

या पद में ललितादिक में श्री आचार्य विट्ठलेरायजी माने है। आपको प्राकट्य हू ललिताजी के प्राकट्य दिवस में आज भयो है। तासों ललिताजी स्वरूप प्रकटे। वार्ता १६६ में यादवेन्द्रदास आगरे वारे दिवस रात भगवत लीलानुभव में रहते तासों सखी भाव सों भावित भये। ललिताजी की वधाई या प्रकार ब्रजपतिजी ने वर्णन कियो है।

आज सखी सारदा कन्या जाई।
भादों सुद षष्ठी है शुभ दिन शुभ नक्षत्र वर आई।
ब्रजपति की स्वामिनि प्रकटी है ललिता नाम धराई।

आज के पद उत्सव नायक श्री विट्ठलेशरायजी के वर्णन में या प्रकार सिद्ध होय है—

मंगला में—

बरसाने बर सरोवर प्रकट्यो अद्भुत कमल। राग धनाश्री
वृषभान किरन प्रकास पोष्यो रहत प्रफुल्लित सदाही सरस सुन्दर अमल।
सखी चहुंदिस केशर दल करणिका आकार राजत राधिका जस धवल।
सूरदास मदन मोहन पिय नव मकरंद हित सेवित सदा अति नलिन अलि॥

पद को भाव—बृहत् सानु बरसानो श्रेष्ठ बड़े-बड़े मेवाड़ के भूधरन में सुन्दर श्रेष्ठ सरोवर में नाथद्वारा सुन्दर पुष्टि रस सागर गोवर्धनधरण के धाम में अद्भुत कमल सुन्दर कोमल वपु श्री विट्ठलेशराय प्रकटे। वृषभान किरन श्रीनाथजी की किरण सों बड़ों भयो और मस्त प्रसन्न बदन प्रफुल्लित निर्मल स्वच्छ आप सरस कान्ता भावयुत रहे। आप मुख्य सहचरी भाव ललिता होवे सों चहुदिस सखी रूप गोस्वामि बालकन सों शोभित करणिकार रूप राधिका श्रीवल्लभ महाप्रभु के यश कों शुभ प्रकाश करिवे वारे अर्थात् कान्ता भावयुक्त ऐसो सरूप सों मदनमोहन प्रभु जो नव मकरंद रूप है आप तिन में भ्रमर रूप रसदान लेय हैं।

दूसरो पद शयन में—आपके भाव-युत—

प्रकट भई शोभा त्रिभुवन सारंग की वृषभान गोप के आई।
अद्भुत रूपदेखि व्रज वनिता रीझिरीझि कै लेत बलाई।
नहि कमला नहि सचि, रति, रम्भा उपमा उर न समाई।
जाते प्रकट भये व्रज भूषण, धन्य पिता धन माई।
जुग-जुगराज करो दोऊ जन इत तुम उत नन्दराई।
उनके मदन मोहन इत राधा सूरदास बलिजाई।

भावार्थ—त्रिभुवन की सुन्दरता शोभा वृहत्सानु के गोप मेवाड में लायवेचारे दामोदरजी गोप के यह शोभा प्रकट भई। याहि देखिदेखि समस्त व्रज बनिता नगर निवासी रीझि-रीझि के बलैया लेत है। इनकी सुन्दरता सेवा धन वैभव में कमला, सची, रति, रम्भा कोऊ तुलना में नहीं आय सके, जिनकी कृपासों प्रकटे व्रज भूषण श्रीनाथजी जों मेदपाट पधराय लाये वे पिता तथा उनकी माँ धन्य है। अब ये युग युग राज करो। गोवर्धन धर श्रीनाथजीअरु तिलकायत उनके नन्द कुमार गोवर्धनधर अरु इत स्वामिनी सरूप विट्ठलेशराय ऐसे युगल सरूप पर सूरदास बलि जाय है।

आपके बाद आपके जेष्ठ पुत्र श्रीगोवर्धनेशजी तिलकायत पदासीन भये। आपने नाथद्वारा में ही विक्रमाब्द १७७३ कार्तिक मास में लीला प्रवेश कियो।

प्रश्न—क्योंजी इनके उत्सव में बधाई क्यों न गवै इनकी तथा महाप्रभुजी आदिन की।

उत्तर—ये ललिताजी के सरूप होवे सो बधाई में बधाई नहीं गवै। और जो बधाई गवै वे इनके सरूप में स्थित है। ये ऊपर कहि आये हैं।

भाद्रपद शुक्ला ७—उत्सव के प्रथम दिन छटी को शृंगार वस्त्र खण्ड पाट पिछवाई लाल पाग पिछोडा लाल। ठाड़े वस्त्र पीरे। आभरण पन्ना मोती के चन्द्रिका सादा। छोटो शृंगार। बधाई के पद—

मंगला में—बरसाने ते दोरि नार इक नन्दभवन। शृंगार सन्मुख—सुनियत रावल होत बधाई। राजभोग सन्मुख—राधा रावल प्रकट भई। उत्थापन में—रावल आज कुलाहल माई। भोग में—जन्म लियो वृषभान गोपके। आरती में—उपरोक्त। शयन में—आठे भादों की उजियारी।

श्रीमद्भागवत में अष्ट सखीन को वर्णन या प्रकार है। ये रहस्य लीला की सखी होवे सो प्रत्यक्ष नहीं कही। परन्तु मुख्य आठ या प्रकार है। रास पञ्चा-

च्यायी के चौथे अध्याय के श्लोक ४ सें सात तक ये गोपी निहित हैं। "काचित् कराम्बुजंशौरे जगृहे अंजलिना मुदा" यामें हाथ पकरि के हाथ ग्रहण कीनो। समागत बन्धुको हाथ पकरि के लेय। तासों आप प्रधान चन्द्रावली मृदु सखी दक्षिण पार्श्व स्थित भई। (१) दूसरी "काचित् दधार तद् बाहुमंसे चन्दनरूषितम्" श्रीकृष्ण के बाहु कों करकमल सों अपनो ताप दूर कियो। यासों कन्धापे अपने कर को चन्दन युक्त धरत भई। यह सखी श्यामा भई (२) तीसरी "काचिदंजलिना गृह्णात् तन्वी ताम्बूल चर्वितम्" चन्द्रावली की अन्तरंगा शैव्या मानी (३) चौथी "एका तदांघ्रि कमलं संतप्तस्तनयोरधात्" यह श्रीपद्माजी भई। (४) पांचवी श्रीस्वामिनीजी राधाजी "एकाभ्रुकुटिमाबध्य प्रेम संरम्भ विह्वला" प्रेम में विह्वल होवे सो अन्तरंग सरूप श्रीस्वामिनीजी भयीं। कविनने कही है "शुद्ध प्रेम विलास वैभव निधि: कैशोर शोभा निधि:। वैदग्धिमंधुराङ्ग भंगिमनिधि र्लावण्य सम्पन्निधि:। श्रीराधा जयतान्महारसनिधि: कंदर्पलीला निधि:। सौन्दर्यैक सुधानिधिर्मधुपते सर्वस्वभूतो निधि: ॥ १ ॥ छटी। "इनन्तिवैकटाक्षक्षेपै: संदष्ट दशनच्छदा" ये श्रीललिताजी है "विन्यास भंगिरंगाभ्यां भ्रूविलासुमनोहरा सुकुमारा भवेद्यत्र ललितं तदुदीरितम् ॥ १ ॥ और सातवी 'अपरा निमिष दृग्भ्यां जुषाणा तन्मुखाम्बुजम्" यह विशाखाजी। यही परमानन्द मुखाम्बुजासक्त हैं (७) आगे आठवी सखी "आपीतमपिनातृप्यत् सन्तस्तच्चरणं यथा" ये तटस्था सन्तस्थ चरणन को वक्ष स्थल पै धरन वारी ब्रह्मादि देवन कोहू पराभव करवे वारी गोपी कान्ताधीना तटस्था भई।" काचिद् यान्तमालोक्य गोविन्द मनं हर्षिता। "कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति प्राहनान्य दुवाचह" तासों ये आठ सखी या प्रकार भागवत में अंतरनिहित हैं।[1]

श्री राधाष्टमी कौ उत्सव

भाद्रपद शुक्ला ८—राधाष्टमी देहली वन्दनमाल। अभ्यंग वस्त्र शृंगार सब जन्माष्टमीवत्। चौखटा दूसरो। जडाऊ पिछवाई खण्ड। साज सब जन्माष्टमी वत्। सामग्री आदि सब जन्माष्टमी वत्। आधो नेग गोपीवल्लभ भोग होय के स्वामिनीजी पधारें। तिलक होय। कमल पत्र होय स्वामिनीजी सहित भोग आवै। ग्वाल भीतर होय। राजभोग उत्सव भोग में ले आवै। वन्दनमाल वगैरे सलमा सितारे की साज जडाऊ पीरे बासन।

मंगला—आज बधाई वरसाने। अभ्यंग—वरस गांठ वृषभानललीकी। तथा शृंगार होत में जन्म लियो वृषभान गोपके। वरसाने ते दौरि नार इक। रावल

१ रासपञ्चाध्यायी लक्ष्मण दत्त चतुर्वेदी सांगवेद विद्यालय मथुरा पृष्ठ २४६।

राधा प्रकट भई। शृंगार सम्मुख—आठें भादों की उजियारी। राजभोग आयेपैं तिलक होय भीतर रावल राधा प्रकट भई। आज वृषभान के धर फूल। राजभोग आये पै चार बधाई गवैं। राजभोग सन्मुख—आज वृषभान के आनन्द। उत्थापन में—रावल की बधाई। भोग आरती सामिल होय। नवनीतप्रियसों ढाढी ढाढन बनि के आवै। वे तान पूरा सों गावैं। सब कीर्तनिया झेलें। ढाढिन नाचें, मणि कोठा में। आरती उतरे तब ये पद गावें—ढाढी गावे—जदुवंशी जिजमान—श्रीवृषभान रायजू के आंगन। शयन में—काम केलि कनक वेलि रंग रेल। मान—आज बनी कुञ्जेश्वरि रानी। पौढवे में—रायगिरधरन संगराधिका रानीं।

विशेषता—श्रीव्रषभानुजा राधाजी को चरित्र विस्तार–सक्षेप सों सब पुराणनने कीन है। तामें गर्ग संहिता ब्रह्मवैवर्त पुराण, पद्मपुराण, स्कन्दपुराण में विशेष वर्णन कीनो। परन्तु श्रीमद्भागवत में इन्हें छिपाय के संकेत सो कहीं। एक गोपी कही। एक ही स्थान पै विद्वान् लोग रधिकाजी को नाम स्थित माने है।

"नमो नमस्तेस्त्वृषभाय सात्वतां" न राधसे ब्रह्मणि रंस्यतें नम:।
अत: याकी सुबोधिनी मैं श्री आचार्य जी आज्ञाकरै हैं—

कचित् भगवत् सिद्धिरस्ति 'राधस्' शब्दवाच्यानताद्दशी सिद्धि: क्वचिदन्य त्रनवा। तासों यह सिद्ध होय है कि राधाजी अनेक सिद्धि दात्री के रूप में अनेक नामन सों श्रीमद्भागवत के महामुनि शुकदेवजी ने कह्यौ है।

'महाभाव स्वरूपा श्रीराधा' नामक ग्रंथ में भागवत द्वारा अनेक नाम राधा के निहित किये हैं। तासों ही पुष्टि मार्ग में स्वामिनी कही है। राधाष्टमी को उत्सव श्री आचार्य वल्लभ ने नहीं मनायो। ये पाछे श्रीगुसाईंजी विट्ठलनाथजी ने मनायो। ताको संकेत हरिरायजी ने उत्सव माला पद में "रहौमोहि-श्रीवल्लभ गृह में भावैं। आगे कहे है।

"रावल में राधा मंगल कीरति जस विविध बधाई गावे।" आचार्य श्री गुसाईंजी ने तथा हरिरायजी ने अनेक स्तोत्र ग्रंथ बनायें जो पूर्व में आपके त्रैमासिक सेवा उपक्रम में लिख आये हैं। कतिपय पुराणन के आधारसों राधाजी के प्राकट्य को सार या प्रकार है :—

श्री हरि के अंश सों व्रषभानु गोप भये और पितरन की मानसी कन्या कलावती (कीर्तिदा) प्रकटी। इन दोनों के विवाह भये इनने घोर तपश्चर्या कीनी। तव विष्णु प्रसन्न भये और इन सो वर मांगवे की कही। इनने आप जैसे सुत की याचना करी। प्रभु विष्णु विचार मग्न हैकें तथास्तु कहि अन्तर्धान भये और आपने अपने ही अंगभूत सर्वोत्तम सुन्दर अर्धाङ्गिनी श्रीराधिका इनकें यहाँ श्रीकृष्ण सो एक वर्ष पूर्व प्रकट भईं। अति सुन्दर होयवे सो समस्त लोकन

में चर्चा फैली। समस्त देव दर्शनार्थ आये। श्रीराधिका जी एक वर्ष बड़ी तो भई परन्तु नेत्र नहीं खोले। तासों बृषभानुजी मनसुखा पै दिखाय लौट दिये जब नारदजी आये तो बृषभानुजी सों सत्य बात बूझी तब अन्त:पुर में पलना में पौढ़ी स्वामिनी श्रीराधिकाजी के दर्शन करत ही मुग्ध है गये। परन्तु नेत्र न खोलवे पै आपने राधा सहस्रनाम, राधाष्टक, राधाउपनिषदादि निर्माण किये परन्तु नेत्र न खुलवे पै हतास होय लौट गये। जब प्रभु नन्द राज कुमार गोकुल में प्रकटे अरु मादल बजी तब श्रीस्वामिनीजी ने नेत्र खोले। ताही समय नारदजी आनन्दित होय नाचन लगे। ताकों बर्णन भगवदीय चत्रभुजदासजी या बधाई में करत है—

रावल के कहैं गोप, आज ब्रज दूनी ओप,

कान दे दे सुनो बाजे गोकुल मदिलरा।

नन्दजू के पूत भयो वृषभानजू सो जाय कह्यौ

गोपी ग्वाल लै लै धाये दधि दूध गगरा।

आगे गोपवृन्द पाछे त्रिय मनोहर

चल न सकत पावत नहिं डगरा।

चत्रभुजदास गिरधारी जू को जनम सुनि

फूल्यौ फूल्यौ फिरै नारद जैसे भमरा।

आज डोलतिवारी में बड़ी बिछायत होय। बड़ो बँगला ध्रुवबारी के नीचे आवै। सजावट होय तथा विविध सेवा क्रम में भीतर तैयारी होय। आचार्य श्री वल्लभ महाप्रभु को ही श्री स्वामिनी मानि सेवा में उत्सव मानिवे की प्रथा चालू कीनी।

स्वामिनी जी के अंग सौष्ठव के अनेकानेक पद हैं। आज शयन के मान एवं पौढ़वे में अतीव सुन्दर दो पद यहाँ उद्धृत करि उत्सव की विशेष बिछायत बंगला की सार्थकता बतावैं हैं—

मान में—

आज बनी कुञ्जेश्वरि रानी।

चारु चिकुर शिर शिथिल सगवगी विविध कुसुम वेणी वानी।

नैन सुरंग गिरधर रसमाते कमल खञ्जन शोभा बिलखानी।

गोविन्द प्रभु कों तू न्याय बस करति धनधन विधाता

आपुनी सकल चतुराई तोमें आनी॥

पौढवे में—

राय गिरधरन संग राधिका रानी।

निविड नव कुञ्ज राधारची नवरंग पियसंग बोलत पिक वानी।

नीलसारी कंचुकी लाल गौर तन माँग मोतिन खचित सुठानी।

अर्ध घूंघट ललन बदन निरखति रसिक दम्पति परस्पर प्रेम हृदय सानी।

लाल तन सुख पागढरति भ्रू पर रही फुल्ले चम्पक भरी सेहरो सुबानी।

पाणिसोपाणि गहि उरसौं लावत ललन गोविन्द प्रभु ब्रज नृपति सुखदानी।

झाँझें बन्द करैं। आछी बार देखिकै नौबत की बधाई हू बन्द करैं।

भाद्रपद शुक्ला ६—शृंगार काल बारोही रहै। दो जोड़ को शृंगार चौखटा नहीं। जड़ाऊ तकिया गादी दूसरे। सादा सोना को साज। आज सों बिजयादशमी के पूर्व दिन तलक बंगली चाँदी की ध्रुव बारी के नीचे नित्य आवे तथा शयन में पौढ़िवे में सजावट होय। शृंगार सबरो काल बारोही रहै। यह बंगली विजयादशमी के पूर्व दिन ताईं आवे फिरते साज सज्जा आवै। आज मंगला सों शृंगार होय जब ताईं नवनागरी गवै—

श्री नवनागरी प्यारी तू वृन्दावन। शृंगार सन्मुख—प्रकटी नागरि रूप निधान।

राजभोग आये पर—ये देखि सुता बृषभान की। राजभोग सन्मुख—तू देख सुता वृषभान की। भोग में—मेरे मन आनन्द भयो। आरती—काम केलि कनकबेली। शयन में—आज वृषभान के आनन्द।

प्रश्न—क्यों जी, स्वामिनीजी के उत्सव के शृंगार दो ही क्यों राखे। जबकि जन्माष्टमी के चार भये।

उत्तर—स्वामिनी जी अर्द्धाङ्गिनी होवे सों चार के आधे दो होय। तथा सारे नेग हू भोग के उत्सवन को आधे होय है।

भाद्रपद शुक्ला १०—बाल लीला श्री स्वामिनीजी एवं प्रभु की जन्माष्टमी से आज तक बाल लीला पद पूर्ण। बस्त्र पिछवाई खण्ड लाल। रुपहरी किनारी के पाग चिक्रीदा चन्द्रिका सादा सादा कर्ण फूल को शृंगार पन्नामोती के आभरण। ठाड़े बस्त्र पीरे। साज। सब नित्यवत् शृंगार मध्य को छोटो।

मंगला—अहो मेरी प्राण हू तें प्यारी। शृंगार—कुँवर राधिका सकल सौभाग्य। राजभोग आये पे—बाल लीला। खेलन गई नन्द बाबा के नन्द गोद कर लीनी। माला बोले—कहधौं कुँवरि कहाधौं खेली। राजभोग सन्मुख—राधा तेरो बदन सँमार्यो। भोग में—सखी तेरे तन की सुन्दरता। आरती में—राधे तेरे नैन कैधों बटपारे। शयन—आज बनी बृषभान कुँवरि। मान में—धन-धन लाडली के चरण। पौढबे—चापत चरण मोहनलाल।

दानघाटी कौ दान :—

भाद्र पद शुक्ला ११—दान एकादशी। जल झूलनी परिवर्तनी एकादशी देहली वन्दनमाल। हाँडी[1]। पिछवाई चितराम की दान की गोवर्धन में घाटी से उतर ते दूध दही लूटते। मुकुट जडाऊ। काछनी लाल-नीली पीताम्बर लाल। ठाढ़े वस्त्र सफेद। आभरण उत्सव के जड़ाऊ। बनमाला को शृंगार होय। संध्या आरती में ठाढ़ों बेत धरै। बहुरि जाय गोपालपुर दान मनोरथ कीन। (सम्प्रदाय कल्पद्रुम) यदि दान वामनजी भेलो होय तो वस्त्रन में हेर-फेर इतनो ही होय लाल केसरी काछनी पीताम्बर के स्थान पटका केसरी पीताम्बर के स्थान पै। शेष सब उपर्युक्त। पिछवाई खण्ड दूसरे भोग में जन्माष्टमी वारी आवे।

पद या प्रकार—मंगला। महात्म्य—जयति रुक्मिणी नाथ पद्मावती। जगायवे में—उठो गोपाल, सब बोले ग्वाल। भोर भये बलि जाऊँ। मंगला सम्मुख—हमारो दान देहोरी गुजरी। शृंगार होते में—श्री गोवर्धन के शिखरतें। शृंगार सम्मुख—छेली तुक। राजभोग आवे पै—दानघाटी छड़ि आई काँवर। सबल गिरधारी चढ़ि टेरत। काँवर द्वय भरि छाक आई आज दधि मीठो मदन-गोपाल। माला बोले पै—बांट-बाँटि सब दिन कों देत। लटकत लाल रहे राधा। कहिधौ मोल या दधि को। राजभोग सन्मुख—चलन न देत हौ यहि बटिया। भोग के समय—दान माँगत ही आन। तुम चले जाउ ढोटा अपने मग। बीन बजै तब—अजहूँ गई वेर आई। आरती में—कापर ढोटा नैन नचावत। शयन में—घेरौ-घेरौ रे मैया। मान में—नवल निकुञ्ज नवल मृगनैनी। पौढबे में—पौढे माई मदनमोहन श्याम।

यदि वामनजी भेले होय तो—

मंगला—गोविन्द तिहारो सरूप। शृंगार में—दान के लैया माहात्म्य के। शृंगार सन्मूख—कहिधौं मोल या दधि को। राजभोग में—प्रकटे श्री वामन अवतार। भोग आये पै—समर्थन बलि राजा को। राजा, इक पण्डित पीर तिहारी। दूसरे में—बलि के द्वारे ठाडे वामन। उत्थापन में—दान माँगत ही आन में। भोग में—कहौ जू दान लेहौ कैसे। आरती में—अहो विधना। शयन में—कापर ढोटा नैन नचावत।[2]

---

१. सं० १९२५ तिलकायत श्रीगिरधारीजी महाराज के बहूजी भागीरथी जी ने बनवाई।

२. देखो—पद्मापयोधर—गीत गोविन्द।

दान अरु दान की विशेषता :—

आज सों बीस दिन ताईं दान की सामग्री अरोगें तथा पदगान शृंगार में होय।

प्रश्न—क्यों जी, दान कहा, अरू बीस दिना ही काहे कों ? फिर आसोज में ही क्यों ?

उत्तर—वामनजी को प्रादुर्भाव भाद्रपद शुक्ला १२ कों भयो। यह विप्र रूप धरि बौने वामन प्रकटे अरु दान लियौ। तासो प्रथम दिन एकादशी सों लेकै आश्विन कृष्णा ३० तक बीस दिन दान सेवा चालू कीनी। पांच-पांच दिना चार यूथाधिया एवं चतुर्विध फल प्राप्त्यार्थ बीस दिन राखे। या एकादशी को नाम परिवर्तनी एकादशी कही है। दान देवे सों दान अरोगावन सों देह परिवर्तन होय है। अथवा आज प्रभु ने करवट बदली। तासों दान देवे को दिन प्रारम्भ कियौ। यह दान शास्त्रन में तीन प्रकार को वर्णन कियो हैं—

सात्विक, राजस् तामस। इनके फलन के बहुत प्रकार बताये हैं। यहाँ रसरूप त्रिगुणात्मक दान नन्द राजकुमार ने गोपीन सों लीनों है। ताको ही पुष्टि मार्ग ने स्वीकार कीनों है।

हठ पूर्वक, झगड़ा करके, अनिच्छापूर्वक दबाय के दान लेनो तामसदान है।

राग अडानो—

अहो कान धीरोरे धीरौ जाय कहूं जसुदासों।
हौं दधि बेचन जात गोकुल तें निपट निकट आये मोहिं घेरो।
कापर इतनी करत ठकुराई कापर होत हैं तातों सीरो।
धोंधी के प्रभु हौं नीके जानत आखिर जात अहीरो।

या में तामस युक्त तमतमाते वचन हैं ये पद तामस भक्त को दान है।

राजस—वाद विवाद तथा श्रीमन्ततासों दान लेनो राजस दान है।

रागनट—कहौजु दान लैहो कैसें।
दूध दही को दान कबहु न सुन्यौ कान, मानो लोग लादी काहू जैसें।
आपहु हुते लेत, कैधो काहू लिखि दीनौ समझावहु धों तैसे।
गोविन्द प्रभु तुमें न डर काहू को व्रज राज कुँवर ताते गाल मारत घर बैसे।

सात्विक—दीनता युक्त स्नेह पूर्वक विनम्रता सों देनो सात्विक दान है।

अहोविधना लोपै अँचरापसार माँगो यही जनम-जनम दीजे याही व्रज बसिबो।
अहीर की जात समीप नन्द घर घरी-घरी श्याम संग हेरि-हेरि हँसिबो।
दधि के दान मिस व्रज की वीथिन में झक झोरन अंग-अंग को परसिबो।
छीत स्वामि गिरधरन श्रीविट्ठल सरद रैन रस रास को बिलसिबो।

या प्रकार नन्द कुमारिकान सों सात्विक दान। यज्ञ पत्नीनन सों राजसदान। वलि राजा के दर्बार भावसो उपरोक्त पद सों तामसदान जरासंध के यहाँ ब्राह्मण बनि के गये।

व्रज भक्तन सों दही दूध के सात्विक दान की भावना या प्रकार हैं—

प्रथम—प्रश्नोत्तर हरिरायजी की वाणी में—

कान्हरा तू कोहे हो, व्रज राजकुमार, कहा कहत हो।
दान मांगत काहे को तेरे गोरस कों।

दान सामग्री तथा दानन के प्रकार :—

कबतें लगत जब तें तू देय यामें कहा सुख तेरे दरसकौ।
यह न भली-भली सोइ कहो परसन कर करहु रस बसकौ।
रसिक प्रीतम पिय वचन चातुरी आतुरी करि लीनी भावत अंग परसकौ।

चार-चार गोपीन के चार स्थान में पांच-पांच दिन लीला यों २० दिन भये। श्रीगोकुलनाथजी की व्रजयात्रा में दान के स्थान है—करहला, गोवर्धन, गहवर वन, सांकरीखोर, कदम्वखण्डी। व्रज में दानघाटी में, पनघट पै यमुना घाट पै।

पदन में इन स्थानन के वर्णन या प्रकार है। ये अष्ट सिद्धि दाता होवे सो आठ स्थान हैं।

१. वीथिन— ठाडे लाल सखन मध छवि सों दान केलि व्रज वीथिन ठानी।
श्री विट्ठल

२. गहवरवन— मै तोसों केती बार कह्यो।
इतउत सघन कुञ्ज गहबर में तकि मारग रोक रह्यो।
परमानन्द दास

३. वृन्दावन— सूधे दान काहे नहिं लेत।
वृन्दावन वीथिन-वीथिन फिरत ग्वाल समेत। सूरदास

४. गोवर्धन— यह को है री जो याहि दान देहैं गोवर्धन के खेड़े। चत्रभुजदास

५. पनघट— गिरधर रोकत घनघट घाट। नन्ददास

६. यमुनाघाट— यमुना घाट रोकी हो रसिक चन्द्रावल। गोविन्द प्रभ

७. गोवर्धन घाटी—सैन छाँड दधि वेचन आई कोहे सुन्दरी कौन विधि ठाटी।
अहो नागरी गोवर्धन की विन दिये क्यों उतरी घाटी।
कृष्णदास

८. अटपटो दान—मथनिया आन उतारि धरी।
दान अटपटो मांगत ठोटा हूहू कर जोरि खड़ी।
जब नन्दलाल चीर गहि झटक्यो मन में बहुत डरी।
कुम्भनदास प्रभु दधि वेचन की विरियाँ जात टरी॥ कुम्भन

अहो विधना तोपै यह अंचरा पसार माँगों
जनम-जनम दीजे याही व्रज वसिबो।
छीतस्वामि गिरधरन श्री विट्ठल सरद
रैन रस दास को विलसिवो। (छीतस्वामी)

या प्रकार सरस रसदान के स्थान वर्णन के साथ सामग्री वर्णन एवं अंग संग वर्णन या प्रकार व्यास के पदन में जस भगवान को वर्णन है।

भोजन गिरधरलाल को मैं तो यह जानी।—
परसत प्यारी रूप की पूतरीन रुचिमानी।
मृदु बोलन मीठी लगे भ्रौंह न कटुकाई।
षट् रस वारों कोटि इगंबल ताई।
चाह छिन छिन चौगुनी जेंवत रुचि ज्योंही।
जन भगवान युगल जस कहे मन-मन त्योंही।

प्रभु ने व्रज भक्तन के सर्वाङ्ग को दान लैके रस परिपाक करि अंगीकृत कीनै। उपर्युक्त पद में भोजन रुचिसों कियो जात है, वही स्मरण करत ही रुचि बढ़े। प्रथम मिलन नेत्रन सो होत है वही रुचि नेत्रन ने मानी ताके आगे संभाषण बोलनी वही मीठी वस्तु सामग्री अरु बिच-बिच कटु तिल लवणादि रस सो आपके भ्रूभंगन में मानमर्शितादि रस वृद्धि है। षट् रसदृगंचल में होत ही रुचि क्षण-क्षण में चौगुनी चाह बढ़े। तासों दानहू में या प्रकार रसलीला की सामग्री है।

दूध के चार प्रकार—केशरी मेवा मिश्रित सफेद सह मलाई वासोंदी रबड़ी आदि (स्वामिनी जी के दान तथा भाव सों)।

दही—खट्टो, मीठो, सद्य, सिखरन (चन्द्रावलि जी के स्वरूप तथा दान भाव सों) छाछ—खट्टी, मीठी, घुंआरी, छमकी (जमुना जी के सरूप तथा दान भाव सों) माखन—(व्रज भक्तन कुमारिकान के भाव सों) पेड़ा—बरफी, गूँजा, मेवाड़ी गुलाब जामुन, जलेबी, मगद, मोहन थाल, वगेरे विविध व्यंजन।

सुधाविर्भाव सुधांशु सर्वाङ्ग ताको अंग संग में मथन करनो वही रसनिष्पत्ति दूध जमानो भयो। जामें कछु मान की खटास कछु क्लान्त श्रान्त भाव सों वोई विकृत दही।

दही—तामें सर्वाङ्ग मर्दन करनो ही मथन करनो तामें माखन आनन्द सरूप प्रकट करनो अरु विविध प्रकार के व्यंजन विविध आसन क्रीड़ादि। माखन—ओष्ठ चुम्बन। दही—आलिङ्गनादि मर्दन मथन। दूध—स्नेहार्द्र सुधाविर्भाव सर्वाङ्ग। छाछ—रस रूपा रूपमाधुरी दर्शन सुरतान्त

इन स्थानन के प्रधान दान वर्णन सोंही प्रभु गोवर्धनधरण मुकुट धरें—

भाद्र पद शु० ११	दानएकादशी	दानघाटी	(१)
भाद्र पद शु० १५	सांझी दिवस आरम्भ	करहला	(२)
आश्विन कृष्णा २	महादान	गहवरवन	(३)
आश्विन कृष्णा ५	महादान	साँकरी खोर	(४)
आश्विन कृष्णा ९	महादान	कदम्ब खण्डी	(५)
आश्विन कृष्णा ११	महादान	गोवर्धन	(६)
आश्विन कृष्णा ३०	कोट आरती महादान	पनघट	(७)

भगवदीयन के भाव के चुम्बन आलिङ्गनादि के भावात्मक पद या प्रकार है।

परमानन्द दास—

काहे को सिथिल किये मेरे पट।
नन्द गोप सुत छाँड अटपटी बार-बार वन में रोकट वट।
कर लम्पट परसो न कठिन कुच अधिक व्यथा तन रहे निधरक थट।
एसे विरुद्ध है खेल तुमारो पीर न जानत गहत पराई लट।
परमानन्द प्रीति अन्तर की सुन्दर श्याम विनोदी सुरत नट।

सूरदास—

आज वृन्दावन में दधि लूटी।
कहा मेरो हार कहाँ नक वेसर कहा मोतिन सर टूटी।
सूरदास प्रभु के जु मिलेते सर्वस दे ग्वालन छूटी।

हरिराय—

रसिक सिरोमनि नन्द लाडिले दान लियो अरु सुरत निवारी।

माखन रूपी रस में—सूरदास—

मोहन तुम कैसे दधिदानी।
सूरदास प्रभु माखन के मिस प्रेम प्रीतिचित ठानी।

परमानन्द दास—

ग्वालन मीठी तेरी छाछ।
रहसि कान्ह कर कुच गहि परसत तू जो परत है पाछ।
परमानन्द गोपाल आलिङ्गी गोप वधू हरिनाछ।

श्रीमद् भागवत में—दान-लीला को संकेत १०-२३-४ में है।

श्री हरिराय महाप्रभू को बडे दान—तुम नन्द महर के लाल राणीजसुमति प्रान आधार। मोहन जानदे गोवर्धन की सिखरते। मोहन दीनी टेर—अन्तरंग सो

कहत है ग्वालन राखो घेर। या दान के पैंतीस तुक हैं। वही पैंतीस श्लोक सर्वोतमजी के सानुकूल है। अष्टोतर शत नाम युत दान में वर्णन मिलै है।

कछु छटा—गोवर्धन की शिखर सों मोहन दीनी टेर। वारे देवे कौन हुते कौन को देत हैं?

"प्राकृत धर्मानाश्रयमप्राकृत निखिल धर्म रूपमिति,
निगम प्रतिपाद्यं यत्तच्छुद्धं साकृतिस्तौमि।"

वह श्री गोवर्धनधर अन्तरंग भक्त सखी रूपा श्री वल्लभ महाप्रभु तिन्हें झार खण्ड में आज्ञा दीनी। यह अन्तरंग वल्लभकी देवी जीव वारी ग्वालनीऊ के नाम की अनेक तुकन में सार्थकता है।

निम्नलिखित पद में मधुरा भक्ति की झलक या प्रकार है :—

अज्ञात यौवना—चली जात गोरस मदमाती मानो सुनत नहि कान।

यौवना—भरे जात श्रीफल कंचन कमल बसन सों ढांकि।

अनुकूल नायक—एक भुजा कंकण गहे एक भुजा गहे चीर।
दान लेन ठाडे भये गहवर कुञ्ज कुटीर॥

मानी नायक—बहुत दिना तुम बचि गई दान हमारो मारि।
आज हौ लेहौ आपनो, दिन कौ दान संभारि॥

दक्षिण नायक—रस निधान नय नागरी, निरखि वचन मृग बोल।
क्यों मुरि ठाड़ी होत है घूँघट पट मुख खोल॥

शठ नायक—सुन्दरता सब अंग की, वसनन राखी गोय।
निरखि-निरखि छवि लाडली मन आकर्षित होय॥

धृष्ट नायक—नैकुं दूर ठाडे रहो कछू ओर सकुचाय।
कहा कियो मन भावते, अंचल पीक लगाय॥

प्रथमानुराग—उर आनन्द अतिही बढयो सो सफल भये मिलि नैन।

आनन्द संमोहिता—ऐसे में कोइ आइ हैं देखे अद्भुत रीत।
आज सबे नन्द लाडिले सो प्रकट होयगी प्रीत॥

वचन प्रगल्भा—चंचल नैन निहारिये अति चंचल मृदु वैन।
कर नहि चंचल कीजिये तजि अंचल चले नैन॥

प्रौढा—यह मारग हम नित गई कबहु सुन्यो नहि कानि।
आज नई यह होत है, मांगत गोरस दान॥

भीरूवती—संग की सखी सब फिरि गई सुनि है कीरति माय।
प्रीति हिये में राखिये प्रकट किये रस जाय॥

मध्या-मुग्धा—सूधे वचन न मांगिये, लालन गोरस दान।
भौंहन भेद जनाय के कहत आन की आन॥

अष्टसात्विक-भाव—मोहन कंचन कलशिका लीनी सीस उतार।
झमकन बदन निहार कै, ग्वालन अति सुकुमार॥

रस-निष्पत्ति—यही हमारो राज है ब्रज मण्डल सब ठौर।
तुम हमरी हो कुमुदिनी हम कमल बदन के भोंर॥

रस-परिपाक—अंस भुजा धरि लै चले प्यारी चरन निहोर।
निरखत लीला रसिकजु जल दान मान को ठौर।

सर्वोत्तम दान मान यह बड़ी दान श्रीजी के सन्मुख पांच बार गाई जाय है। अरु महादान जब होय है तब तो गाई ही जाय है। पुष्टि मार्गीय वैष्णवन कूं ये दान प्राय: कंठस्थ होय है।

प्रश्न—आज प्रभु जो लकुट (ठाढ़ो वेत्र) धरे ताको कहा आशय? तथा मुकुट काछनी ही दान में कायकूं धरें?

उत्तर—मुकुट उद्बोधक है। भक्ति को उद्बोधन करावे है। कांछनी घेर आच्छादन सों सबनकों एकत्र करत है।

(देखो—वार्ता गुसाईंजी की २०० वल्लभदास बलदेवदास की)

ठाढ़ेवेत्र को आशय यह है—ये यष्टि कही कई है। यष्टि को सरूप ब्रह्मा को है "यष्टिका कमलासन:" याते ब्रह्मा की उत्पति स्थान है यहां वेत्र दान लेबे के हेतु धरे है। ताके अनेक प्रकार है। सात्विक राजस तामस निर्गुण। प्रभु को सुधा संबंध है। भक्तन को यष्टि सो घेरनो ताके अनुभवार्थ यष्टि धरें। १—दान (सात्विक), २—दिवाली (तामस), ३—अन्नकूट (तामस), ४—गोपाष्टमी (तामस), ५—कुञ्ज (निर्गुण), ६—होली (राजस)। अरु अनेक लीलान में दानलीला या सम्प्रदाय में उत्कृष्ट होय है। याकी सर्वत्र मान्यता है।

वि० १७१४ में आज के दिन ही विजयी श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को प्राकट्य उत्सव है। आप पीताम्बरजी के लालजी सूरत बारेन में माने हैं। येही नवलक्ष ग्रन्थ कर्ता कहे गये। ये आचार्य महाप्रभु के अवतारांश तामस अवतार माने जायें हैं—

पुरुषोत्तम प्रकटे बहुरि, पीताम्बर गृह छन्द।
भादव सुद ग्यारस सुधी वेद[४] ब्रह्म[१] मुनि[७] चन्द[१]॥

आप महाप्रभुजी के त्रिविध धर्म में आवें हैं। वह या प्रकार है—

वल्लभराज सरूप भू गोकुलेश नृपमान।
प्रकट भये भूतलविषे विट्ठलेश गृह आन॥
वल्लभ सात्विक रूप भू हरिराय सुजान।
विद्यमान गोविन्द कुल-ममगुरु भूपतिमान॥
वल्लभ तामसरूप भू पुरुषोत्तम बलवान।
प्रकट भये भूतल विषे पीताम्बर गृह आन॥

—सम्प्रदाय कल्पद्रुम

आप वल्लभचार्य के तामस सरूप प्रगटे तासों या उत्सव में हू देहली वन्दवार आदि होय है।

श्रीमद् प्रभुचरण गुसाईंजी श्री विट्ठलनाथजी ने दानलीला नामक ग्रन्थ निर्मित कियो। प्रारम्भ रीठोरा में चन्द्रावलीजी के गाम सों अरु ग्रंथ समाप्ति भाईला कोठारी की बैठक आसारवा में एक श्लोक यहां या प्रकार उधृत करें।

सदा चन्द्रावल्या कुसुमशयनीयादि रचितुं
सहासं प्रोक्ता: स्व प्रणयि गृहचर्या प्रमुदिता।
निकुञ्जे अन्योन्यं कृतविविधतल्पेषु सरसां
कथां स्वस्वामिन्या: सपदि कथयन्ति प्रियतमाम्॥

याकूं जलझूलनी एकादशीहू कहे हैं—आज प्रभु की मैया जसोदा ने जल पूजन सूर्य पूजन (कुंआ पूजा) कीनी ऐसो पुराणन में वर्णन मिले है।

यहां पुष्टि मार्ग में श्री गोकुलनाथजी के मन्दिर में तीन मनोरथ के रूप में पालना होय और उन तीनों पालनान में तिवारी में विराजके पलना झूलें। तामें आजहू वह दिन है। चौक पूरबेके पद हू गवें। मनोरथ होय। सामग्री अरोगें।

"जमुनापूजन आज चली नन्दरानी रुचिर सिंगार कराये।
सब कोऊ लेत बलाय महरिकी, निकसी छोटा जाये।
बाजन बजत संग मिल गावत झुंडन सब बनठनि ब्रजनारी।
हँसि-हँसि कहत सुनो रानी जसुमति नित आनन्द किये गिरधारी।
पूजाकरि जसुमति जमुना की पकवानन के डला लुटाये।
पाइन लागि उलटि घर आई गोद उठाय लिये सुत धाये।
आछी हरद सुरंग कुंकुम कोरन सथिये फैर धराये।
श्री विट्ठल गिरिधरन लाल की तिल चामरि बाँटि सुख पाये।

याभाव सों आश्विन कृष्ण दूज अरु आश्विन कृष्णा अष्टमी को भी होय है। तासों आज नाथद्वारा में लालाजी नामवारे प्रभु जो नगर में पृथक् बिराजें,

स्थित करिबे हेतु भयो। आज के शृंगार धोती उपरना के होय। गाती को पटुका धरें। यहाँ प्रभु के कटि मोरछलाको अवतार मान्यो है। क्रिया शक्ति को अवतार है श्री चरनन सो बिराट् दर्शन दै सारी वसुधा नापि लीनी। तृतीय चरण श्रीमस्तक पै धरिके पाताल को राज्य दीनो।

पद—समर्पण बलिराजा को सांचों।
बहुत कह्यो गुरू देवता मनदृढ आप नहि कांचो।
जग्य करत है जाके कारण सो प्रभु आपुहि जाच्यो।
परमानन्द प्रसन्न भये हरि जो जनकौं जानत है साँचों।

भाद्रपद शुक्ला १३—ऐच्छिक शृंगार। वस्त्र फूल गुलाबी पिछवाई खण्ड पिछोडा पाग गोल, मोर चन्द्रिका आभरण हरे मीना के। कर्णफूल को छोटो शृंगार। परदान के फिरते रितु अनुसार शृंगारानुसार ठाड़े वस्त्र खुलमो हरे।

भाद्रपद शुक्ला १४—शृंगार ऐच्छिक पचरंगो लहरिया पिछोड़ा दुमाला भीमसाई तुर्रा। ठाड़े वस्त्र श्याम आभरण सोना के झूमक के कर्णफूल। पिछवाई खण्ड लहरि पंचरंगी।

प्रश्न—क्योंजी, मुकुट जब भी धरै तब ठाड़े वस्त्र सफेद ही काहे कौं धरै?

उत्तर—महारास के भाव सों ही मुकुट धरैं। तथा दान गोचारण में ये तीन लीलान के शृंगार एवं निकुञ्ज लीला में मुकुट धरें अधिक गरमी अधिक ठंड में न धरैं। प्रबोधिनी सो फागण तक अक्षय तृतीया सो आषाढ़ी तक नहीं धरें। अरु यह स्वेत पट रास की चाँदनी के भाव सों है तथा यश की धवलता या शुभ्रता के भाव सों है। जैसे रामनवमी वामन जयन्ती आदि में धरें तो यशः स्वरूप चन्द्रावलीजी की लीला तथा उनकी ओर सों होय हैं।

करहला को दान :—

[साँझी को प्रारम्भ]

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा महादान साँझी को प्रारम्भ। शृंगार वस्त्र ऐच्छिक मुकुट काछनी को ही शृंगार होय। दानन में ये दान करहला को माने है। वहाँ दान लीनो यासो ये दूसरे दानलीला को शृंगार। आज पीरे वस्त्र धरै। काछनी सूथन पीताम्बर आभरण पिरोजा के। बनमाला को शृंगार। मुकुट जड़ाऊ पिछवाई चितराम की दान की एक ओर साँझी के भाव की फूल बीनतेन की जड़ाऊ पिरोजी को मुकुट। ठाड़े वस्त्र सफेद।

१—देखो श्रीमद् भागवत अष्टमस्कंध में वामनावतार लीला।

उनकी सवारी सहित बनास पै पधराय भोग लगाय पुनः अपने स्थान में पधरावैं। तामें मेवाड़ी भाषा में राम रेवाड़ी कहें अन्य समस्त जातीन की रामरेवाड़ी निकसे। बड़ी धूमधाम गाजा बाजा सो सवारी निकसे। अरु नदी में जलाशय में स्नान कराय भोग धरें। आरती करें। फेर पाछे घर पधराय के लावें।

वामन जयन्ती :—

भाद्रपद शुक्ला १२—देहली। बन्दमाल। हांडी। अभ्यंग होय। वस्त्र केशरी धोती उपरना-उपरना गाती को। ठाडै वस्त्र सफेद। श्रीमस्तक पै कुल्हें जोड मयूर पक्ष पाँय को। शृंगार बनमाला को। जड़ाऊ उत्सव को कुण्डल हांस त्रबल पिछवाई खण्ड जन्माष्टमी वारी और सब नित्यवत्।

पद को क्रम—मंगला में—जो कोई गोकुल को रस चाखे। लाल को मुख देखन आई। ग्वालन पिछवारे ह्वै बोल सुनायो। मंगला सन्मुख—गोविन्द तिहारो सरूप। शृंगार होत में—अभ्यंग के छै पद। शृंगार सन्मुख—कहोजु कैसो दान माँगिये। राजभोग आये पै—छाक के पद गवें। माला बोले पै—नन्दनन्दन वृन्दावन चन्द।

अभिजित् नक्षत्र बारह बजे के आसपास श्रीबालकृष्णजी को पंचामृत होय। दर्शन खुलत सन्मुख थार में श्रीबालकृष्णजी बिराजैं। फेरि पूर्व विधिवत् पञ्चामृत होय तथा तिलक होय। श्रीजी के संग बिराजे। तिलक होय। फेर शीतल आवै। दूसरे जयन्ती के भोग आवें। दूसरे भोग सरि के राजभोग आरती होय। नित्यवत् सेवा होय। राजभोग सन्मुख दोनों दर्शनन में झाँझ बजें। पद या प्रकार होय—

राजभोग सन्मुख पञ्चामृत के समय—प्रकटे श्री वामन अवतार। उत्सव भोग आवें—समर्पन बलि राजाको सांचो। राजा इक पण्डित पौर तिहारी। सन्मुख दूसरे दर्शन में—बलि के द्वारे ठाड़े वामन। (झाँझें बन्द होंय)। उत्थापन में—जो रस रसिक कीर मुनि गायो। भोग में—गीत गोविन्द सौं—अष्टपदी, प्रलय पयोधि"। आरती में—पद्मधर्योजन ताप निवारण। बन्दे धरन गिरिवर भूप। मोहन नन्द राज कुमार। शयन में—चरण कमल बन्दौं जगदीश। मानके पौढिबे के पद होय।

विशेषता—ठाड़े वस्त्र श्वेत यश के प्रतीक हैं। या भावसों ये उत्सव जयन्ती बलिराजा को पाताल को राज्य देनो तथा देवतान को अपने-अपने स्थान में पुनः

विशेषता—दान में यह दान करहला के कुञ्ज को दान भयो। यहां ये छै दान महादान होय है। जामें नित्यदान की हांडी अरोगे वोतो है ही। तासो अधिक दूध घर को, शाक घर को ये दो दान होय है। इनमें सब सामग्री दूध घर की मावे की आवै। दही की हांड़ी दूध की छाछ की बासोंदी की हांडी आवे तथा गुलाब जामुन बरफी गुजिया पेड़ा तथा इनमें ही मगद मोहन थाल जलेबी आदि कला रूपसों महादान होय। ये आज को वैष्णव की ओर सों महाराज द्वारा भयो तासों ये महादान विविध सामग्री आरोगे।

सांझी—आज सों सांझी को प्रारम्भ। १४ दिन सांझी होय तथा आश्विन कृष्णा अमा० को कोट होय के सांझी समाप्त होय। यह सांझी बरसाने में प्रभु पधारे तथा फूल बीनन खदिर बन में पधारती। (गोकुलनाथजी की व्रज यात्रा पृ० ६३ में वर्णन है) यहां सों स्वामिनीजी के आदेश सों सखी श्यामा बनिके गये।

"त्रिया रूप कीयो है तबही आप मिले तत्काल" (हरिराय)
"सबन कह्यो कैसे लै चलिये एकन कह्यो उपाय।
पहिरायो आभूषण सारी करिये सखी सजाय" —द्वारकेश

प्रश्न—सांझी कहा? याको नाम सांझी (सन्ध्या) क्यों राख्यो? वल्लभ सम्प्रदाय में याको प्रकार कहा?

उत्तर—एक समें ब्रह्माजी ने सम्यक् प्रकार सो ध्यान कियो तासों उनकी एक मानस पुत्री प्रकटी। ताने हाथ जोड़ि पिता ब्रह्माजी सों पूछी। ब्रह्मा ने तप, तप, तप कही। वह तपस्या करिवे चन्द्रभाग पर्वत के पास बृहल्लोहित नामक सरोवर के निर्जन वन में घूम रही हुती अकस्मात् श्रीवशिष्ठजी पधारे और या संध्यादेवी को मन्त्र दीक्षा दीनी "नमो भगवते वासुदेवाय" बहुत समय तप करिवे पै गरुड़ वाहन विष्णु पधारे। प्रसन्न होय वर मांगवे कों कही तब या संध्या ने तीन वर मांगे (१) जीव मात्र कों पैदा होते ही काम विकार न होय। जीवन में काम विकार रहे हू नहीं (२) मेरो पतिव्रत अखण्ड रहे (३) मेरी आराधना करिवे बारे की मनः कामना पूर्ण होय। तब विष्णु प्रथम वर में तनिक हेर फेर करिके आज्ञा किये पैदा होते तथा वृद्धावस्था (तुर्यावस्था में) काम न रहेगो। अरु दो वर यथाक्रम तुम्हारे पूर्ण होइंगे। अब मैं तुम्हारे मन की बात कहूं। तुमने पहिले जब शरीर त्यागवे की कामना कीनी हुती तासों अब चन्द्रभागा नदी के किनारे महर्षि मेधा तिथि यज्ञ करि रहे है। वहां जाइके तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो। तुम वहां ऐसे भेष में जैयो जो तुम्हें मुनि देख न पावें। मेरी कृपासो तुम वहां जायके अग्निदेवकी पुत्री होऊगी। अरु प्रभु ने वा संध्या को स्पर्श कियो वो यज्ञ को पुरोडास बनी। तब याकों सूर्य ले गये। वहां से याने त्रिकाल संध्या रूप धारण कियो और सूर्य मण्डल में विराजमान भई। यही अरुन्धती जी भई। तासों कुंवारी कन्या तथा द्विज-जन इनकी आराधना करें हैं। व्रज ललनान नै चौदह दिन इनकी आराधना करिकें महारास में प्रभु प्राप्त किये। ताको ही संध्या सांझी कहे हैं। प्रभु प्राप्ति हेतु पुष्टि मार्ग में हू व्रजभक्तन के भाव सों सांझी लीला चौदह दिन राखि के कोट में पूर्णता होय है।

प्रश्न—क्योंजी, चौदह दिन ही सांझी काहे कूं? तथा किन-किन वस्तुन सों सांझी मांड़ें?

उत्तर—चौदह लोक के नायक प्रभु मिलें। तासों चौदह दिन साधना कीनी जाय। पदन में हू गाये है राधाजी की बधाई में सूर ने कह्यो है—

"दश अरु चार लोक को नायक यहै सुतावर पावै॥"

तासो चौदह दिन सांझी मांड़ें। तथा हरिराय महाप्रभु द्वारकेशजी आदि भक्तन ने स्वामिनीजी के साथ सांझी मांड़ के प्रभु को सखी को शृंगार करि बरसाने पधराये अरु सांझी मंडाई है—

भीतिलीप चन्दन सौं छिरकी सांझी धरत बनाय। —द्वारकेश।
केसर चन्दन गौर अरगजा मृगमद कुंकुमगार।
कामधेनु को गोबर लैके सांझी धरत संवार। —हरिराय महाप्रभु।
"मृगमद चन्दन केसर सौं श्यामा जू लीपी भीत"
कामधेनु के गोबर सों रचि सांझी फूलन चीत"

तासों यह सांझी बालिका अरु गोप कन्या भीत में सांझी मांड़े हैं। अरु वाके आस-पास खिलौनादि कलात्मक चीजें बनाय भोग धरें हैं। धूप दीप करें हैं। ये व्रत पूर्व में कात्यायनी कौ कीनौ अरु प्रेम-स्वरूपा गोपी देवी संध्या की पूजा करें हैं, सो संध्या (सांझी) कही जात है।

पुष्टि मार्ग में ये सांझी चार प्रकार की होय है। श्रीनाथजी में दो ही प्रकार की होय हैं। चार प्रकार की संध्या या प्रकार है—

(१) **पुष्पन की**—जामें कमल बेल फूलन की रंग बिरंगी भरि सादा मंदिर में मणिकोठादि में मांड़ें प्रभु स्वयं बिराजें। ये अनेक प्रकार के फूलन सों बनावें है अरु प्रभु विराजै है। ये श्रीस्वामिनीजी के भाव की मानी जाय हैं। ये सांझी यदा कदा मनोरथ सों मांड़ें हैं।

(२) केलाके पत्तान की हथिया पोलकौ देहली पै चौरासी कोस व्रजयात्रा की लीला सुन्दर कलात्मक ढंग सों प्रतिदिन मांड़े हैं यामें व्रज के स्थलन की

सुधि करावन हेतु माँड़े हैं। यामें केला के पत्तान की कारीगरी होय है। यह श्रीचन्द्रावलीजी के भाव सों मांड़ें हैं।

(३) अन्य स्थानन में विविध प्रकार के रंगन सों सफेद कपड़ा पै अनेक खाकान सो माँड़ें है। यामें हू ब्रजलीला होय है। जे जे स्थल ब्रज के हैं, ते ते मांड़ें हैं। ये नन्द् कुमारिकान के भाव सों मांड़ें है।

(४) रंगन कौं जल में प्रदर्शित करावै है। ये हू सुन्दर कला के रूप में होय है। जल के भीतर समस्त वस्तु रंगीन दीखै है। ये श्री यमुनाजी के भाव सों होय है।

प्रश्न—क्योंजी, ऊपर आप कहि आये हैं कि संध्यादेवी माँड़ै है, अरु यहाँ तो ब्रजलीला माँडै हैं जामें मधुवन, तालवन आदि चौदह हूदिन ब्रज स्थल माँडै है फिर देवी काहे को नहीं माड़ै ?

उत्तर—वनदेवी, व्रजदेवी ब्रज सरूप कौं मानके यहाँ माँड़ै है। जो प्रभु व्रजराज है व्रज लीला करै है, अरु ये सब लीलाहू व्रज की ही है। तो सखी सरूप स्वयं श्री कृष्णनन्द राज कुमार बने तातें श्यामा सखी को पूजत है फेर देबी काहे को माड़ै तथा दूजो व्रज हू देवी सरूप है। भगवदीय हू गाये है। ति० गिरधारीजी ने दौज को माता मानि के यात्रा करी है।

"पूजन चलो कदम्ब वन देवी" अतः वन उपवन बिहार स्थल सब प्रभु सुखार्थ है। तासो यहाँ ये व्रजलीला माँड़ै है। स्थल तथा लीला दो प्रकार सों माँड़ै है—

भाद्र पद शु० १ विश्राम घाट मथुरा

आ० कृ० १ मधुवन, तालवन। २ कमुदवन, बहुलावन, गायसिंह मिलाप। ३. शान्तनु कुण्ड। ४. चन्द्र सरोवर तथा अन्य स्थल। ५, दानघाटी गोवर्धन। ६. कामवन। चौरासीखंभा वगैरे। ७. वरसानो, नन्दगाँव, बरसाने के महल वगैरे। ८. कोन वन तथा अन्य स्थल ९. प्रेम सरोवर छत्री बैठक जी आदि। १०. शेषशायी भगवान शेषशैया में पौढै। ११. लालबाग सेरगढ शेष साई बीच लालबाग नाथद्वारस्थित लालबाग मढै। १२. वृन्दावन बैठक तथा रासस्थल। १३. दाऊजी दाऊजी कौ सरूप तथा छीर सागर। १४. गोकुल ठकुराणी घाट।

श्रीमद् भागवत में हू वन्यात्मक साँझी को वर्णन मिलै है वे गीतन में बारहवें श्लोक में भाव आवै है—"कृष्ण निरीक्ष्यवनितोत्सव रूपशीलम्" तासोंही आप सखीसरूप धरै। वनितोत्सव कौं सार्थक करन हेतु हरिराय महाप्रभु उत्सव तालिका में कहै है—

'साँझी चीत्रै रतन थारी में वारत साँझी गावे" तासोही आज सों लैके आश्विन कृष्ण ३० तक हथिया पोल के सन्मुख तिवारी कमल चौक के बाहर कीर्तन समाज में साँझी के पद नित्य गवै। शयन भोग आवत ही तथा शयन आरती ताईं, अरु साँझी को भोगहू आवै है।

प्रश्न—क्योंजी श्री जी में साँझी हथिया पोल की देहली में ही काहेकों मड़ै, और स्थान में क्यों न मढ़ै ?

उत्तर—श्रीजी के मन्दिर को हथिया पोल प्रधान स्थान मान्यो है। तासोही जन्माष्टमी में, फागण में तथा उत्सवन में झाँझनकी वधाई गावत हाथिपोल तलक आवै है। अरु तहाँ दंडवत करि विदा करत है। हथियापोल हू में चित्रादि रञ्जित विशेष भावात्मक है। कन्हैया को गृह द्वार आँगन के आगे है। अरु पाछे सिंहपोल है। प्राचीन पुस्तक के आधार पर हथियापोल कौ भावात्मक पद या प्रकार है—

चित्र सराहत चितवत मुरि मुरि गोपी परम सयानी।
तकि झुकि में लखिवदन निहारत अलक सँवारत पलक न मारति जानि गई नन्दरानी॥
परि गये परदा ललित तिवारी तामध कंचन थार जव आनीं।
नन्ददास प्रभु भोजन कर मैं उरपर कर धरि वे उत तें मुसकानी।

शीतकाल के दिनानमें श्यामसुन्दर धूप कौ सेवन करत डोल तिवारी में अरोगै है। अरु ब्रजभक्त पधारें हैं। तातें प्रभुसों सेनावेनी करत पधारवेकौ संकेत करै है। तो साधारण दृष्टि सो चित्र जो माड़ रहे है तिन्हें सराहत जात है। अरु मुरि मुरि प्रभु को देखत है। काहे ते सो गोपी परम सयानी हैं अरु बाबा-नन्द, बलदेवजी आदि अरोगत संग कन्हैया को ताकिके झुकि कै अचानक देखि लेति है अरु पलक मार जात है। वैसे अलकावली सँवारत है अर्थात् संकेत करत है। या रसमाती गोपी को नन्दरानी जान गई।

जहाँ तिवारी में बावानन्द, बलदेवजी, कन्हैया अरोग रहे हैं, तहाँ परदा परे हैं। वह तिवारी ललित है। तहाँ कंचन थारी में आप अरोग रहै हैं। अरु वो गोपी उर पर कर धरि संकेत करत है अरु मुसकात जात है। तासों ये हथियापोल सब द्वारन तें प्रधान द्वार मानिके यामें साँझी धरत है। यह कमल चौक में चारों दिस निकुञ्ज कुञ्ज पृथक् पृथक् द्वार होवे सों कीर्तनहू पृथक्-पृथक् रूप में स्थानन पै होत है—

श्रावण में सिंहपोल के सामने तथा ध्रुवबारी के नीचे होय है। साँझी में हथियापोल के सन्मुख कीर्तन तिवारी के पास होय है। अरु अन्य समय

में हू अन्य स्थानन में होय है। यह मन्दिर श्रीनाथजी को गोवर्धन पर्वत के भावसों श्री हरिराय महाप्रभु निर्मित किये ताकी भावना पृथक् है—

गिरिराज को स्वरूप चार प्रकार भक्तन ने वर्णित कियो है। सर्पाकार, सिंहाकार, गौरूप अरु ग्वाल रूप। ऐसेहू यह मंदिर में दर्शनार्थी सर्पाकार मंदिर के पलटानसों आवै है। पूर्वदिश नगार खाना में प्रवेश करत है फेरि उतर तरफ धोली पट्या चढ़ै है। फेर दक्षिण दिश हथिया पोल में प्रवेश करत है। फेर पुनः पूर्व द्वार में डोल तिवारी में प्रवेश करिकै दक्षिण मुख ठाढ़े होइ प्रभु दर्शन करत हैं। पूर्व में डोल तिवारी सों दंडौती शिला की भाँति उपर चढ़िके मणिकोठा प्रवेश करि कुञ्ज द्वार सोंहोत जात हुतो तासों मध्यवर्ती गाय की भाँति हथिया पोल प्रभु मुख मानि साँझी माँड़ै है।

साँझीलीला पुष्टिमार्ग के आचार्य हरिरायजी एवं द्वारकेशजी की कलात्मक नवीन भावना सोंयुक्त होइ के प्रभु सेवा सुखार्थ स्थित भई। अन्य कहूँ दर्शित नाय होय है।

साँझी लीला की कछुक छटा—द्वारकेशजी महाराज की वाणी—सब मिल आई लाडली वृषभान नृपति के द्वार। यामें ५२ सखियन को वर्णन है। अन्त में प्रभु की चातुरी की तुकें या प्रकार है—

लाल कह्यो अब हम घर जैहै मैया जानत नाँय।
यो कहि आवत जसुमतिदेखे रूखे भये लजाय॥
जसुमति पूछत रात कहाँ रहे, लालन कही बनाय।
दौरी गाय गयी तापाछें गोवर्धन लियौ बुलाय॥
आछे फल लै मोहि खवाये सोय रह्यौ तापास।
द्वारकेश प्रभु की बतियाँ सुनि जसुमति आयौ हास॥

व्यासदास की वाणी स्वामिनीजी चित्रण—

श्याम सनेही गाइये ताते वृन्दावन रज पाइये हो।
राधा जिनको भामती कुञ्जन-कुञ्जन केलि।
तरु तमाल ढिग अरुझी मानौ लसइ कनक की वेल।
महामोहिनी मन हर्यो रस बस कीने लाल।
कुच कमलन कर मन मिल्यौ लट बाँध्यो नंदलाल।
नयनन सैन दे तन बेध्यौ मन बेध्यौ कलआन।
अंजन फंदन कुरंगन चले दोऊ भौंह कमान।
नक वेसर बड़सी लगी चित चंचल मन मीन।
अधर सुधा दै बेधियौ चकृत किये अधीन।

अंग अंग रसरंग में मगन भये हरि नाह।
व्यास स्वामिनी सुख दियौ पिय संगम सिन्धु प्रवाह॥

आश्विन कृष्ण १ शृंगार ऐच्छिक—

वस्त्र अव्वल बण्डी के गुलेनार पाग पिछौडा ठाडे वस्त्र मेघश्याम आभरण हरे मीना के। श्रीमस्तक पै गोल चन्द्रिका पिछवाई खण्डहू अव्वल बण्डी गुलेनार की। पद दान साँझी के। तथा छोटो शृंगार।

दान गहवरवन कौ:—

आश्विन कृष्णा दूज—शृंगार ऐच्छिक मुकुट दान महादान दूध घर कौ। गहवरवन कौ दान के भाव कौ वस्त्र। लहरिया के काछनी सूथन पटका राजासाई लहरिया। मुकुट पन्ना कौ आभरण पन्नामोती के। वनमाला को शृंगार। कुण्डल मयूराकृति। भुजदंड धरै तथा पिछवाई दान की पन्नालालंजी महाराज वारी। गोरस लुढकतौ तथा गोवर्धनशिखर कौ भाव। ठाड़े वस्त्र सफेद।

राग बिलावल

ऐसो कोजुहै जो छूबे मेरी मटुकी अछूती दहैड़ी जमी बिन माँगे दियो न जाय। माँगे तो गारी खाय केतिक करो उपाय। डराये उर तनहि मेरे तो गोरस की कहा कमी। और कौ दह्यौ छिल छिलौ मैं तो ओर जमायौ भरिके तभी। नन्ददास प्रभु बडेइ खवैया देखे मेरे गोरस में बहुत अमी॥

आश्विन कृष्ण ३—वस्त्र धोती उपरना गुलाबी श्री मस्तक में पगा जमाव की चन्द्रिका आभरण सोना के। ठाड़े वस्त्र श्याम। छोटो शृंगार कर्णफूल को मध्य को। पिछवाई वस्त्र जैसी।

आश्विन कृष्ण ४—वस्त्र लहरिया के। मल्ल काछ टिपारो। शृंगार ऐच्छिक। आभरण जडाऊ जोड मोरपक्ष कौ। पिछवाई खण्ड लहरिया के।

आश्विन कृष्ण ५—चूंदडी के सूथन पटका। शृंगार मध्यकौ दुमाला पै भीम साई तुरई। वस्त्र पिछवाई छडीन की (धोराकी) आभरण मोती के। मोती के बाला धरै। झूमकी वारे कर्णफूल लोलक बंद धरै। शृंगार ऐच्छिक।

दान साँकरी खोर कौ:—

आश्विन कृष्ण ५—हरिराय जी को प्राकट्योत्सव देहली वन्दनमाल नहीं। महादान साँकरी खोर को—रणछोड़दासजी छडीदारजी वारी—

पिछवाई चितराम की। दान की। वस्त्र केसरी काछनी सूथन। पटका (पीताम्बर) ठाडे वस्त्र सफेद। आभरण नवरत्न के। मुकुट नवरत्न को वनमाला को शृंगार कुण्डल मयूराकृति।

कीर्तन प्रकार मंगला—गोवर्धन की शिखरतेही शृंगार होते मेंहू यही। सन्मुख में छेलीतुक। राजभोग आये पर हरिराय जी निर्मित छाक गवैं—बीरी पै भी हरिराय जी के दान तथा वीरी के पद गवैं। राजभोग सन्मुख में—"देरी हमारो सूधोदान।" भोग आरती में साँझी हरिराय जी की। कीरति कुल मण्डन गाइये वृषभान। शयन में तथा पौढिवे में मान में हरिराय जी के पद गवैं।

साँझी

राजभोग है चुके वाद मणिकोठा में फूलन की साँझी मड़ै। जामें चोक कमल खण्ड आदि फूलन की कलात्मक ढंग सों हार शृंगार, गुलाब, चमेली कोयली पीत गुलाबाँस आदि के फूलन सो माड़ी गई विशेष भोग आवे। उत्थापन भोग सन्ध्यार्ति में दर्शन होय। शयन में बडी होय जाय। आज साँझी अरु दान दोनों हरिराय जी के होय हैं। वस्त्र हू श्री विट्ठलवर के यहाँ सों आवै है।

प्रश्न—क्योंजी दान महादान बड़ो दान काहे सों कहैं?

उत्तर—नित्य जो भोग में दान की हाँडी तथा सामग्री आँवे सो दान है। अरु जो वहुत तथा विशेष सामग्री जामें आवे सो महादान। सव सों ज्यादा सामग्री तथा विविध प्रकार के दूध घर के व्यञ्जन आवें सों बड़ोदान कह्यो जाय है।

बड़ोदान (१)—हमारो दान देहो गुजरेटी।
अति इतरात कहाधौं करैगी बड़े गोप की बेटी।

महादान—कृपा अवलोकन दान देरी महादान वृषभान कुमारी।
तृषित लोचन चकोर मेरे तब वदन इन्दु किरन पान देरी।
सव विधि सुघर सुजान सुन्दरी सुन बिनती कान देरी।
गोविन्द प्रभु पिय चरण परस कहे याचक कौं तू मान देरी।

याके अनेक भाव तथा अनेक अर्थ हैं सो यह रस लीला कौ ही महादान कह्यो जाय है।

हरिराय महाप्रभु उत्सव

महादान आश्विन कृष्णा पञ्चमी [संक्षिप्त परिचय]

सुन्दर साहित्यकार अच्छे कलाकार अभूतपूर्व विद्वान् परम त्यागी भावना के पुञ्जीभूत श्रीगोवर्धनधर श्रीनाथ जी के सुख साधन सेवामें अग्रणी कल्याणराय जी के सुपुत्र श्री हरिराय जी कौ जन्म सं १६४७ में आज के दिन गोकुल में भयौ। आप महाप्रभु जी के सरूप में सात्विक रूप से प्रकटे। तासों ही हरिराय महाप्रभु कहे जात हैं। आपके जीवन के अनेक ग्रंथ प्रकाशित भये। "हरिरायवाङ् मुक्तावली' दो भाग में है। हरिराय महाप्रभु चरित्रतथा जीवन चरित्रादि हू हैं। यहाँ संक्षेप में वर्णन करैं हैं। ये विट्ठलवर द्वितीय गृह के प्रधानाचार्य हुते। नाथद्वारा नगर निर्माण तथा नाथद्वारा भावना बनाई। आपकौ शरद ऋतु में प्राकट्य होवे कोहेतु यश विस्तार है। दानन के मध्य पाँचमी को प्राकट्य को कारण पंच ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रियन कौं प्रभु के लिए विनियोग करावे हेतु प्रकटे।

श्रीनाथ जी की प्राकट्य वार्ता आपने ही बनाई। आपकी सात सौ पद रचना उपलब्ध है। अनेक गद्य-पद्य ग्रन्थ निर्मित किये। संस्कृत के एक सौ छाछट ग्रंथ १६६ पद्य व्रजभाषा ग्रंथ ३० नित्य लीला सनेह लीलादि अनेक व्रजभाषा के गद्य-पद्य ग्रंथ जामें ४१ शिक्षापत्र विशेषकर घर घर में व्याप्त होय के दैवी जीवोद्धारक बने। स्वरूपज्ञान गुरु वैष्णव प्रभु को समानभाव आदि कई प्रसंग है। वार्ता सतत श्रवण तथा सुबोधिनी पठन राणारायसिंह खंडा गाम में नाथद्वारा के पूर्व में आप रहत हुते।

आपकी मानसी पराभक्ति है। महाप्रभु को तथा गोवर्धनधर को पूर्ण साक्षात्कार है। आपके कछुक चमत्कार हू हैं। लौकिक में हरिराय जी कौ डोरा ज्वर तथा नजर चोटफेंट में लाभप्रद है। स्मशान कीले रात्रि दिवस स्मशान में दाहसंस्कारादि निर्भीक तासों होत है। श्रीजी शृंगार आज नवरत्न आभूषण को कियौ ताको आशय प्रभु ने नौनिधि मेवाड़ को दीनी तथा हरिराय महाप्रभु की विविध सेवा अंगीकार कीनी तासो आज नवरत्न भूषण धरैं।

वड़ोदान तथा साँझी दान अन्य पद आपके सरूप तथा महादान साँझी होय है। भाव सो गवै। आपके पुत्र न होवे सों दामोदरजी दाऊजी के पुत्र गोद लिये। तथा १२५ वर्ष भूतल पर विराजे आपने अनेक चरित्र प्रकट किये। सम्प्रदाय कल्पद्रुम के लेखक रेही श्री विट्ठलनाथजी अनन्य सेवक तथा प्रेमजी भाई हरजीवनदास शोभामाजी एक डोकरी या प्रकार पाँच सेवक तथा बैठक नाथद्वारा खमनोर, जैसलमेर, गोकुल डाकोर जी, जम्बूसर, सावली आदि स्थान में वर्तमान हैं।

आपने अनेक ग्रंथन में अनेक प्रश्नन के उत्तरार्थ लिखे है।

प्रश्न—क्यूंजी ठाकुरजी तो श्याम हैं। मेघश्याम घनश्याम पर यहाँ पीत-विग्रह सर्वत्र क्यों? ताको उत्तर हरिराय महाप्रभु ने स्वप्रभु स्वरूप निरूपणाष्टक स्तोत्र में दियो है। उत्तर— देखो—स्व प्रभु स्वरूप निर्णयाष्टकम्। —हरिराय

आश्विन कृष्णा ६—शृंगार ऐच्छिक वस्त्र पगा पिछोडा एक बूँदी चूंदडी के ठाडे वस्त्र पीरे पिछवाई। व्रजयात्रा की गोल व्रजमण्डल की आभरण गुलाबी। मीना के श्री मस्तक में मोरसिखा शृंगार मध्य को।

आश्विन कृष्णा ७—शृंगार ऐच्छिक धोती पीरी उपरना पीरो छोड को ठाडे वस्त्र हरे। शृंगार छोटो। गोल चन्द्रिका। आभरण जडाऊ कर्णफूल को।

आश्विन कृष्ण ८—शृंगार ऐच्छिक। पिछवाई महादान की सुनहरी चितराम की साँझी सहित हलके गुलाबी वस्त्र। पिछोड़ा पगा ठाड़वस्त्र श्याम। आभरण सोना के कर्णफूल को शृंगार।

दान कदम्बखंडी को:—

आश्विन कृष्ण ९—महादान वर्तमान गो. ति० श्री गोविन्दलालजी महाराज के वहूजी अ० सौ० राजलक्ष्मीजी (रसिक प्रिया जी) को जन्म दिन। वस्त्र पिछवाई खण्ड भोपाल साई लहरिया काछनी पीताम्बर, सूथन ये सब लहरिया के। मुकुट जडाऊ आभरण जडाऊ। शृंगारवनमाला को ठाडे वस्त्र सफेद। देहली वन्दन माल नहीं। पद दान के गवै। वडोदान महादान की सामग्री।

प्रश्न—क्योंजी, वहूजीन के जन्मदिनन के शृंगार कैसे होय? ये शृंगार करै हैं कहा। तथा इनको जन्म दिन माने तो और बहू बेटीन केहू मानने चाहिये।

उत्तर—यहाँ जितनी सेवा श्री नवनीतप्रियजी सौं आवत है सो सब बहू बेटी अपने श्रीहस्त सौं सिद्ध करि अपने हाथ सों अरोगावत है। तासो उनके मनोरथन की पूर्ति श्रीनाथजी करत है। तासों ही अद्यावधि परचारनी रूप भीतरिया को नेग है। दूसरे गो० ति० श्रीदाऊजी महाराज के वहूजी ने चार पाँच साल तक श्रीनाथजी की सेवा तिलकायतवत् करी। गोविन्दजी महाराज विट्ठल-नाथजी सौं गोद आये तब तिलकायतपदासीन होवे सों ये सेवा करी। सो यहाँ तिलकायत के घर के तदाकार तत् स्वरूपात्मक विराजे। पहले आश्विन शुक्ला को उत्सव शृंगार भागीरथी बहूजी कों तथा मगसिर सुदी ५ को मंगलभोगराणी भागीरथी बहुजी के जन्मदिन को हीरा की टोपी को शृंगार होत है। तासों ये मनोरथ महादान श्री बहूजी कीं आड़ीसों परम्परागत है।

दान वैशिष्टय-नायिका भेद सों:—

प्रौढा—

मध्या प्रौढा तीनविधि पियसों मान जनाई।
धीराधीरा और अधीरा तिय धीराधीर गनाई॥
अहो व्रज राज राई कौने दान लीयो कौन दीयो।
यह मारग हम सदा ही आवत जात अब कछू नई चलाई।
जोपै जान न दे तो चलोरी उलट घर इन्हें तो सब कछु फबै।
करत मनभाई।

गोबिन्द प्रभु के नैननसो नैना मिले चितवत चली कुंवर नयनन मुसकाई।

प्रौढा-अधीरा—

कापर ढोटा नैन नचावत काहै तिहारे बावा की चेरी।
गोरस बेचन जात मधुपुरी आय अचानक वन में घेरी।
सेनन दे सब तखा बुलाये बातहि बात शामघन फेरी।
जाय पुकारो नन्द जू के आगे जो कोऊ छुवो मटुकिया मेरी।
गौकुल बसि तुम ढीठ भये हौ बहुत जु कान करत हों तेरी।
परमानन्द दास को ठाकुर बलि बलि जाऊँ श्यामधन केरी।

प्रौढा धीराधीरा—

यह गोरस लेरे अरे अनोखें दानी।
चले न जाऊ अपने रस ढोटा हमसों कौन चतुराई ठानी।
कौन हवाल कियो हरि मेरो फिर-फिर कहत अटपटी वानी।
ये बातैं सब दौर कहूँगी जहाँ बैठी जसुदा रानी।
अन्तर गत हरिसों मिल्यो चाहे यह नागर सन्मुखही रिसानी।
प्रानहु वसत तेरे कमल नयन में जियकी 'जन परमानन्द जानी।
कहत तोष शृंगार में प्रोढा विधि है दोय।
एक आनन्द संमोहिता रति प्रीता इकहोय॥१॥

आनन्द संमोहिता—

तेरी पारी में बनिआई।
यह मारग तुम रोक रहत हो छीन छीन दधि खाई।
तुम जानत हो घेरी हमने रही आपनी दाई।
नन्ददास प्रभु तनक छाछ में निकस जाय ठकुराई।

रतिप्रीता—

ग्वालन मीठी तेरी छाछ ।
कहा दूध में मेल जमायो साँची कहो तिन बांछ ।
और भाँति चितैवौ तेरो भौह चलत है आछ ।
ऐसी तकझुक कबहुन देखी तूं जो रही कछ काछि ।
रहसि कान्ह कुच गहि परसत तूं जो रहत है पाछ ।
परमानन्द गोपाल आलिंगन गोप वधू रही नाछ ।

बाललीला युत दान—

रंचक चाखन दे री दह्यौ ।
अदभुत स्वाद श्रवण सुन मोपै नाहि न परत रह्यौ ।
ज्यों ज्यों कर अम्बुज उर ढाँकत त्यों-त्यों मलिमलि रह्यौ ।
नन्द कुमार छबीलोढोटा अँचरा धाय गह्यौ ।
हरि हठ करत दास परमानन्द यह में बहुत सह्यौ ।
इन बातन चाख्यौ चाहत हो सेंतन जात बह्यौ ।।

आज दधि कंचन मोल भई ।
जा दधि को ब्रह्मादिक इच्छत सो गोपन बाँट दई ।
दधि के पलटे दुलरीदीनी जसुमति खबर भई ।
परमानन्ददास कौ ठाकुर बरबट प्रीत नई ।।

आश्विन कृष्ण १०, ऐच्छिक शृंगार—वस्त्र कसूमल पाग पिछोड़ा पिछाई खण्ड कसूमल सफेद किनारी के । चन्द्रिका सादा । पन्ना मोती के आभरण गार छोटो । ठाडे वस्त्र पीरे ।

गोवर्धन को दान:—

आश्विन कृष्ण ११—बड़ोदान साकघर को । पिछवाई चितराम की । ठाडे वस्त्र सफेद । दान की पिछवाई लूटने तथा गोवर्धन की गैल में दधि ढोरते । वस्त्र केसरी काछनी । सूथन पटका । आभरण माणक मोती के । मुकुट माण कौ जड़ाऊ । अलिवन्द धरैं । वनमाला को शृंगार मकराकृत कुण्डल ।

आज को महादान बड़ोदान साक घर को होत है । या दान में सबसों जादा सामग्री अरोगत हैं सब प्रकार कौ घर को साज तथा विविध भाँति सामग्री । आज बड़े दानहू गवै । जो चार हैं उनमें से ।

गोपीनाथ जी के उत्सव में मान में ये पद गवें :—

गोपीनाथ कुंवर तोय बोले मानिनी मान मेरो कह्यौ ।
हों जु लालन सो पैंज बदि आई लेन सेजु करी नैन में ही नैना
ताते मोय कछू न कह्यौ ।
घोष नृपति सुत बहु वल्लभ कौन सुकृत फल तें जु लह्यौ ।
गोविन्द प्रभु की जु तू न्याय वस करि परम विचित्र रस छिन छिन
जात वह्यौ ।

आश्विन कृष्णा १२—श्री गोपीनाथ जी दीक्षित को उत्सव—देहली वन्दन-माल हाँडी वस्त्र लाल धोती उपरना कुल्है लाल । मोरपक्ष को पाँच को कुल्हे को जोड़ आभरण, पन्ना, मोती के । ह्रासकवल आदि कुण्डल मीनाकृत । पिछवाई लाल छापा को हासिया तथा नीली पिछवाई छापा की खण्डहू ऐसो सवेर दान साँझको साँझी राजभोग में बधाई । केसर की धोती पहरे केसरी उपरना ओढ़े महाप्रभुजी बारी ठाडे वस्त्र नीले छापाके ।

संक्षिप्त परिचय

आपको प्राकट्य अडेल में वि० १५६७ आज के दिन भयो ।

मूल-पुरुष—"संवत पन्द्रहसौ सहस आसौ वद द्वादशी शुभ गायो ।" ये वेदज्ञ तथा दीक्षित हुते । वेद वेदान्त में विशेष अभिरुचि उदीयमान बालक को यथासमय उपनयन जनेऊ कराय वल्लभ आप अध्यापन करावते वेद वेदान्त सुबोधिनी आदि पढ़ाये ।

विवाह—देवलभट्ट हनुमानघाट निवासी की पुत्री के संग वि० १५८६ में विवाह भयौ । अरु वि० १५८७ आश्विन कृष्णा ८ को एक पुत्र भयौ जो पुरुषोतम रूप में प्रकटे । गुण निधि गोपीनाथजी निर्गुण तेज निधान । दो बेटीजी भईं । लक्ष्मी बेटीजी सत्यभामा बेटीजी अडेल में । आपने पृथ्वी प्रदक्षिणा के रूप में यात्रा करी । प्रभु की सेवा सुख साधन रूप साहित्य संग्रह कियौ । मदनमोहनजी बंगालीन कूँ पधराये १५९५ में ।

मनमोहनजी को प्राकट्य एवं प्राप्ति :—वि० १५९५ बैशाख मास में आप अपने मकान काशी में विराजे हुते अरु स्वप्न में श्री मदनमोहनजी ने आज्ञा करे मैं कुँवा में हूँ मोको प्रकट करौ । आप चलिके गुजरात प्रदेश में पधारे, अहमदाबाद राजनगर में जयकृष्णभट्ट साँचोरा की वाड़ी में कुँवा हुतो । अरु वहाँ बहुत से सेवक आचार्य महाप्रभु से मिलवे आये । आपने महाप्रभुजी के सेव्य श्री मदनमोहन

जी जिनने स्वप्न में आदेश दियो वे कुँवासो बाहर पधराय बड़ो मनोरथ कियौ और वहाँ से द्वारका पधारे। वे मदनमोहन जी श्रीजी के पास बिराजे हैं।

श्री महाप्रभु के बाद आप आचार्य पदासीन भये। श्री गोवर्धनधर की सेवा को विधान बाँध्यो तथा धर्म प्रचार में जुट गये। या विषय में दश दिगंन्त विजयी पुरुषोतम जी नवलक्षग्रन्थकर्ता आपकी वन्दना मंगलाचरण में करे हैं—महाप्रभु वल्लभ के प्रतिनिधि सरूप दया के भण्डार करुणा के सागर सत्वादि गुणयुक्त ऐसे गोपीनाथजी को मैं आश्रय लिये हूँ। आपने अनेक ग्रन्थ बनाये उनके कुछ नाम या प्रकार हैं—

बडेजु गोपीनाथ कृत चार ग्रन्थ नृपमान।
प्रथमजु साधन दीपका सेवाविधि सुखदान॥
संज्ञानामनिरूपणऽरु गोपीनाथ सुखदान।
वल्लभाष्टक ग्रन्थ किय गोपीनाथ सुजान॥

आपके स्वरूप को तथा लीला को वर्णन मंगला के पद में या प्रकार है।
"लेन चली री गोरस बेचन के मिसकर छोटी सी मटुकी मधुरीचाल।
अरबराय उठि चलीरी प्रातही सिरी अलफ गरे सोहे कुमुल्हानी माल।
कहत फिरत कोकले होरी दह्योमह्यो ढूंढत फिरत नन्दलाल।
रामदास प्रभुको मनमोह्यो एन मैंन गज की सी चाल।

यामें साधन दीपिका प्रकाशित है। जामें प्रभु की सेवा विधि है तथा व्याकरण को संज्ञानामक ग्रन्थ अप्राप्य है।

भाई भाईयन में अधिक प्रेम हुतो सेवामें दोनों भाई एक अडैल में माँ की सेवारत तथा एक गोवर्धन घर की सेवारत या प्रकार बारी बारी से मिलिकै सेवा करते।

विट्ठलनाथजी बड़े भाईकौ बड़ो सम्मान करते। सो उनको पत्र प्रमाण में है–लीलाप्रवेश आप जब तीस वर्ष के हुते तब जगन्नाथजी के दर्शनार्थ पधारे अरु बलदेव जी के मुखारबिन्द में प्रवेश किये वि० १५८८ में आपके लीला प्रवेश के समय पुरुषोतमजी की अवस्था बारह वर्ष की हुती वि० १६०० में पुरुषोतमजी लीला प्रवेश कर गये। कोई के मतसों वि० १५८३ में पुरुषोतमजी के लीला प्रवेशबाद गोपीनाथ जी ने लीला प्रवेश कियौ।

सत्यभामा बेटीजी अरु लक्ष्मीबेटीजी :—इनके विवाह श्री विट्ठलनाथजी ने किये। ये दोनों बेटीजी बालविधवा भईं। अरु श्री नवनीत प्रियाजी की सेवादीनी तथा तनमन से श्री नवनीत प्रियके लाड़लड़ाये।

लक्ष्मी सत्यभामा बेऊ अग्र जनी अनुहार रे रसना।
श्री नवनीत प्रियाजी ये रीझव्या सेव्या विविध प्रकार रे।

अतः कई वार्ता हैं। श्री आसकरणदासजी को नवनीत प्रिय कों राजभोग को थार इनने अरोगायो। तब गुसाईंजी सों नवनीत प्रिय आज्ञाकरी आज मैंने दो राजभोज अरोग्यो। अन्नकूट के दर्शनहू मथुरेशजी के मन्दिर में गुसाईंजी ने कराये।

काका वल्लभजी के बचनामृत में कह्यो है कि—ये सत्यभामा बेटीजी विवाह में सप्तपदी होत में पति के देवलोक चले जावे पर एक दिन मनोरथन में गुसाईंजी सों कही "काकाजी मेरी पठौनी कब होयगी।" भोरे स्वभाव कूँ देख गुसाईं जी बहुत दुखी भये। प्रबोधिनी के चार भोग तथा हलदी के भोग को प्रकार प्रभु सेवा में लाय लौकिक सुख अलौकिक में प्रकट किये। या प्रकार आप के परिवार की सेवा भावना सराहनीय है।

श्रीजी को शृंगार लाल वस्त्र अनुराग रूप तथा धोती उपरना वेदज्ञ दीक्षित आचार्य को संकेत। नीले छापा की पिछवाई को भाव यह कि आकाश तक आपने यश तथा वेद प्रचार सों अपनो चमत्कार फैलायौ। कुल्हे तथा जोड़ बाललीला के भाव सौं। बधाई केसर की धोती पहरे गवैं। यह उत्सव अन्यत्र कम मानें हैं। पर श्री गोवर्धनधर के यहाँ यह उत्सव विशेष रूप में माने हैं।

एक पद आपके भाव को :—

लालहो पायन लागो तेरे
मेरे संग की दूर निकर गई मोय रहत कित घेरे।
गोरस खाय मटुकिया फोरी अब कहा दान निवेरे।
गोपीनाथ कुँवर जान देवो मोय सास बुरी घर मेरे॥

आश्विन कृष्णा १३—गुसाईं जी के तृतीय लालजी बाल कृष्णजी को उत्सव

देहली वन्दनमाल हांडी वस्त्र केसरी, पिछौडा, कुल्हे केसरी, जोड चमक को घेरा। आभरण माणक मोती के। ठाडे वस्त्र मेघस्याम वनमाला कौ शृंगार। कुण्डल मकराकृत (बालकृष्ण लोचन विशाल) सात स्वरूपन की माला पिछवाई खण्ड सिन्धिया कपडाकी। केशरी (अमरसी) तामें लाल गायें छोटे वृक्ष ऐसो ही खण्ड। दिन भर दान के तथा अन्य पद। रोजभोग में "विहरत सातो रूप धरे हैं" साँझ को साँझी के पद।

आपको संक्षिप्त परिचय :—

यहाँ श्री जी में आप लोचन विशाल होवे सों प्रभु गोवर्धनधर भी आज लोचन विशाल भये। श्री बालकृष्ण जी ने केशवपुरी के शाप के कारन सिन्ध प्रान्त को राज अंगीकृत कियौ। कारण—सिन्ध प्रान्त में श्रीवल्लभ तथा कोई आचार्य

पधारे नहीं। तासों आपने वा प्रान्त की सेवा अंगीकृत करी। आपको प्राकट्य वि० १६०६ में गोकुल में भयो। तथा विबाह १६२३ में श्रीमद् गोकुल में भयो। आपके चार सन्तान भई। गोपदेवी बेटी जी, द्वारकेश जी, ब्रजनाथ जी, तथा ब्रजभूषण जी। आप एक समै यशोदाजी बनिके पालना झुलावते हते तब वात्सल्य भाव सों आप के स्तन सों दूध धार वही। 'तुम ब्रजरानी के लाला' यह पद गान करे। आप उद्भट विद्वान् स्वप्न दृष्टा स्वामिनी स्तोत्रादि की रचना करी तथा द्वारकाधीश कौ स्वामिनी गुंजावन सों साधना करि यमुना यूथ सोंपधराये। आपके माथे श्री द्वारकाधीश विराजें। इनको साहित्य मिले है। अतः संक्षेप में लिख्यौ है।

आश्विन कृष्णा १४—आज छेलो लहरिया एवं छेलोवस्त्र पंचरंगी लहरिया के पिछौडा पाग तथा पिछवाई खण्ड आभरण द्वारा के मध्य को शृंगार पद शृंगार ऐच्छिक। ठाडे वस्त्र श्याम। श्रीमस्तक पर नागफणी को कतरा कर्णफूल के शृंगार। पदन में दान साँझी के पद।

आश्विन कृष्णा ३०—कोट की आरती छेलोदान—पनघट को तथा वस्त्र श्याम सुन हरि फूल के काछनी सूथन पटका। ठाडे वस्त्र सफेद। आभरण जडाऊ मुकुट सिलमग सितारा कौ। पिछवाई स्याम में सुनहरी मोर नाचते बुटका वारे। कुण्डल मयूरकृत वनमाला को शृंगार।

हरिराय जी वारो बड़ौदान छेलो गवै। साँझ को साँझी हरिरायजी वारी गवै। आज कोट मड़े। जामें द्वारका लीला सुनहरी रूपहरी पन्नी के घोडा हाथी द्वारका के महल, पूतरी, मल खम्भ ये सब कागज के तथा सब रंगन के अनेक गोपी छरीदार। सिंह, बानर, पशु पक्षी सहित मढे। आज केला के अगल बगल मगर स्वच्च रहे। बाकी सब कागज के खिलौना मढ़ें। ऊपर द्वारका के महल सात खंड पाँच खण्ड के बनें।

प्रश्न—क्योंजी कोट काहे को कहैं साँझी में छेलो कोट कौन सो?

उत्तर—कोट संध्यादेवी को चौदह दिन विविध खेलन सो खिलाय बाकी वरयात्रा निकारि विदा करै। तासों सहर कोट की परिक्रमा के भाव सों कोट माँड़ैं। वैसे ब्रज में कोट वन की लीला सों कोट कहे। यामें अनेक ढंग सों हाथी घोड़ा, सुखपाल आदि सेना सिपाही जैसे वरयात्रा में निकसे तैसे बनावें। सम्प्रदाय सिद्धान्त सों ब्रजराज की राज लीला के भाव सों द्वारका लीला में राज लीला के दर्सन कराये। चौदह दिना ब्रजलीला करे राज लीला (द्वारका लीला)। आज कोट की आरती होय तब और पदहू गवै :—

दान निवेरि लाल घर आये।
आरति करत नन्दजु ही रानी हँसि हँसि मंगल गीत गवाये।

ऐसे वचन सुने मैं श्रवणन बड़े महर के पूत कहाये।
फिर फिर राय बात हँसि बूझत हमको कहो कहा तुम लाये।
लाऊँ कहा सुनो किन मोपे छीन छीन सब कोऊ दधि खाये।
श्री विट्ठलगिरधरनलाल ने बातनहीं दाऊ बौराये।
कुँवरि कुँवर आये दान चुकाई।
चुंवत वदन आई द्वार पै जसुमति रोहिनी लेत वलाई।
लिये उठाय गोद अपनी में बैठी भवन में जाई।
पूछत को जीत्यो को हार्यो बोले मुरि मुसकाई।
यह व्यवहार दान को ऐसो मेरो राधा उमग्यो चाह्यौ।
श्री विट्ठलगिरधरनलाल संग यों ही खेलो इन्हें खिलाहौ।

वैष्णवन में मनु महाराज के वंश में धर्म लक्षण एक कालावच्छिन्न रहे हैं ताकौ वैष्णव कहै हैं श्री द्वारकेशजी ने दश लक्षण निर्मित किये। वे ही मनु के दश धर्म मिलै हैं—

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः—धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकं धर्म लक्षणम्

द्वारकेशजी महाराज—

आसरो एक दृढ बल्लभाशीश को। मानसी रीतकी मुख्य सेवा व्यसन लोक वेद त्याग शरण गोपीश को। दीनताभाव उद्बोध गुणगान सों घोष त्रियभावना उभय जाने। कृष्णनाम स्फुरे। पल न आज्ञाटरे। कृस वचन विश्वास चित्त आने। भगवदीयजान सस संगको अनुसरे नहीं देखे दोष अरुसत्य भाखे। पुष्टिपथ मरम दश धर्म कहू याहि विध चित में द्वारकेश राखे। "चोदनाऽर्थो धर्मः" "चोदना लक्षणोधर्म"।

धृति—धैर्य पूर्वक आसरो राखनो।
क्षमा—वैष्णव को क्षमाशील होनो।
दम—इन्द्रियन को वस में राखनो सेवामें इन्द्रिय निग्रह है जाय है अरु राखेहू।
अस्तेय—चोरी को तो विचारहू मन में न लावे।
इन्द्रिय निग्रह ब्रह्मचर्यावस्था—यहाँ स्त्री पुरुष संगरहिके सेवा करे है।
धी—प्रभु भरोसे सो धीरता माधवदास को नाव डुबावे श्री नवनीत प्रिय पधार निजेच्छातः करिष्यति।
विद्या—सेवा में सब प्रकार को ज्ञान ग्रंथन को अवलोकनादि।
सत्य—साँच बोलनो तो प्रधान धर्म है।
अक्रोध—सेवा में सेवक क्रोध न करे।
शौच—पवित्रता तन मन सों राखे।

श्रीनाथ जी

पुष्टि मार्गीयवैष्णव स्वरूप

श्री आचार्य हरिरायकृता भक्तानां स्वरूप भेद निरूपणम् ।

वैष्णवा भगवदीयाश्च तदीया तादृशास्तथा
भक्ताश्चेति गुरुर्ज्ञेया पुरुषार्थ विभेदतः ॥१॥
दीक्षायुता स्तद् रहिता व्रत वेषादि धारणात्
सर्वत्र समचेतासि वैष्णवा परिकीर्तिताः ॥२॥
दीक्षायुताश्च भगवद्धर्मज्ञा सेवनोत्सुकाः ।
भगवदीया श्चति प्रोक्ता प्रेम मात्रैक तत्पराः ॥३॥
भगवद्धर्म संयुक्ता भगवदीय परायणाः ।
उभयो सेवने मुख्यास्तदीयास्तेप्रकीर्तिता ॥४॥
यादृशोभगवद्भावो ज्ञात्वोत्सुक मनांस्वयम् ।
आसक्या सेवयेन्नित्यं तादृशैःपरिकीर्तिताः ॥५॥
तदंशत्वाद्रशा सक्ता रसमात्रैक पोषकाः ।
वाह्याभ्यन्तर भेदेन भक्तास्तेसंप्रकीर्तिताः ॥६॥
धर्मार्थ काम मोक्षाश्च भक्तिः पञ्चमउच्यते ।
पुरुषार्था दि भेदेन फलभोदो निरूपितः ॥७॥

(१) **वैष्णव**—जो दीक्षित होय पुष्टि मार्ग को या काहूको तथा दीक्षान्निाको हू होय पर चारो जयन्ती एकादशी करनहारो होय तथा तिलक मालाधारी होय और समस्त वैष्णवन को प्रभू की भावना सो समताराखत होय ताहि वैष्णव कहत है ।

(२) **भगवदीय**—दीक्षावारो होय भगवद्धर्म प्रभु लीलादि तथा उनके सेवादि लीलादि में जानके करि वे में उत्सुक होय सवन में प्रेम भाव राखत होय ताहि भगवदीय कहत है ।

(३) **तदीय**—भगवद्धर्म सो पूर्ण परिचित अरु भगवदीयता में पूर्ण और भगवान अरु भक्त के सेवन में तत्पर होय ऐसे को तदीय कहत है ।

(४) **आसक्तिवान्-अरुतादृशः**—जैसै जो जा प्रकार की ताको पहचान जाय ओर तामें उत्सुकता राखे अरु आसक्तीवान जामें पूर्ण लगन होय सेवा में प्रभु सुख में तथा समस्त भाव सों भावित होय ताहि तादृश कहत है ।

(५) **भक्त**—भगवदंश युक्त भगवान् की लीला रस में सदानिमग्न भगवान् की समस्त लीलान के रसकों बढ़ायवे वारो पोषण करिवे वारो बाहर अरु भीतर

एक रस भेद रहित होय ताय भक्त कहै हैं । ये चारों भक्त—वैष्णव, तादृशी भगवदीय अरु तदीय ये धर्म अर्थ काम मोक्ष युक्त माने हैं तथा पाँचमो भक्त पुरुषार्थ रूप में फल रूप मानै हैं ।

गुसाईंजी श्री विट्ठलेश वैष्णवन में या प्रकार रूप मानै हैं—वैष्णव मर्यादी, भगवदीय स्नेही, प्रेमी आसक्तिमान और व्यसनी इनके उदाहरण के ताईं वार्ता २२३ वैष्णव जम्हेरचन्द भाई की देखनी चाहिए । ये गुजरात सों गोकुल आये ।

वाञ्छा कल्पतरुभ्यश्च कृपा सिन्धुभ्य एव च
पतितानांपावनेभ्यश्व वैष्णवेभ्यो नमोनमः ।

प्रीति बँधी श्री वल्लभपदसों ओर न मनमें आवे हो ।
पढि पुरान खट् दर्शन नीके जो कछु कोऊ बतावे हो ।
जब ते अंगीकार कियो है मेरो तब ते न अन्य सुहावे हो ।
पाय महारस कौन मूढमति जित तित चित भटकावे हो ।
जाके भाग्य फले या कलि में सोई शरण जन आवे हो ।
नन्दनन्दन को निज सेवक ह्वै दृढ़करि बाँह गहावे हो ।
रसिक सदा फल रूप जानके लै उच्छंग हुलरावे हो ।

सूरदासजी हू गाये हैं—

यह सब जाने भक्त के लच्छन ।
कोऊ वन्दो कोऊ निन्दो कोऊ मारो मूर लै भच्छन ।
कोऊ कहै मूरख अज्ञानी कोऊ कहे बडो विचछन ।
कोऊ मान दे चन्दन डारै कोऊ मारे पत्थर अगछन ।
भली बुरी कछु मनमें न लाये कृष्ण चरन रति टरे न इकछन ।
सूरदास हरि रूप मगन ह्वै याते गिरधर मिले ततछन ।

पुष्टि मार्ग के पंच साधन

श्रद्धा रति भक्ति प्रेम सेवा

आदौ श्रद्धा ततः साधुसंग अथ भजन क्रिया ततोऽनर्थ निवृतिः ततो निष्ठा ततो रुचि अथासक्तिस्ततोभावस्ततो प्रेमभ्युदर्चिति साधकानां प्रेम्णा प्रादुर्भावे एषोक्रमः ।

आदौ श्रद्धाः—

एवं निर्जितषड्वर्गैःक्रियते भक्तिरीश्वरे ।
वासुदेवे भगवति यया संलभते रतिम् ॥ ७–७–३३

श्रद्धा पूर्वक किये भये समस्त साधनन कों एकमात्र फल यही हैं जामें प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र के चरण कमल में रति होय और श्रद्धा की परिपक्व अवस्था कूं ही रति कहे हैं। अरु रति की अन्तिम स्थिति भक्ति होय है। रति प्रीति भक्ति स्नेह ये सब याही के नाम हैं। याकी अवस्था अरु साधना भेद सों याके नाम अलग अलग है।

श्रद्धा—प्रायः गुणन के कारण सों श्रद्धा मजबूत है जाय वासों स्थिरता आवे अरु पश्चात् रति होय जाय है।

रति—सम्बन्ध स्थिर करिकै अपनोपन तामें आय जाय ताके गुण अवगुण में ध्यानहू न होय तब रति होय हैं अरु रति की पराकाष्ठा ही भक्ति है।

भक्ति—रति की पराकाष्ठा की स्थिति में और कछू नहीं दीखे ताकों भक्ति मानी है।

षड् वर्ग हैं—

काम क्रोध लोभ मोंह मद मत्सर इन छै सत्वून सों परे भये वे ही रति के अधिकारी होय हैं।

राग सारंग:—

रति पथ प्रकट करन को प्रकटे करुणानिधि श्रीवल्लभ भूतल।
हुलसे सकल दैवी जन के मन साधन विन पावेंगे हम फल।
मायामत को तिमिर नसायो पंथ दिखायो बेद वचन वल।
यह मारग जो दृढ़ तिनको हरि मेलत मुख में पत्र कुसुमजल।
सींचत वचन सुधा करि सेवक मारग रिपु दाहे वचनानल।
सेवारस सागर प्रकटायो वदन अनलते अतिशयशीतल।
उपजत ताप छिनक सन्निधि में देत विरह आनन्द रस केवल।
देखो संत विचारचारू चित ये गोकुलपति ये हैं निश्चल।
दे चरणोदक दोष निवारे सूधे किये काल कलि के खल।
रसिक भजत नित श्रीवल्लभ पदते बड भागी सदा मन निर्मल।

या पद में साधन के पाँच प्रकार निर्धारित कीने तथा प्रेम मार्ग को प्रकार रति प्रीति को प्रकार वर्णन कीनो है।

भक्ति:—

हरिराय महाप्रभु ने दैन्याष्टक में पञ्चधा भक्ति प्राप्ति की प्रार्थना करी है। आगे वे "भक्ति द्वैविध्यनिरूपणम्" में दो प्रकार की भक्ति माने है।

प्रथम भक्ति युगल चरणन की दूसरी मुख कमल की। एक शीतल, दूसरी दुर्लभ मानी है।

अन्याचार्यन के मते भक्ति की एकादशभूमि सिद्ध करि अनुभव कीने होय वोही भक्ति के अधिकारी है सकें है।

सूरदासादिने भक्त के लक्षण या प्रकार बताये हैं :—

हरिरस तो कबहू जाय लहिये।
गये सोच आवे ताहि आनन्द ऐसो मारग गहिये।
कोमल वचन दीनता सबसों सदा आनन्दित रहिये।
वाद विवाद हर्ष आतुरता इतो दण्ड जिय सहिये।
ऐसो जो आवे या मन में यह सुख कहाँ लौं कहिये।
अष्टसिद्धि नवनिधि सूर प्रभु भक्ति करे ते पैये॥

तुलसी—प्रीति रामसो नीति पथ चलिये राग रिस जीति।
तुलसी सन्तन के मते यही भक्ति की रीति।

गोविन्दस्वामि—श्री गोकुलपति नमो नमो
भक्त हेत प्रकटे व्रजमण्डल नन्दनन्दन जप नमोनमो।

विष्णुदास—भक्ति सुधा वरखत ही प्रकटे श्री वल्लभ द्विज नन्द।

नन्ददास—मुक्तिकाशीभजन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ गुणगणन भारी।

चतुर्भुज—प्रभुता प्रकटी विट्ठलनाथ की।
भक्तिभाव प्रकटयो यह मारग कलियुग सृष्टि सनाथ की।

कृष्णदास—कृष्णमुख अनल कलि खलन कों दण्ड दे।
प्रबल परताप भुवि भक्ति निर्मल करी।
भक्ति भानु धर आन उदयो दीप तिमिर गये।
दूर भयो दिवस गई शर्वरी॥

नारद तो कहें है भक्ति तो गोकुल से ही प्रकटी तथा बाद में सबनने लई।

भक्ति तो गोकुल ते प्रकट भई।
पहले करी श्रीवल्लभनन्दन तब औरन सिखई।
चार्योवरण शरण करि अपने विधि सों बांटि दई।
विट्ठलनाथ प्रताप तेजतें तीनो ताप गई।
श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल गिरधर तीनों एक सई।
नव प्रकार आधार नारायण घोष लोक निवई।

दशधाभक्ति-परमानन्द की वाणी में :—

ताते दशधा भक्ति भली।
जिन जिन कीनी तिनके मनते नेक न अनतचली।

श्रवण परिक्षित से राजर्षि कीर्तन करि शुकदेव ।
सुमिरन करी प्रह्लाद निर्भय भये श्रीपति श्रीपद सेव ।
पृथु अर्चन सुफलक सुत वन्दन दास्यभाव हनुमन्त ।
सखाभाव अर्जुन वस कीने जे प्रभु कमलाकन्त ।
आत्म निवेदन वलि करि राखे हरि कूं अपने पास ।
अविरल प्रेम भयो गोपिन को बलि परमानन्ददास ।।

पुष्टि मार्गीय वैष्णव में एक कालावच्छिन्न दशधाभक्ति निहित होय है—जैसे शयनोपरान्त वार्ताश्रवण। तथा सतत कीर्तन श्रवण। कीर्तन—प्रभु सन्निधि में कीर्तन करनो। नित्य सेवा समय स्मरण। सदाँ प्रभु चिन्तन। प्रभु सेवाको तथा मन्त्रादि चिन्तन स्मरण। पादसेवन तुलसी समर्पण। चरणस्पर्श अर्चन। शृंगार भोग सिद्ध करि अंगीकार करावनो वन्दन। दंडवत् सायं प्रातः आरती। पश्चात् दास्य—सेवक ही दास होय सतत भाव राखि निभावनो सख्य—गज्जन धावन समान प्रभु के सुखार्थ बाल भावसो सख्यता सो पलना झुलावनो खिलावनो आत्मनिवेदन समर्पण सर्वस्वभाव समर्पण अरु तुलसी पधराते समय ब्रह्म संबंध गद्य मन्त्र उच्चारण तथा जपादि में दशमी भक्ति प्रीतिसो गोपीन के भावसों।

माधुरी लीला प्रेमलीला के अनेक पद तथा भाव हैं। स्नेह प्रीति विना कछु कार्य न बने अतः प्रधान तो प्रेन मार्ग ही है।

रामदास—चलि सखी चलि अहो व्रज पैंठ लगी जहाँ बिकत हरि प्रेम।
सब सौदा प्राणन के पलटे उलट धरो यह नेम।
आन भांति पायवो दुर्लभ कोटिक खर्चो हेम।
रामदास प्रभु रतन अमोलक सखी पाइयत एम।

गोविन्द स्वामी—प्रीतम प्रीतिहि सों पैये।

परमानन्द—हरि सो एक रस प्रीति रही।

सूर—जाको मन लाग्यो गोपाल सो ताहि और कैसे भावे ?

परमानन्द—प्रीति तो नन्द नन्दनसों कीजे।

छीत—प्रीतम प्रीत ते बस कीनो।

प्रेमी जनन की प्रेम साधना के दशलक्षण दशधर्म बताये हैं जो पदन में मिलै है।

चक्षुःप्रीति अन्तरहेतु मनःसंग संकल्पोत्पत्ति
तनुता, विषय-व्यावृत्ति, लज्जा, प्रणय, उन्माद, मूर्छा प्रेमाधिक्य।

दशधर्म के दश पद—

चक्षुः प्रीति—ऐरी जरि जाओ लाज मेरे कौन काज कमल नयन नीके देखन न दीने। —नन्ददास

अन्तर हेतु—नन्द सदन गुरुजनन भीर तामें मोहन वदन नीके देखन न पाए। —नन्ददास

मनःसंग—विधाता विधिहू न जानी। —गोविन्द स्वामी

संकल्पोत्पत्ति—भाई मेरो माधव सों मन मान्यो। —परमानन्द

तनुता—बात हिलग की कासों कहिये। —चत्रभुजदास

विषय व्यावृत्ति—देखि जीऊँ माई नयन रंगीलो। —कृष्णदास

लज्जा प्रणम—बैठी पिय को वदन निहारैं। —हरिराय रसिक

उन्माद—राधिका आज आनन्द में डोले। —श्री भट्ट

मूर्छा—सूरदास व्रज की पौर ठाडो तिन मोय मोह लई। —सूर

प्रेमाधिक्य—पिय तोहि नैनन ही में राखों। —हरिराय

पैयांपरन न दीनी आँको भरि लीनी। —नन्ददास

सेवा

सेवक की सुखरास सदा श्रीवल्लभ राजकुमार।
दर्शन ही प्रसन्न होत मन पुरुषोत्तम अवतार।
—छीत स्वामी

आप सेवा करी सीखवे श्रीहरि भक्ति पक्ष वैभव सुदृढ़ कीधो।
—गोपालदास जी

जो पै श्री विट्ठल रूप न धरते।
तो कैसे घोर कलियुग के महापतित निस्तरते।
सेवा रीत प्रीति व्रजजन की श्रीमुखते विस्तरते।
श्रीविट्ठल नाम अमृत जिन लीनो रसना सरस सुफलते।
कीर्ति विशद सुनी जिन स्रवनन विषय विष परिहरते।
गोविन्द बलि दर्शन जिन पायो उमग उमग रस भरते।
अपुन पे आपुहि सेवा करत।
आपुन ही प्रभु आपुहि सेवक अपनो रूप उर धरत।
आपुन नेम धर्म सब जानत मर्यादा अनुसरत।
छीतस्वामि गिरधरन श्री विट्ठल भक्त वत्सल वपुधरत !

पंचतत्व :—

पुष्टिमार्ग के पाँच तत्व हरिदासजी ने स्थिर किये, वो हैं—
प्रथम तत्त्व-सेव्यनिधियां—श्रीजी, नवनीत, मथुरेशजी आदि ।
दूजो तत्त्व-श्रीगिरिराज जी (गोवर्धन) ।
तीजो तत्त्व—श्री यमुनाजी ।
चौथो तत्त्व—श्री व्रजभूमि ।
पाँचवों तत्त्व—ध्यान श्रीनाथजी को तथा लीलानको ।

पुष्टि मारगना पांच तत्व नित गायेजी ।
तेना जन भजन मना पाप सर्वे जायेजी ।
श्रीजी श्रीनवनीत प्रिया सुखकारी जी ।
सुमिरो मथुरानाथ कुञ्जबिहारीजी ।
श्रीविट्ठलराय द्वारकेशगिरधारी जी ।
श्रीगोकुल चन्द्रमाजी मदन मोहन पर वारी जी ।
प्रथमतत्व श्रीगोवर्धन धर नित गाये जी ।
नटवर लालनूं गमतूं सर्वे थाये जी ।
बीजो तत्व श्री गिरिराज गोवर्धनजी ।
आ त्रीजो तत्व श्री जमनाजी ने जाणो जी ।
करो स्नान जलने पान ए सुख मानोजी ।
आ चोथो तत्व श्रीव्रज भूमीने कहिये जी ।
नित उठ वैष्णव जन पद रज पैयेजी ।
आ पांचमो तत्व श्रीजीनू ध्यान निरन्तर कीजेजी ।
तोमन वांच्छित ना फल सर्वे लीजेजी ।
ए पांच तत्व श्री व्रह्मादिक ने दुर्लभ जी ।
श्रीवल्लभ प्रभु प्रकट प्रमाण कर्या सब सुल्लभजी ।
ए शोभा जोइ हरिदास जाय वलिहारी जी ।
ए लीला गाय नित्य जे नरनारी जी ॥

पधरावनी गुरून कीः—

वैष्णव अपने घर गुरुन को साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम प्रभु नन्दराज कुमार मानि पधरावे ताको पधरावनी कहै । ये वल्लभवंशज ही पधारें ताको पधरावणी कहत है । वैष्णव अपनो अहोभाग्य मानि सहकुटुम्ब सहपरिवार सर्वस्व समर्पण की भावना करि पूजन करें पादोदक लेय प्रक्षालन करि पापताप दूर करें प्रभु श्रीकृष्ण

ने उद्धवजी के प्रति अपनी पूजा प्रकार में दश विधि दश स्थानन में आपको सरूप-मान पूजाग्रहण करत है "आतिथ्येन तुविप्राग्रे" (११-११-४३) वे दशस्थान या प्रकार वर्णित किये हैं "सूर्योग्नि ब्राह्मणो गावो वैष्णवो खं मरुज्जलम् । भूरात्मा सर्वभूतानि भद्र पूजा पदानि मे (११-११-४२) तासो पुष्टि मार्गीय बालकन में गुरु में पाँच सरूप एक साथ मिलत है अतिथि ब्राह्मण अग्नि सरूप वैष्णव तथा गुरू अतः पधरावनी करि पूजा करै है ।

प्रश्न—क्योंजी, पुष्टिमार्ग में तो पूजा नहीं है फेर ये पूजा क्यों करावें ?

उत्तर—पूजा नहीं है सेवा है । जा दिन पधराबनी करें तब घर पधारते ही आतिथ्य सत्कार में चरण धोवे तिलक करें भेंट धरें वस्त्र माला तथा मुद्रा भूषणादि तथा कछू अरोगामें हू यदि न अरोगावे तो ताकी मुद्रा भेट धरें । सर्वप्रथम श्रीनाथजी की भेंट लेत है । अरु सेवा देत है ।

पधरावनी सो कहा होय । श्रीमद् भागवत तथा अन्य पदादिकन सो या प्रकार वर्णन मिलै हैं—

स्वागतं ते नमस्तुभ्यं ब्रह्मन् किं करवामते ।
ब्रह्मर्षिणां तपस्साक्षात् मन्ये स्वार्थं वपुर्धरम्
अद्यनः पितरस्तृप्ता अद्यनः पावितंकुलम् ।
(श्रीमद् भाग० ८-१८-२६)

प्राह नः सार्थकं जन्म पावितं च कुलं प्रभो
पितृ देवर्षि यो मह्यं तुष्टा ह्यागमनेन वाम्
भवन्तो किल विश्वस्य जगतः कारणम् परम्
(श्रीमद् भाग० १०-४१-४५-४६)

बलिराजा ने प्रभु को ब्राह्मण वामन रूप सो पधराये अरु अपनो जन्म सफल मान्यो तथा सुदामा माली हू ने अपनो जनम सफल कीयो प्रभु को पधारे देख के ये पधरावनी को सरूप हैं जीवन सफल हेतु (देखो—श्रीमद् भागवत—१०-८४-७).

पुष्टि मार्ग में सब सेवा व्यवहार प्रभु की आज्ञा प्रधान मानिकै होय है । सर्वप्रथम श्रीगोवर्धनधर ने जगद्गुरु गुसाईं जी श्री विट्ठलनाथजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरिधरजी सों आज्ञाकिये मैं तुम्हारे घर सतघरा मे चलूंगो । आज्ञा मानि आपकूं अपने घर पधराये तब सों ही पधरावनी प्रारम्भ भई । तासों ही समाधानी विनती कराय पधरावे । आपने सर्वस्व समर्पण कर दियो ।

वार्ता प्रसंग में हू पधरावनी को वर्णन अनेक स्थान में मिलत है । (देखो वार्ता ३४ गुसाईंजी को सेवक वैष्णव) ।

याको घर निपट संकीर्ण हुतो तोऊ पधरावनी करी पधरावनी सो घर में तथा पास में रहिवेवारे अनेक जीवन को उद्धारहू भयो तासों पधरावनी करावे ।

भगवदीय वैष्णवहु पदन में गाये है। जब प्रभु गुरु पधारें तब कैसो आनन्द आवे तथा मन प्रसन्न होय :—

तनकी तपन गई महल मेरे आये लाल ।
नैनन मग निहारों पलकन पेडो झारों कर राखो उरमाल ।
मुख देखे सुख होत सखीरी प्रेम प्रीति प्रतिपाल ।
सूरदास प्रभु वेग ही दरस दियो बहुत जु भई हौं निहाल ।।

कल्याणराय जी

भले पाउँ धारो मेरे अगनां जशोदा के छगन मगना ।
जे जे पग धरों ते ते मेरी अखियन वारडारों हार चीर कंगना ।
कण्ठमाल कण्ठ सोहे नगन जटित सोहे पाँय पेजनियाँ खेलो दोऊ संगना ।
कल्यान के प्रभु गिरिधर देखे सुख भयो गयो दुख दूर भयो मन मगना ।

कृष्णदास

मेरे घर आवहु नन्दनन्दन मोहन सर्वसु दैहों ।
रूपरासि गिरिधरन छबीले लाल बलैया लैहों ।
निरखि कमल मुख नयन सफल करों रसना हरिगुन गैहों ।
कृष्णदास प्रभु मन्मथनायक हरखि कंठ लपटैहो ।

नन्ददास

माईरी लालन आयेरी मेरे तन मन धन सब वारों ।
हों वलि गई सखी आजकी आवनपर पलकन सों मग झारों ।
अति सुकुमार पदतरन काँकरी बीन बीन लै टारों ।
नन्ददास प्रभुनन्दनन्दन सों ऐसी प्रीति नित धारों ।

छीत स्वामी

जब ते भूतल प्रकट भये ।
तब ते सुख वरखत सबहिन पै आनन्द अमित दये ।
श्रीवल्लभ कुल कमल अमल रवि आनन्द उदधिउदये ।
छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल युग युगराज जये ।
श्री वल्लभजी को देखे जीजै ।
नख सिख सुन्दरता को सागर रूप सुधा रस भरि भरि पीजै ।
वचन माधुरी परम मनोहर भक्तजनन सबकों सुख दीजै ।
छीतस्वामी वल्लभजू के पद पंकज अपने उर में लीजै ।

प्रश्न—पधरावनी में कहा करनो चाहिये ?

उत्तर—जा दिन पधरावनी करै घर पधरावे तब स्वच्छता पवित्रता घर में करनी । वन्दन माल बाँधनी । सजावट यथाशक्ति करनी । देहरी सों पगमण्डा बिछावने । जहाँ विराजवे को स्थान निरधार्यो होय तहाँ विराजमान करि सहकुटुम्ब सह परिवार उपरोक्त भावनासो दर्शन चरण स्पर्श चरण प्रक्षालन करि अतर, वस्त्र, पुष्प माला भेंट धरि उत्साहपूर्वक आरती नौछावर करै । भोग धरै । ताको प्रसाद समस्त परिवार कूं बाँटे । पूर्व तिलक करै । फेर भेट धरै । संग आये भयेन कोंहू सेवकी नौछावर देय । उन सों प्रसन्नता सो विनीत भाव सों वचनामृत सुने । यदि वे वचनामृत न करें तो रूप माधुरी पान करै ।

केशर स्नान :—

प्रश्न—स्नान काहे सों कहैं ? ये क्यों करै ? यामें कहा होय ? तथा कब होय ? वल्लभकुल कौही काहे कों होय ?

उत्तर—केशर सो मिश्रित जलसों स्नान करावनो । चरण धोने यही केशर स्नान करावनों कहैं ।

अपने घर में तथा गुरु गृह में जायके अपनी मंगल प्राप्ति, अमंगल निवृत्यर्थ गुरु पूजा करै । ये स्नान केशर स्नान कह्यो है । कब करावे सो यह सब समय गुरु आज्ञा लेय कराय सके है । वल्लभकुल को ही केशर स्नान कह्यौ है । तथा होय है ताको आशय या प्रकार है । जगद् गुरुवल्लभ महाप्रभु को कनक (स्वर्ण) को अभिषेक कियो गयो । कृष्णदेव राजा ने कियो । सो हम तो अकिञ्चन कहा लायक । तासों केशर स्वर्णवत् मानिकै स्नान करावे । पूजन करै । तासों वल्लभकुल को ही केशर स्नान होय है ।

आचार्य गुरु रूप प्रभु समान अतिथि वैष्णवाग्रणी है । तासों आपके कुल को केशर स्नान होत है ।

भगवान् श्रीकृष्ण बलराम को बलि राजा के पाताल में पधारे तब विधिवत् पूजा करी । ऐसे ही विधिवत् केशर स्नान होय है । प्रथम तिलक करै । फेर चरण धोवे । फेर वस्त्र भेंट धरै । फेर भेंट धरै । नौछावर करै तथा अरोगावन की सामग्री भेंट धरै तथा वस्त्राभूषण सुगन्धित द्रव्य यथाशक्ति अर्पित करि अपनौ अपने परिवार कौ जीवन पावन करै । अहोभाग्य माने ।

श्रीमद् भागवत में कई स्थान में विधिवत् पूजा वर्णन कीनी है । देखो श्रीमद्भागवत १०-४९-

केशर स्नान की विधि यह है। प्रथम केशर स्नान करावे की आज्ञा लेवे। फेर तिलक करै। फेर सकुटुम्ब सपरिवार जल सों पाद प्रक्षालन करै। फेर वस्त्र भूषण भेंट धरै। अरीगन की तपेली करावे। फेर आरती करे। नौछावर करे। भेट धरे। या प्रकार केशर स्नान गुरुन को करिवेको वर्णन पद्म पुराण तथा अन्य पुराणन में मिलै है।

गौतम-अम्बरीष संवाद में कह्यौ है :—

अगुरुं कुकुंम चापि कर्पूरं चानुलेपनम्।
गुरु पादाम्बु संलग्नं तद्वै पावन पावनम्॥

तासों केशर स्नान करावनो जल चरणोदक लेवे को हू वर्णन या प्रकार मिले है "गुरु पादोदकं पेयम्"। वा दिन प्रसाद तपेली कोहू लेनो। गुरु चरणोदक सब लेवे भगवदीय रामदासहू प्रभु को स्नान वर्णन तथा वस्त्रादि धरावन को वर्णन करे हैं। जब केशर स्नान करावे तब यह माने आज जयंती है। आज जन्मदिन है। आज ही वसुदेव देवकी की भाँति हमारो बन्धन मुक्त होयगो तासो केशर स्नान किये है।

राग सारंग

सबन सों कहत जसोदा माय जनम दिन लाल को पुनि आयो।
केशर चन्दन धोरि कान्ह बलि प्रथम न्हवाये।
नाना वसन अनूप कनक भूषण पहिराये॥
रोरी को टीको दियो अंजन नैन लगाय।
देत निछावर रोहनी फूली अँग न समाय॥

चरण धराई :—

प्रश्न—क्योंजी, चरण धराई काहे सों कहें?

उत्तर—वैष्णव अपने अन्त समय में वस्त्रन में चरणचिन्ह धराय सेवा पधरावे।

अन्त समय में चरण पालि में धरावै "अन्ते मतिः सा गतिः॥" श्री सूरदास जी जब देह विसर्जन करन लगे तब श्री विठ्ठलवर पधारे। अरु यह पद भेंट कियो "खञ्जन नैन रूपरस माते।" तब सों चरण धराई प्रारम्भ भई। याही प्रकार परमानन्ददासहू के अन्त समै श्री गुसाईंजी दर्शन दैवे पधारे हुते। अन्य भक्तहू ने चरण प्रताप कह्यौ हैं—

तुम्हारे चरण कमल की शरण।
राखों सदा सर्वदा जन को विट्ठलेश गिरधरण।

तुम बिन और नहीं अबलम्बन भवसागर तरण।
भगवानदास जाय बलिहारी त्रिविधा ताप उर हरण॥

आचार्य ने सुबोधिनी में हू कही है—

यत्पाद पङ्कज पराग निषेचन"""""।

तत्र प्रथमं भक्तिमार्गे प्रवृत्तस्य तत्र पुष्टस्य न केनापि चापाकर्ष इत्याह। यस्य भगवत पाद पङ्कजस्य पराग भूता ये सेवका तेषां निषेवे निषेवणं तेन तृप्ताः"

आगे हू कहत है। 'चरण पंकज करोत्विति प्रार्थ्यते।'

या प्रकार अनेक उदाहरणन सों चरणधराई होत है। चरण चिन्ह वस्त्र में धराय के सेवा करत है। ऐसी अनेकानेक वार्ताहू है।

कृष्णदास हू कहे है :—
आज को दिन धनधन री माई नैनन भरि देखे नन्दनन्दन।
परम उदार मनोहर मूरति ताप हरण नख पूजित चन्दन।
रसिकराय गोवर्धनधारी रूपरासि युवतिन मन फन्दन।
ध्वजा वज्र अंकुशजु विराजत कृष्णदास कीने पद वन्दन।

तपेली :—

प्रश्न—क्योंजी पुष्टि मार्ग में तपेली काहे को कहैं? भोजन अरोगण क्यों न कहै?

उत्तर—प्रभु को ही अरोगावन को आरोग कहत है। सामग्री हू प्रभु के हितार्थ आवे सो गुप्त राखनी चहिये। तासो सामग्री हू न कही। यहां महाराजन को अरोगायवे कूं तपेली कही। ताको आशय यह पवित्रता स्वच्छतासों जो पात्र तप जाय सकै, तिन्हें तपेली कहैं।

अथवा

पुष्टिमार्गीय आचार्य सब याज्ञिक [यज्ञ करन बारे] तथा यज्ञोच्छिष्ट अरोगवे बारे हैं। तासों तपेली आज्य स्थाली जो यज्ञ में आवै ताहि तपेली शब्दसों पूरित करि अंगीकृत किये। यह आज्यस्थाली में हू यज्ञ सामग्री सिद्ध होय है। तासों तपेली कहै हैं।

यज्ञोच्छिष्ट-प्रसाद-अधरामृत

यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता जगद्गुरु श्रीवल्लभ महाप्रभु को नाम है। अरु नित्य यज्ञ ही सेवा है। अन्नकूटादि महायज्ञ है। तासों प्रसाद अधरामृतही यज्ञोच्छिष्ट होय है।
यज्ञ शिष्टामृतभुजो; यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यते सर्वकिल्विषैः (गी ३-१३)

देव यज्ञादीन् निर्वृत्यर्थतोच्छिष्टं अशनं अमृताख्यं अशितुंशीलं येषां सन्तः मुच्यन्ते सर्वे किल्विषैः सर्व पापैः चाल्यादि पञ्चसूनान्तकृते प्रमादः कृतेः हिंसादि जनितैश्च अन्यैः

कण्डनं पेषणं चुल्ली उद कुम्भंच मार्जनी।
पञ्चसूना ग्रहस्थस्य पञ्चयज्ञात् प्रणश्यति ॥

शंकराचार्यः—

इन्द्राद्यात्मना अवस्थित परमपुरुषाराधनार्थं तया द्रव्यांणि उपादाय विवच्य तैः यथावस्थितः परमपुरुषं आराध्य उच्छिष्टासनेन ये शरीर यात्रां कुरुते तेतु अनादि कालोपार्जित किल्विषैः आत्म्ययाथात्म्यावली तेन विरोधिभिः सर्वैं मुच्यन्ते।

कृष्णाधरामृतां स्वाद सिद्धिरत्र न संशयः

वल्लभाचार्य—

अधरसिधूना पापयस्तनः। —सर्वोतमें
सर्वथा असाध्ये अमृतमपिपाय्यपे ॥
अति गोप्यान् नव रसान् पायन्ति
मत्प्रसादादवाप्नोतिशाश्वतं पदमव्ययम्। —गीता

और हूँ—'यह प्रसाद हौं पाऊँ श्री जमुनाजू।'

यहाँ प्रसाद कृपा अनुग्रह मांगत है। उपरोक्त में अधरामृत मांगत है। यही यज्ञ उच्छिष्ट है। प्रसाद अधरामृतादि है। ऐसे अनेक पद है—

'शेष प्रसाद रह्यौ सो पायो परमानन्द दास है संग।' —परमानन्द
'गोवर्धनेश गिरिधर प्रसाद को ब्रह्माहू को मन ललचात।'
—गो. नि. गोवर्धन जी।

वार्ता में प्रसादसो एक विट्ठलवर के अधरामृत थालीसो ५०० वैष्णवनने प्रसाद पाय लियो तोहू खूट्यौ नहीं। यह है महाप्रसाद महत्ता। वार्ता १७५ गोपालदास बडनगरानागर ये गोकुल गये पाँचसो वैष्णव संगहुत श्री गुसाईजी ने भोजन किये। पातर में सों पाँच सो वैष्णवननै प्रसाद लियो। अरु प्रसाद खूट्यौ नहीं। तब गुसाई जी ने पूछी जौ कैसे तब गोपालदास ने कही आखी विश्व को पूर्ण तृप्त करत है तो आपकी कृपासो मेरे पूर्ण मनोरथ होयतो कहा आश्चर्य।"

प्रश्न—क्योंजी जब भोग धरें तब सब सामग्री ज्यों की त्यों धरी रहे फेर प्रभु अरोगे कहा। तथा वामेंते रंच कहूं घटै नाहि या को कछु रहस्य हैं।

उत्तर—प्रभू पूर्ण काम है। अरोगि कै पुनः पूर्ण करि देय तथा आप ताको सारभूत रस अरोगैं।

वेद में एक मन्त्र है—

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादायपूर्णमेवावशिष्यते ॥

अब शेष मेंहू पूर्ण रहत हैं। क्योंकि आपपूर्ण काम हैं। वार्तामेंहू प्रभू आज्ञा किये है। (वार्ता आचार्य श्री की ५१ मी)।

मण्डली :—

ग्वाल मण्डली, वैष्णव मण्डली, भक्तमण्डली, कीर्तनमण्डली, भजनमण्डली।

प्रश्न—क्योंजी, मण्डली को सरूपभाव कहा; तथा मण्डली काहे को कहै ?

सुबोधिनी में कह्यौ है—"गोपी मण्डल मण्डितः"

गोपीनां मण्डलैरनेक विधिर्मण्डित उत्सवोप्यनेक विधिर्ब्राह्मणादिभि मण्डलै र्मण्डितो भवति तत्रापि तुल्यभाव रसार्थमेकी कृता पृथक् मण्डलभाजस्तैरपि मण्डितः। पोषकाश्चरसास्तत उत्पादिता इति उतरोत्तर मण्डलैः पूर्वपूर्व रसपोप्यत इति। नायंरसोऽन्यत्र भवितुमर्हति"।

मण्डली—मण्डल बनायके बैठनों, नृत्य करनों, तथा पृथक-पृथक मण्डल बनायके कार्यक्रम वा उत्सव के रस वृद्धि में सहयोगीहोनोही मण्डली कही। सारी पुष्टि मार्ग की परिपाटी सेवा तथा उत्सब महोत्सव गोपी भावभावित तथा उनके अनुकरणीय होवे सो मण्डली कही गई। ये मण्डली महोत्सवादि में ब्राह्मण लोगहू पृथक् पृथक् मण्डल मण्डित करैं। परन्तु वह सब रस तथा प्रस्ताव की शोभा बढ़ाने हेतु मण्डल रचै तासोही मण्डली कही गई। उन पृथक्-पृथक् मण्डलसों सोभाहू बढ़े हैं।

ग्वाल मण्डली :—

पुष्टिमार्ग में ग्वाल मण्डली जामें चित्रजी वस्त्रजी तथा प्रभु विग्रह छोटे-बड़ विविध स्वरूप सो वल्लभाचार्य वंशजन के मन्दिर में विराजे और वे ही तथा अन्य पुनः पधराय पुष्ट कराय सेवा करैं अरु जब सेवा न बने तब पुनः गुरुगृह पधरावे। उन सरूपन को इकट्ठे विराजनो ही ग्वाल मण्डली कही गई।

प्रश्न—कई आधुनिक वैष्णव अपने प्रभु को गुरुगृह में न पधराय। अपने घर ही राखि आज्ञा की हेर फेर कराय लेत है जैसे मिश्री भोग की आज्ञा में सखडी अनसखडी में मिश्रीभोग की कहत है। इनके यहाँ ठाकुरजी ग्वाल मण्डली में पधराय देयगें अरु सामान वैभव पास में राखि लेयगें। हम जिनकी ठाट वाट वैभव बिभव सों सेवा करै व वहाँ पड़े रहेंगे न तो स्नान होय न कछु शृंगारादि। ये तो सम्पति लेयले अरु ठाकुरजी को सरूप जाने नहीं आदि।

उत्तर—जब ठाकुरजी पधरावे, पुष्ट करावे सेवा तथा भोग की तो तत्तत् घर के आचार्य अपने घर के स्वरूप भावना सो वो सरूप पधराय के सेवा की आज्ञा देत है। तामें मिश्री सखडी अनसखडी आदि की हू। ताको आशय यह सारी सेवा सरूप गुरु आज्ञा सों ही होत है। कह्यो भी है सेवा कृतिर्गुरोराज्ञा" सेवा की कृति गुरु आज्ञा सों। जब सेवा न बनै तो गुरु घर में ही पधरावने चाहिये। कारण गुरु के द्वारा तासरूप में वा निधि को अंश प्रवेश होय है। अरु वो निधि वा वैष्णव सेवा अंगीकृत करें। जैसे उज्जैन में कृष्णभट्टजी ने बसन्त बिना बसन्त खिलाई। अरु श्री जी रंग सो रंग। तब गुसाईं जी ने व्रतोत्सव टीप की आज्ञा देकर सर्वत्र एक उत्सव की परिपाटी चलाई अरु प्रभुश्रम देखिए बन्धान बाध्यौ। वैष्णव पृथक न माने तासो जो जा घर के प्रभुनिधि है ताके अंगभूत वा वैष्णव के घर के सरूप भये।

ग्वाल मण्डली में एक सरूप प्रधान होय है। बाकी असंख्य स्वरूप यों ही विराजे ताको आशय यह है—जब ब्रह्माजी ने वत्सहरण किये तब प्रभु ने अपने ही रूप या वस्तु बनाई। वे सब ग्वाल बाल, बछरा आदि प्रभु समीप भई। पर एक प्रभु के सम्मुख सब अगल बगल पास में विराजे। जैसे कमल की कर्णिका कमल की शोभा बढ़ावें

कृष्णस्य विश्वक् पुरराज मण्डलैः रम्या ननु फुल्लदृशो व्रजार्भकाः
सहोपविष्टे विपिने विरेजुः स्वच्छा यथाम्भोरुह कर्णिकायाः॥
श्रीमद् भाग० १०-१३-८

ग्वाल बालन के बीच मण्डली बनायके बिराजे तासों ही ग्वाल मण्डली कही गई। प्रभु लीला विग्रह जितने गोप ग्वाल हुते ते सब प्रभु सरूप ही हते।

तासों यह सिद्ध भयों एक एक वस्तु प्रभुमय हुती अरु जब ब्रह्मा हार मानि आयो तब वो सब सरूप प्रभु में विलीन होय गये। जब तक ब्रह्मा ने अपने लोक में राखे तब तक उनकी सारी सेवा उन व्रज भक्तन ने कीनी।

(श्रीमद् भागवत १०-१३-२२—२६)

अरु फेर वे स्वरूप प्रभु में समाविष्ट भये। तैसे ही गोस्वामी बालक उन स्वरूपन को पधराय अपने निधि सरूप में तिरोहित करि देय अरु एक सरूप में निहित भये बाद भोजन आदि सेवा ग्वाल मण्डली में होय हैं। अरु सारी सम्पति आप अंगीकार करे वामें पृथक् सत्व न रहे।

समुद्र या कुआँ सों जल की एक लोटी निकारके पुनः वामें डारके कोई कहै मेरी लोटी को जल वोही निकरे। कहाँ सो निकारेगो? वो सो वामें विलीन है गयो। ब्राह्मण विबाहादि कर्मन में सुपारी में देवत्व स्थापित करे अरुजब जो जो कार्य

विवाहादिक वे वा देवता की साक्षी में पुनः वो सुपारी के देवता वा ब्राह्मण के मंत्र द्वारा प्रकट होय अरुबिलीन होय जाय अरू वो सुपारी ब्राह्मण लेय जाय के नहीं? ताही प्रकार प्रभुकी सारी वस्तु गुरू अंगीकार करे तौ कहा आश्चर्य? अरू जब सबन के घरन में सेवा के प्रभू गुरू की कानिसौ गुरूवत्विराजे धरोहर के रूप में ता धरोहरसों सब सुखभोगी के वो धरोहर पुनः वाको देय तव वामें अपनी सत्ता कैसे माने? याही प्रकार ग्वाल मण्डली के प्रभु ग्वाल मण्डली में विराजे।

श्रीनाथजी में सब सरूप पधारे तब तथा पुनः अपने अपने घर पधारे तब श्रीजी सन्मुख करायके तत् तत् घर पधारें।

वैष्णव मण्डली :—

या मण्डली में वैष्णवमात्र को बुलाय एकत्र करि भगवद् चर्चा कीर्तन गुणगान करें या सत्संग में सब आनन्दमग्न होय जाय तथा लीला दर्शन करि कृतार्थ होय हैं। या वैष्णव मण्डली में प्रेमीभक्त सन्त हरि गुरू वैष्णव सेवापरायण आइके सुख समुद्र की लहर बढ़ावें। हरिदासजी हू गाये।

गायोन गुपाल मन लाई के निवेर लाज।
पायो ना प्रसाद साधु मण्डली में जायके।

तासो या मण्डली में लाज अभिमान आदि छोडि के अवश्य जानो। वहाँ चुपचाप बैठि के रसपान करनो। येहू मण्डलाकाहर बैठत है। यामें प्रभु स्वयं आयके विराजत है।

तुलसीदासजी ने वैष्णव मण्डल के प्रति वैष्णव अवैष्णव को वर्णन कियो।

हिय फाटहु फूटहु नयन जरहु सो तन किहि काम।
द्रवहि स्रवहि पुलकहि नहीं तुलसी सुमिरत राम॥

या सों हृदय शुद्ध होत है अरू अनेक भक्तन को मण्डल में प्रभु दर्शन होत है। श्रीपरमानन्ददास जी को कपूर क्षत्री के गोद में विराजे श्री नवनीत प्रिय के दर्शन प्रत्यक्ष किये। याकों ही कीर्तन समाज कहत है। यामें कीर्तनकार कीर्तन करे। वा समें उनके सरूप ललिता चन्द्रावली विशाखाजी आदि होत है। वेनिकुञ्जसों पधार कर प्रभुको या मण्डली में पधारवे की प्रार्थना करत है। या मण्डली में वार्ता वचैया में सतसंग होय प्रश्न उतरहू होत है।

भक्तमण्डली :—

या मण्डली में भक्तगण प्रभुगुण गान लीला चिन्तन तथा रसास्वादन में देहानुसंधान भूल जाय है। भावविभोर होय है तथा अपनपौ खोय के रसास्वादन करत है। आनन्दाश्रु छोड़त है देहगेह सब भूल जात है। ताको ही प्रभु ने स्वयं आज्ञाकरी है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये नच ।
मद् भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

याको वर्णन आचार्य हरिरायजी नेहू कियो है। जामें एक वैश्य को या मण्डली में विरोध हुतो तब स्वयं हरिरायजी पधारे अरु भक्त मण्डली में नृत्य करन लगे अरु वो वैश्य मुग्ध होय सेवक वन्यो। पद मेंहू वर्णन निज जन को कीनो है। निज जन से भक्त ही अध्याहार है।

प्रकट ह्वै मारग रीत बताई।
भोजन करि विश्राम छिनक लै निज मण्डली बुलाई।
बेणु गीत पुनि युगल गीत की रस बरसा बरसाई।

अतः या मण्डली में उपदेश सत्संग (प्रश्नोत्तर) तथा भक्ताभिलषित लीला दर्शन होत है। याही को भक्तमण्डली कही गई।

वार्तान मेंहू या मण्डली को विशद वर्णन कह्यो गयो है। वार्ता ८४ गुसाई जी की एक वैष्णव क्षत्री मथुरा निवासीहुते।

कीर्तन मण्डली किंवा समाज :—

ये कीर्तन मण्डली मंगल दिवस प्रस्तावोपरान्त या आगम में तथा गुरुन के जन्मदिन उत्सव तथा मृदंग झांझ सारंगी बाजादि सों कीर्तन होत है। कोर्तन प्रकार पुष्टि मार्ग में चार है—१. नाम कीर्तन, २. गुण कीर्तन, ३. लीला कीर्तन तथा ४. आश्रय दीनता के कीर्तन।

बालकन के जन्मदिन उत्सवादिन में चार वधाई जन्माष्टमी की तथा चार महाप्रभु की, चार विट्लवर को तथा आशिष के पद होत है। वर्तमान बालकन की तथा लीला प्रवेश की वधाई अलग-अलग होत है। कीर्तन समापन होवे पै वर्तमान बालक होय तो कीर्तन कारन को तिलक करे। सर्वप्रथम भेट श्रीजीकी निकारे वाद कीर्तन कारन को देय तथा लीलास्थ बालक होय तो उनके जन्मोत्सव पै पुस्तक पै तिलक करि भेट धरे।

प्रश्न—क्यों जी, ये कीर्तन मण्डली कव सों चली ?

उत्तर—सर्व प्रथम शुकदेवजी ने जब कथा कीनी हुती तब सो ये कीर्तन पद्धति चली। ये कीर्तनन के निर्माता श्री जयदेव महाभाग भये। शुकदेव के समय कीर्तन को वर्णन या प्रकार मिले हैं—

प्रह्लादस्ताल धारी। तरल गतिस्तथा चोद्धवः कांस्यधारी। वीणाधारी सुरर्षिः स्वर कुशल तया राग कर्ताऽर्जुनोभूत्।

इन्द्रोवादीन्मृदंगं जयजय सुकरा कीर्तने ते कुमारा।
यत्राग्रेभाव वक्ता सरस रचनया व्यास पुत्रो बभूव ॥

या भांति कीर्तनारम्भभये। अरु आजहू होत है। कीर्तनन में सरसरस बर्षे साहे समाज कहे है।

प्रश्न—क्यों जी कीर्तन समाज में लोग जोर-जोर सों गावें बजावें काहे को ?

उत्तर—आचार्य श्री ने सुबोधिनी में आज्ञा किये हैं—

तुमुलोरासमण्डलैः। रसानां समूहेरासे मण्डले यथानाधिकारत्वेन शूद्रस्य वेद श्रवणे तदध्येतुःमन्त्रस्मशक्तिह्रासे शूद्रस्य पाप संभवः। तथेतर भक्तातिरिक्ताना मेतच्छ्रवणेप्यनधिकारादस्य रसस्यालौकिकत्वाच्छ्रवणे मण्डले सर्वेषां रसो गच्छेत्।

रस के समूह को ही मण्डल कहत है। वही मण्डली बनायके और जिनको अधिकार नहीं है वे शूद्र बेद श्रवणाधिकारी जो नहीं यदि वे सुने तो मन्त्रन को ह्रास होय तथा वे पास में होय। तासों भक्तातिरिक्त भक्तन सों अलग जनन के हेतु उनको श्रवण करायवे हेतु उच्च स्वर सों गान करें हैं।

प्रश्न—क्यों जी कीर्तनकारन कौ प्रसाद के अलग रुपैया काहे कों देत है ?

उत्तर—जा दिन समाज कीर्तन मण्डली करावे तादिन प्रभु को सामग्री अरोगावनी अरु वे प्रभु या कीर्तन मण्डली में पधारत है। हमें दृष्टि पथ में भले ही न आवे परंतु पधारत है। तासो उनपे नौछावर करत है अरु वे नौछावर प्राप्त करिवेके अधिकारी व्रजभाम ललिता चन्द्रावली आदि सहचरीही है। अरु वे सहचरी ये कीर्तनकारन के रूप सो होत है। कीर्तन आदि से अन्त तक श्रवण करनो चाहिये। बीच में उठिकै न जानो तथा कीर्तन जब तक होय तब तक कुरसी सिंहासनादि पै न बैठे। अरु कीर्तनकार गोलमण्डलाकार ही विराजै। तामध्य श्री गिरिधरलाल विराजत है। या मण्डली में हू मालाकंठी तिलकादि वैष्णव करत हैं। जय श्री कृष्ण बोलत है। माला को तात्पर्य कंठी है न कि पुष्पहार। अरु परस्पर कीर्तन भये वाद प्रसाद बितरण होय।

नाम कीर्तन :—

ये नामन को जोड़ के कीर्तन करानो करनो होय है। यामें उनके लीलान के मिलाय मिलाय धुन करै है। यह चैतन्य सम्प्रदायादि तथा अन्य सम्प्रदायन में है। पुष्टिमार्ग में नहीं। कारण यहाँ मूलरूप स्वयं प्रभु विराज रहे हैं। तो कीर्तनन में आह्वान करनो ही नामकीर्तन है। आजकालि पुष्टिमार्ग मेंहू लोग करन लगे हैं।

प्रश्न—क्योंजी, नाम कीर्तन के पद तो बहुत हैं—

उत्तर—हाँ, 'कृष्ण नाम जबते श्रवण सुन्योरी आलि ।'

'श्रीकृष्ण कृष्ण कहरे मन मेरे ।' 'श्रीकृष्णः शरणं मम उच्चरे ।'

परन्तु गान करेवे को नाहि कह्यौ । कीर्तन तथा जपादिमें भेद होय है ।

गुण कीर्तन :—

मेरे तो गिरधरही गुणगान ।
यह मूरति खेलत आँगन में यही हृदय में ध्यान ।
चरण रेणु चाहत मन मेरो यही दीजिये दान ।
कृष्णदास के जीवन गिरधर मंगल रूप निधान ।

या प्रकार बहुत से पद गुण कीर्तनन के हैं । परन्तु ये पद कीर्तन समाज में नाहि होंय । कारण यह गुणगान प्रशंसावाचक है । भक्त तो उन्हें अपने मन में अथवा सन्मुख बैठाय ब्रजलीला दर्शन करनो चाहे है ।

वह लीलाहू बाल लीला एवं कान्ताभाव रसलीला तथा गुरु के गुण कीर्तन यामें होय है । बधाईन में गुण कीर्तन होय है । जैसे गुसाई जी महाप्रभु जी की बधाईन में गुण कीर्तन विशेष है । तासो यहाँ गुण कीर्तनहू मान्य है ।

लीला कीर्तन :—

लीला कीर्तन तो होय ही है । अनेक पद बाल, किशोर, पौगण्ड कुमारादि लीलायुक्त हैं ।

दीनता आश्रय आदि के कीर्तन :—

दीनता आश्रय के कीर्तन पद के अन्त में होय हैं । विनती, दैन्य, आश्रय, चेतावनी या चार प्रकार रीति के पद मिलैं हैं । नाम कीर्तन-उदाहरण—

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजे ।
गुरु के वचन अटलकर मानहि साधु समागम कीजे ।
पढ़िये गुनिये कथा भागवत और कहा कथि कीजे ।
कृष्ण नामरस बह्यो जात है तृषावन्त ह्वै पीजे ।
कृष्ण नाम विनु जनम वादहि वृथा काहे को जीजे ।
सूरदास हरिसरन ताकिये जनम सफल कर लीजे ॥

जबहि नाम हिरदे धर्यो भयो पाप को नास ।
मानो चिनगी आग की परी पुरानी घास ॥१॥
जो जन हिरदे नाम धरे ।
अष्टसिद्धि नौ निधि कों वपुरी लटकत लार परे ।

ब्रह्मलोक शिवलोक इन्द्रलोक सब हूते उबरे ।
जो न पत्याय चितवो ध्रुबतन टार्यो हू न टरे ।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन सब दुख दूर करें ।
परमान्ददास को ठाकुर वाचा ते न टरे ॥

गुण कीर्तन :—

माई हों गिरधर के गुण गाऊँ ।
मेरे ब्रज श्याम सुन्दर है ओर न रुचि उपजाऊँ ।
खेलन आओ लाडले मोहन नेकहु दर्शन पाऊँ ।
कुम्भनदास गिरिवर धरन के लालच लगी रहाऊँ ।

लीला कीर्तन के पद—

"यह लीला सब करत कन्हाई ।"

विनती—"हरि तेरी लीला की सुधि आवे ।"

लीजे मोहि बुलाय श्रीवल्लभ ।
बहुत दिवस दर्सन विन मोको ताते मन अकुलाय ।
निसदिन अति ही क्षीण होत तन सुधबुध गई भुलाय ।
गोविन्द प्रभु तुम्हारे दर्शन बिन जुग सम कल्प विहाय ।

दीनता— मोसम कौन कुटिल खल कामी ,

जिन तन दियो ताहि बिसरायो ऐसो नमक हरामी ।
भरि भरि उदर विषय संग धायो जैसे सूकर ग्रामी ।
हरिजन छोड़ हरी विमुखन की निसदिन करत गुलामी ।
पापी कौन बडो हौ मो सो सब पतितन में नामी ।
सूर पतित को ठौर कहा है सुनिये श्रीपति स्वामी ।

आश्रय—चरण सरन ब्रजराज कुँवर के ।

हम विधि अबधि कछु नहीं जानत रहत भरोसे मुरलीधर के ।
रहत आसरे ब्रजमण्डल में भुजा छाँह श्री गिरिधरके ।
प्रभु मुकुन्द माधव सुखदाई हाथ बिकाने श्रीराधावरके ।

चेतावनी— भूल जिन जाय मन अनत मेरो ।

रहो निशि दिवस श्रीवल्लभाधीश यह कमल सो लागि बिना मोलको चेरो ।
अन्य सम्बन्ध ते सदा डरपत रहो सकल साधन हु ते कर निवेरो ।
देह निज गेह इहलोक परलोक लों भजो सीतल चरण छाँड़ अरझेरो ।
इतनी माँगत महाराज जैसो हो तैसो कहाऊ कर जोरिके तेरो ।
रसिक सिर कर धरो भव दुख परिहरो करुणा मोहि राखि नेरो ।

भजन मण्डली—

यह मण्डली वृन्दावन ब्रज के अनेक स्थानन में होय है। या में सब जने मिलिकै एक स्थान में बैठिके भजन करै है। यह चैतन्य महाप्रभु सम्प्रदाय में विशेष होय है। तथा अन्य स्थानन में जागरण करैं वे हू भजन मण्डली गाय बजाय तबला कण्ठताल झाँझ वगैरे सो संतभक्तन के गुण गावे। मीरा तुलसी आदि तथा अनेक सन्त कविन की वाणी में चेतावनी उपदेश तथा ज्ञान-निर्वेद के पद होय है तथा उनमें लोक त्याग के जीव को सन्मार्ग चलिवे को वर्णन होय है। ये भजन मण्डली चीमटा झाँझ आदि विविध वाद्य बजावैं है। ढोलकी विशेष बनाई जाय।

बारह महीना में इतने मुकुट धराये जांय :—
चैत्र वदी में रंग पञ्चमी चैत्रबदी ४ से ११ तक।
चैत्रसुदी गुलाबी गणगौर ऐच्छिक पूनम को आवश्यक।
वैसाख वद १० चार सरूप वैसाख सुद दूज—छेल्लो।

असाढ शुक्ला ११ तथा पूनम फूल के शृंगार को तथा पूनम श्रावण वद १० हांडीउत्सव १२ सोना कौ हिंडोला।

श्रावण सुद बगीचा ७-८-१३ चतुरानागा व्यरो।
भाद्रपद में सुद ११ पूनम—महादान साँझी।
आश्विन कृष्ण २-५-८-११-३० दान में।
सुदी में ८-११-१४-१५-१ रास में पाँच अध्यायक्रम सों कार्तिक दोनों आठम।
फागण वदी में ८।११ सुदी में ८-११।
कुल सालभर में ३२ धरें। ऐच्छिक आवश्वक।

मुकुट जडाऊ सोलह

१—हीरा को २—पन्ना को ३—माणक को ४—नवरत्न को ५—नीलम को ६—मोती पडाको ७—छोटे मोती को ८—पिरोजा को ९—सोना को १०—लहसुनिया को ११-१२—मीना के के दो १३—हीरा को १४—दूसरो बगीचा को १५—निकसमा मोर नीलम को जडाऊ १६—डाँक को गोवर्धनेशजी के उत्सव वारो। चितराम की पिछवाई मुख्य ६० आवें।

महाराज तिलकायतन द्वारा आभूषणादि सदा अंगीकृत—

१—गिरधर जी को प्राचीन चौखटा।

२—गोकुलनाथ जी के नूपुर पायल कुल्हे मुकुट, मोजा।

३—बालकृष्णजी के अलंकार।
४—सात बालकन की माला।
५—अक्काजी की मोती की माला।
६—हरिरायजी कों तिलक, नवरत्न को मुकुट।
७—मट्टूजी को दोलडा।
८—पाटनवारे चिमनलालजी को हार।
९—दुहेरा मनोरथकर्ता दाऊजी की पिछवाई अन्नकूट की। पन्ना कौ
१०—विट्ठलनाथजी वारेन को माणक को दोलडा।
११—गिरधारी के सुवाकृति कर्णफूल।
१२—गोवर्धनलालजी वारो हीरा को चौखटा मुकुट पाग हमेल। ये सब हीरा के सोना को हिंडोला पलना बँगला दो तथा झवा, झारी बँटा ट्रष्टी अमखोरा सब तरह की कुल्हे।
१३—वर्तमान तिलकायत गोविन्दलाल जी द्वारा हीरा को टिपारा को जोड तबल धुकधुकी पायल।
१४—भाभीजी महाराज के बेणु वेल।
१५—चिमनलालजी की पहुचीएं। गोपाललाल के बहूजी के शीशफूल।
१६—गोवर्धनेशजी के कुण्डल।
१७—दामोदरलालजी की टोपीमुकुट: बगीचा को। कई अन्य आभूषण तिलंगी को शिरपेच।

———